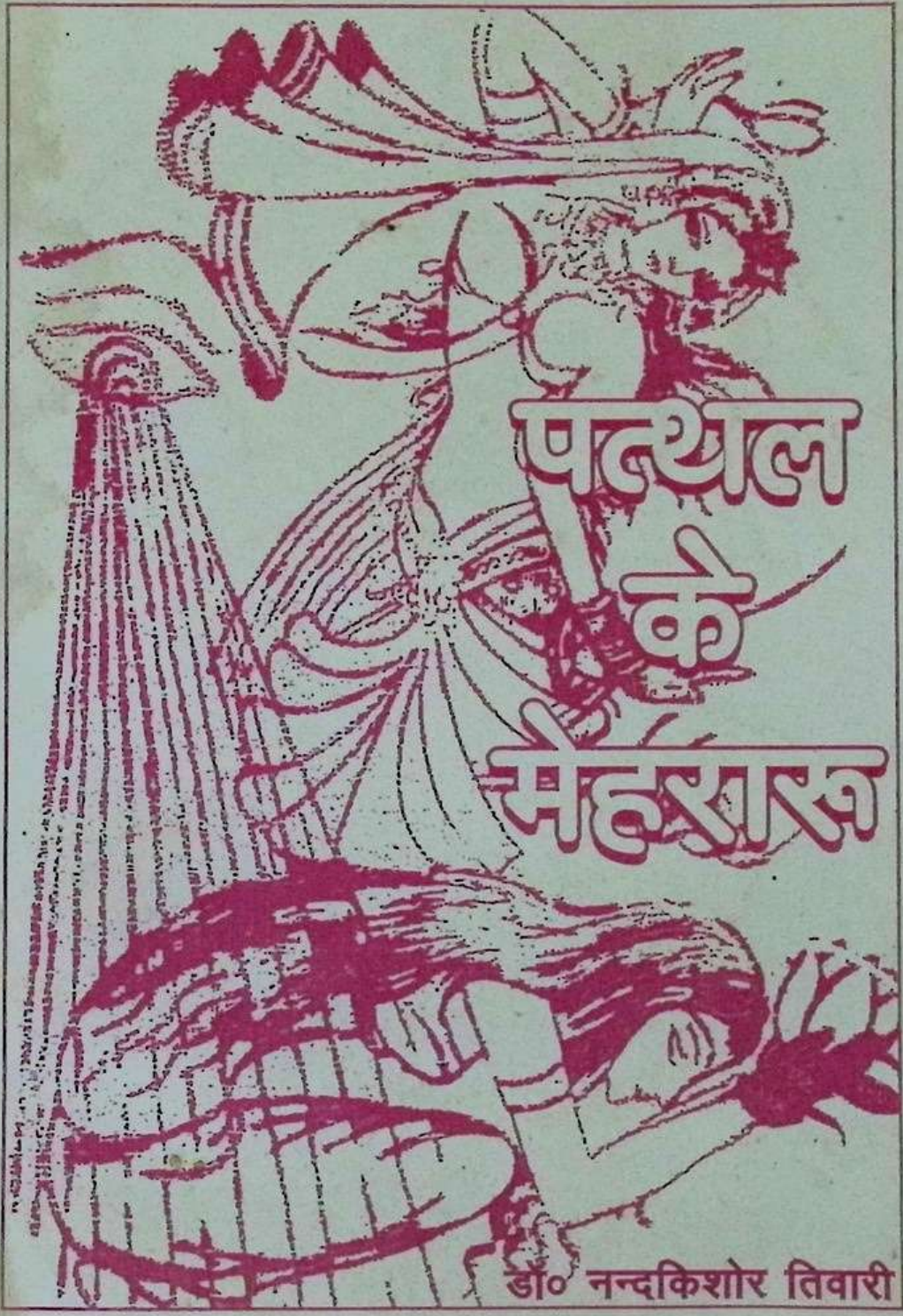


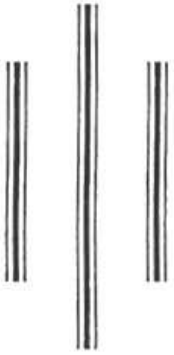
पत्थल के मैहर

डॉ० नन्दकिशोर तिवारी

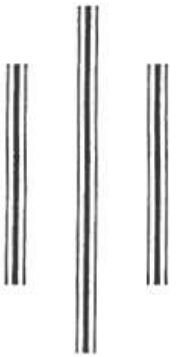
www.bhojpurisahityangan.com

पत्थल के मेहराफ

(अहिल्या के जीवन पर आधारित नाटक)



लेखक :
डॉ. नन्दकिशोर तिवारी



–: प्रकाशक :–
रोहतास जिला भोजपुरी परिषद्
निराला साहित्य मन्दिर,
बिजली शहीद,सहसराम,
रोहतास (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

प्रथम संस्करण

गीता जयन्ती—२००६

प्रकाशक— रोहतास जिला भोजपुरी परिषद्
निराला साहित्य मन्दिर,
बिजली शहीद,सहसराम,
रोहतास (बिहार)

© – लेखक :– डॉ. नन्द किशोर तिवारी, (पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष)
वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा तथा
प्रधानमंत्री,रोहतास जिला हिन्दी सा. सम्मेलन आउर
रोहतास जिला भोजपुरी परिषद्, सहसराम।

मूल्य – एक सौ एक रुपया

मुद्रक – अंकित प्रेस, वाराणसी
के 16/44, बीबीहटिया, भैरवनाथ,
वाराणसी–1 ☎ : 2437253

www.bhojpurisahityangan.com

समरपन

हमरा से उमिर आ गेआन दूनों में बड़

बड़की बहिन कमला

आ उनुका पीठी पर के समउरिआ

बिमला बहिन के

जे लोग मतारी नीअन सेवा आ परेम अपना जीवनभर देलस

साथे बिमला के

प्रेमी सखी, बड़को! उनुकर भउजाई, दुख–सुख के सँघतिआ

आ दू सप्ताह के आगा–पीछा साथे सरग सिधारे वाली

सेवा के मूरत, धरम संगिनी श्रीमती चन्द्रकान्ता जी के

परिवार–सेवा में निरत आदर्श जीवन के

घरभर के आदर आ सरधा के साथे

ई नाटक समरपित

– नन्द किशोर

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

आ0 भाई (डॉ.) शंभुशरण जी के किरिपा से एगो शोध-छात्र के भोजपुरी नाटकन के शुरूआत आ विकास पर काम करावे के मोका मिलल। एह क्रम में खोजि-खोजि के भोजपुरी में लिखल कुल्ही नाटकन के एके साथे पढ़े के, ओहपर सोचे के, सिवा कवनो विकल्प ना रहे। एह अनिवार्यता में प्रबन्ध त पूरा हो गइल लेकिन अइसन एगुड़ो नाटक ना मिलल जेकरा के एक बार फेरू पढ़े के मन करे। एकरा पहिले संसकिरित के पहिलका नाटककार भास के तेरहो नाटक के भोजपुरी में सांगीतिक अनुवाद कहीं, चाहें रूपायन, कइले रहीं। अपने अनुवाद बार-बार पढ़लो पर ओतने आनंद दे। एह भोजपुरी में अनुवाद करें में भासा आड़े बहुते आवे। संसकिरित विश्व के सबसे बड़ सामासिक आ श्लिष्ट भासा ह आ भोजपुरी बेलकुले अश्लिष्ट। एह से भाव के पेन्हावे में बहतर कहीं छोट कहीं बड़ ह्वे जात रहे। लेकिन 'तदपि कहे बिन रहा न कोई' कोसिस भइल। कोई त भविष्य में सहृदय जी के मेघदूत के अनुवाद लेखा एहू से बढ़ियाँ काम के रहता पर ले आई।

मतलब ई कि भोजपुरी में पढ़ावे जोग, रंगभूमि में खेले जोग, दोसरा भासा के समने रखिके अपना भाषा के लकीर बढ़ावे जोग, ऊँच कोटि के नाटकन के कमी लउकल। अइसे सामाजिक, इतिहासिक, पउरानिक नाटक निमने लिखाइल बा। गाँव देहात में मंचन भी होते रहल बा। लेकिन बँगला, उड़िया, मराठी के लेखकन के बउसाव के समने हमरा भासा के पहलवान भेख आ जान दूनों में समने ठहरत नइखन। एहसे ऊ भसन के भाव-सकती देखिके हम बँगला नाटक के महान् नाटककार द्विजेन्द्र बाबू के 'पाषाणी' के अनुवाद खातिर चुनलीं। बँगला में रविबाबू उहाँ के मौलिकता आ प्रतिभा के खूबी प्रसंसा कइले बानीं। देवकुमार राय चौधुरी कहले बानीं - 'बंगाल में अइसन कवनो कवि ना भइलन जे हँसी के गीत में, नाट्य-साहित्य में, व्यंग कविता में आउर जातीय भाव के जीवित करे में द्विजेन्द्र बाबू के बरबरी कर सके।' द्विजेन्द्र बाबू के करीब एक दरजन से अधिका नाटक बा, जवना में इतिहासिक, पउरानिक नाटक भी बाड़े सन। ई नाटक पउरानिके ह। एकरा के भोजपुरी में हम नावँ देले बानीं-'पत्थल के मेहरारू'। आजु से नब्बे वरिस पहिले लिखाइल ई नाटक द्विजेन्द्र बाबू के आरम्भिक रचनन में एगो ह। लेकिन आजुओ पढ़ला प कवनो भाषा के नाटककारन के ई रचना पीछा छोड़ देले।

www.bhojpurisahityangan.com

ई नाटक अपना मूलरूप में एगो 'पद्य–नाटक' ह। एकर प्रौढ़ता देखिके 'क्षीरोद' जी कहले रहन– 'आजु एगो अन्हार गुफा में सुन्नर महान् छवि के दरसन कइलीं।' साँचो चरित्र–सृष्टि, घटनन के समावेस भासा प्रयोग, कथानक के बेजोड़ जोड़–घटाव, एक साथे सभ गुण से ई नाटक सम्पन्न बा। बँगला भासा में एकरा के सर्वोत्कृष्ट नाटक कहल गइल बा।

ई नाटक 'अहल्या' के चरित्र के केन्द्र में रखिके लिखाइल बा। बाल्मीकि रामायन लेखा एह नटको में ईहे देखावल बाकि अहिल्या अपना ईछा से, जानबूझि के इन्द्र के साथे बेभिचार में प्रवृत्त भइल रही। कुछ पउरानिक कथन में ऊ इन्द्र के भरम में गउतम समुझ लेले रही। चरित्र भ्रष्ट होखे में भरम उत्तरदायी बनल। एह नाटक में राय जी कल्पना के भी खूबे इस्तेमाल कइले बानीं। एगो छोट कथा के नाटक के रूप दीहल बिना एकरा प्रयोग के बहुते कठिन रहे। चिरंजीव आ माधुरी दूनों के दूनो बनौटी चरित्र हवन लेकिन गौतम रिखि के चरित्र के महिमान्वित करे में ई पात्र बहुते सहायक बाड़न। जनक कहत बाड़न– 'ऊ चरित्र धन्य बा जेकरा छुअला भर के जादू से बेसवा सती हो जाले आ डाकू साधू बन जाला'। इन्द्र त बराबरे से कामुक आ लम्पट मानले बाड़न। एह नाटक में अहल्या के पछतावा, उनुकर नारी चरित्र के मनोविग्यान, हमरा के बहुते आकर्षित कइलस। ओने गौतम के रिसि रूप, ब्राह्मणत्व आउर तपेसवा मिलिके अहिल्यो के पत्थल बना दिहलस। पत्थल के मेहरारू पथले हो गइली। गौतम के छमा, दाया, उदारता उनुका शील के दिअरी के प्रतिकूलता में भी बुझे नइखे देत। ऊ अपना सतुर इन्द्र के भी सेवा कइके जिआ देत बाड़न। कवनो बरदान उनुका केकरो से ना चाही। उनुकर सात्विक ब्राह्मणत्व विश्वामित्र के अरचज में डाल देता। एही से ब्राह्मणत्व के शाश्वत बुद्धि वैभव कहल बा। जेकरा बल पर ऊ भूमा के सुख के साँचा अधिकारी मानल जाला।

हमरा लागल कि अहल्या पछतावा के अगिनी के आवाँ लेखा अपना माटी के सरीर के डालि के पका के पाका घाड़ा लेखा बना देले बाड़ी आ रामजी के चरन के धूरि रूपी पारस के परभाव से ऊ खरा सोना बनिके अगिन परीच्छा में अव्वल होके पंच कन्यन में पहिलका अहथान के अधिकारी हो गइल बाड़ी। कतहीं के गिरल बेजाँय ना ह। अवसर, संस्कार, प्रकृति के जोर–जबर्दस्ती, निगरह के

www.bhojpurisahityangan.com

अभाव कुल्ही चीझ के अदिमी के गिरावहीं में मदद करेला। देवता लोग हर इन्द्री के झरोखा प बइठि के विसय-बयार के बहे खातिर रहता खोलिके खाड़ा हो जाला। ऊ लोग के बान काम करेला त मानुसे पर, राछसन पर ना। एहसे अहल्या के भगवान के चरन धूरि मिलल जे रिसिओ के नसीब ना भइल। ऊ तपस्विनी बिबाहिता से कन्या बनि गइली। शतानंद के मतारी बनली आ ऊ जनक जी जइसन राजा के राज पुरोहित बनलन।

हिन्दी आ बँगला में अहल्या के चरित्र पर कई गो काव्य नाटक, नाटिका, संगीत नाटिका लिखाइल। पुरान कहलस कि उनुकर सुबहा नावँ लिहल महापातकन के नास करे वाला ह। लेकिन ओह चरित्र के मरम ना जानि के एह चरित्र के केन्द्र में रखिके लोग कई गो सवाल उठावल। ओकर जवाब भी तरह-तरह से खोजाइल। केहू उनुका खूबसुरती के दोस माथे मढ़ल, केहू उनुका पतिबरतारूप के प्रसंसक बनल। केहू उतम के बुढ़ारी में सादी कइला के दोस देके बेजोड़ बिआह के गुनदोस देखावल। केहू इन्दर महाराज के चरित के खोट, कान के खोंटि लेखा, निकालल। केहू अहल्या के रमनी मानल, केहू रिखि पत्नी। केहू परिस्थिति के दोस दीहल केहू नारी सुभाव के। जे होखे एह नाटक में अहल्या के जीवन बहुते नाटकीय बनिके उभरल बा। हम संसार के सुकुल आ किसुन दूनो पक्ष से बनल मानीला। पाप-पुन्न सभ एही में से निकलिके फिर एही में समा जाला। ना कोई एकदमे सभका खातिर आछा भइल आउर ना होखी। कबो बुरो, आछा हो जाला, एही आसा पर संसार टिकल बा।

'पत्थल के मेहरारू' में भोजपुरी भासा के सोच उतारल बा। गीतन में एकदमे भोजपुरिआ रंग बा। एकरा से कई शैलियन के जनम होई, नाया साहित्य-रूपन के सिरिजना होई, नाया बिंब लेखकन के रचनन में उतरी। एह रचना से भोजपुरी के शब्द भंडार बा अभिव्यंजना सक्ती में बढ़ोत्तरी होई। भोजपुरी में दोसरा भासा शब्दन से, वाक्यांसन से, कहाउत आ मोहबरा से, ई भासा समद्ध होई। दोसरा भासा के सब्द-ग्रहण कइला से भासा में लचीलापन आवेला, नाया अर्थछाया आवेला जीवंत सकती के परिचय प्राप्त होला आ संस्कृति संगम के मोका मिलला से बौधिक जागरन आ ग्यान प्रसारन होला। एही कुल्हो बात के धियान में रखिके हम एकरा रचना में लगलीं। अब रउआ सभे पढ़ि के देखीं आ हमरा बात पर अखियान करीं।

– नकिति

www.bhojpurisahityangan.com

वाल्मीकि रामायन में अहल्या के अख्येयान

वाल्मीकि रामायण के अरतालिसवाँ सर्ग में अहल्या के कथा आइल बा। मुनिलोग के साथ श्रीरामजी मिथिलापुरी में पहुँचतानीं। ओहिजा एगो सूना आश्रम देखि के उहाँ के जिज्ञासा होता जवना के उत्तर में विश्वामित्र जी उहाँ के अहल्या के शाप मिलला के कथा सुनावत बानीं। ई कथा ओह सर्ग के 11वाँ श्लोक से शुरू होता। मिथिला के बगइचा में एगो पुराना आश्रम रहे जे बहुते सुन्दर होखला पर भी सुनसान दिखाई देत रहे। रामजी मुनिवर विश्वामित्र जी से पुछलीं कि भगवन्! ई कइसन अहथान बा ? जे देखे में त आश्रम अइसन लागत बा लेकिन एहिजा एगुड़ो मुनि नइखन लउकत। हम सुनल चाहतानीं कि पहिले ई आश्रम केकर रहे? रामचन्द्र जी एह सवाल पर महामुनि विश्वामित्र जी के बतावत बानीं कि पहिलका युग में जवना महात्मा के आश्रम रहे आ जे किरोध कइके एकरा के शाप दे देलन उनकर एह आश्रम के कुल्ही वृतान्त तोहरा से सुनावतानीं। पहिले ई अहथान महात्मा गौतम के आश्रम रहे। ओहघरी ई दिव्य आश्रम रहे। देवता भी एकर पूजा आ प्रसंसा करत रहन। गौतम अपना पत्नी अहल्या के साथे एहिजा रहिके तपस्या करत रहन। ऊ बहुत दिन तक तप करत रह गइलन। एक दिन जब महर्षि गौतम जब आश्रम में ना रहन त ओह अवसर के लाभ उठा के सचीपति इन्द्र गौतम मुनि के भेख धारन कइके ओहिजा अइलन आ अहिल्या से कहलन 'ए बराबर सावधान रहेवाली सुन्दरी, रति के इच्छा रखेवाला प्रार्थी पुरुष ऋतुकाल के इन्तजारी न करस। ए सुन्दर कमरवाली सुनरी हम इन्द्र हईं तोहरा साथे समागम कइल चाहतानी। हे रघुनन्दन महर्षि गौतम के भेख धारण कइके आइल इन्द्र के पहिचान करके भी ऊ मुरूख नारी इ सोचलस कि अहोभाग्य देवराज इन्द्र हमरा के चाहताइन। एह कौतूहल के चलते उनका साथे समागम करे के निश्चय करके ऊ ओह प्रस्ताव के स्वीकार कइ लेली। रति दान के बाद ऊ देवराज इन्दर से संतुष्टचित्त होके कहली कि हे देवता लोग में श्रेष्ठ हम रउरा समागम से कृतार्थ हो गइलीं। प्रभु अब रउरा जलदिए एहिजा से चल जाईं। ए देवेश्वर! महर्षि गौतम के किरोध से रउआ आपन आउर हमरो सभ तरह से राछा करीं। तब इन्द्र अहल्या से हँसत-हँसत कहलन कि सुनरी हमहूँ संतुष्ट हो गइलीं। अब जइसे आइल रहीं ओइसहीं चल जाइब। हे श्रीराम, एह तरह से अहल्या से समागम कइके इन्द्र जब ओह कुटिया से बाहर निकललन तब गौतम के आ जाए के आशंका से बड़ा उतावलापन के साथ भागे के कोसिस करे लगलन। अतने में देखलन कि देवता आउर दानव खातिर बहुते कठिन तपोबल से पूर्ण महामुनि गौतम हाथ में यज्ञ के लकड़ी लेले आसरम में घुस रहल बाड़न। उनुकर सरीर तिरिथ के जल से भींजल बा आ ऊ जलत अग्नि के समान उद्दीपत हो रहल बाड़न। उनकरा प नजर पड़ते देवराज इन्द्र भय से थर्रा गइलन। उनका मुँह

www.bhojpurisahityangan.com

पर विषाद भर गइल। दुराचारी इन्द्र के मुनि के भेख में देखके सदाचार से पूर्ण मुनिवर गौतम रोष में भरके कहलन– हायरे दुर्मत तू हमार रूप धइके ई ना करे योग पाप करम कइले ह।' जो तू विफल हो जइबे। एहिजा विफल के माने अण्डकोश से रहित मानल गइल बा। महतमा गौतम के रोष भरल बानी के सुनते इन्द्र के दूनों अण्डकोश ओहीघरी पृथ्वी प गिर परल। इन्द्र के एह तरह के सराप देला के बाद ऊ अहल्या के कहलन–दुराचारिणी तुहूँ एहिजा कई हजार बरिस तक खाली हवा पी के चाहे उपवास कइके कष्ट उठावत राख में पड़ल रहबू। कोई परानी तोहरा के ना देखी आ तूँ एही आश्रम में रहबू। जब दशरथ जी के लइका रामचन्द्र जी एह घोर बन में पदार्पण करिहन त ओह समय तू पवित्र हो जइबू। उनुकर आतिथ्य सत्कार करे से तोहार लोभ, मोह कुल्ही दोष दूर हो जाई आउर तू प्रसन्नतापूर्वक हमरा भीरी पहुँच के आपन पहिलके सरीर धारण कई लेबू। अपना दुराचारिणी पत्नी से अइसन कहिके महा तेजस्वी, तपस्वी गौतम एह आश्रम के छोड़ के चल गइलन। हिमालय के सुन्दर शिखर प रहिके तपेसवा करे लगलन जहवाँ बहुत पहिले से सिद्ध आ चारन लोग सेवले रहे।

इहे कथा वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड के 48वाँ सर्ग में आइल बा। 49वाँ सर्ग में पितृ देवता लोग दुबारा इन्द्र के भेंड़ के अण्डकोश जोड़लन। इन्द्र देवता लोग से कहलन कि हम गौतम के तपेसवा में बिघिन डाले खातिर ई किरोध दिअवलीं। हम देवता लोग के कार्य एह से सिद्ध कइले बानीं आपन ना। उनकरा सराप देला आ आपन मेहरारू के छोड़ला से उनकर तपेसवा के अपहरण भइल बा अगर बिघिन न डलतीं त ऊ देवता लोग के राज छीन लेतन। एह से देवता लोग हमरा के अण्डकोश से युक्त करेके के प्रयत्न करऽजा। अग्नि के कहला प पितर देवता लोग इकट्ठा भइल आ भेड़ा के अण्डकोश उखाड़ के इन्द्र के सरीर में उचित स्थान पर जोड़ दिआइल। फिर विश्वामित्र जी कहलीं कि हे श्रीराम! अब तू एह पुण्य स्थान महर्षि गौत्रम के आश्रम पर चलि आवऽ आउर ओह देवरूपिणी महाभागा अहल्या के उद्धार करऽ। विश्वामित्र जी के ई बात सुनिके लक्ष्मण जी के साथे रामजी ओह आश्रम में पहुँचलन। ओहिजा जाके रामजी देखलन कि अहल्या अपना तपेसवा से चमकत बाड़ी। एह लोक के मनुष्य, देवता आ राछस ओहिजा जाके उन्हका के ना देख सकत रहन। उनकर स्वरूप दिव्य रहे जइसे विधाता बड़ा प्रयत्न कइके उनका अंगन के बनवले रहन। ऊ एकदम मायामयी लागत रही। जइसे धुँआ से घिरल कवनो जलत अग्नि के शिखा होखस। जइसे ओला आ बदरी से ढँकल कवनो पूर्ण चन्द्रमा के प्रभा होखस। आउर जइसे पानी के भीतर से सूर्य के प्रभा उदभाषित होत होखे। गौतम के सराप के चलते रामचन्द्र जी के दर्शन होखे के पहिले तीनों लोक के कवनो प्रानी के दर्शन कठिन रहे। श्रीराम जी के दर्शन मिल गइला से जब उनकर सराप के अन्त

www.bhojpurisahityangan.com

हो गइल तब ऊ सभका दिखाई पड़े लगली। ओह समय राम आ लक्ष्मण दूनो जाना बहुत खुशी के साथ अहिल्या के दूनो चरन के छुअलन जा। महर्षि गौतम के बात के इयाद कइके अहिल्या बहुते सावधानी के साथे ऊ दूनो भाइअन के आदर योग अतिथि के रूप में अपनवली आउर पाद्य अर्घ्य कुल्ही उपचार के उनकर अतिथि सत्कार कइली। श्रीरामजी शास्त्रीय विधि से अहल्या के आतिथ्य ग्रहन कइलीं। ओहघरी देवता लोग बाजा बजावे लागल, आकास से फूल के बरखा होखे लागल। गन्धर्व अपसरा लोग उत्सव मनावे लागल। महर्षि गौतम के अधीन रहे वाली अहल्या अपना सकती से आपन शुद्ध सरूप के प्राप्त हो गइली। ई देखि के कुल्ही देवता लोग उनका के धन्यवाद देलन आ उन्हकर भूरि-भूरि प्रशंसा कइलन। महा तपस्वी गौतम जी अहल्या के अपना साथे पाके सुखी हो गइलन। ऊहो श्रीराम जी के विधिवत पूजा कइके तपेसवा शुरू कइलन। महामुनि गौतम के ओर से विधिपूर्वक उत्तम पूजा आदर-सत्कार पाके श्रीरामजी मुनिवर विश्वामित्र जी के साथ मिथिलापुरी गइलन। वाल्मीकि रामायण के अनुसार महर्षि गौतम के आश्रम से ईशान कोण पर मिथिला नरेश के यज्ञ-मण्डप रहे, जहँवाँ भगवान राम के जाए के रहे।

महाभारत के अखेयान

महाभारत के शान्तिपर्व के दो सौ छाछठ अध्याय के चिरकारी बृतान्त में धरमसंकट अइला प गुरू के अग्याँ से हिंसामय कारज करे के जदि जरूरत होखे तब का करे के चाही ? ई सवाल कइला प जुधिष्ठिर से भीष्म जी इहे जवाब देत बानीं ।

हम तोहरा के अंगिरस के बंश में जनमल चिरकारी के एगो पुरान अखेआन सुनावत बानीं। चिरकारी के अरथ होला बहुत देरी तक बिचार कइके कारज करे वाला। एकर फल बराबर मीठ होला। चिरकारी गउतम नावँ के महरषी के पुत्र रहन। ऊ सभ काम के करे के पहिले ओह पर बहुते बिचार करत रहन। ऊ देरी तक सूतत रहन आ देरी तक जागत रहन आ बहुत देरी के बाद करे खातिर कवनो काम गछत रहन। एक बेरी उनुकर पिता गउतम अपना मेहरारू के बेभिचार के देखि के बड़ा कुपित भइलन। ऊ अपना दोसर पुत्रन से ना कहिके चिरकारी से कहलन कि तूँ अपना मतारी के मार डालऽ। एहतरह से कहिके जोगाभ्यास करे खातिर ऊ बन में चलि गइलन। चिरकारी अपना बाप के आदेस मान लेलन। लेकिन ओह पर सुभाव के अनुसार बहुत दिन तक बिचार करत रहि गइलन आ ततकाल पिता के अग्याँ के पालन ना कइसकलन। एह बारे में उनुकर बड़ा पोढ़ बिचार माता, पिता, अग्याँ पालन, बध वगैरह के विषय में महाभारत में मिलेला। हमार धरम बा पिता के बचन के मानीं, हम उनुका के हुँकारिओ भर देले बानीं लेकिन माता के मारल सधारन पाप नइखे। हमरा ई दूनो धरम के अतिक्रमण भी ना करे के पड़े-मंथन करत रह गइलन। एने माता के रूप में

www.bhojpurisahityangan.com

स्त्री के बध, गरभ धरे वाली मतारी के बध, पूज्या के बध, सरग से बड़ के बध ? ई सभ भाव उमड़त रहे। सोचते रहि गइलन कि चिरकारी के बाप लवट के अपना आसरम में आ गइलन। ऊ आतमग्यानी रहन। ऊ मने-मन पछताए लगलन। हमरा भार्याबध के आदेस दिहल उचित ना रहे। इन्द्र से त हम बतिअइबे कइले रहीं जब ऊ ब्राहमन के भेख में आसरम में आइल रहन। हम उनुकर पूजा कइलीं। कहलीं कि हम रउआ अधीन बानीं। उनुका के दोस्त बनवलीं। अब ऊ हमरा मेहरारू से खोट काम कइलन त एह में अहेलया के का दोस बा। हमहूँ अपराधी नइखीं। इन्द्र आकासे से हमरा मेहरारू के देखिके का आतुर आ मोहित हो गइल रहन। एहसे धर्मतः ऊहो अपराधी नइखन। अपराध त हमरा जोगाचरण के प्रसाद ह। डाह से दुख त होइबे करी। हम एही से पाप में गिर गइलीं अपना मेहरारू के हतेआ करवलीं। अब एह पाप से हमरा के, के छोड़ाई ? महरसी गउतम रहता में पछतात, अपना के कोसत अपना आसरम में अइलन। अवते चिरकारी के समने खाड़ा पवलन। चिरकारी के भी पिता के देखते कठेआ मार देलस। उनुकर हथिआर हाथ से गिरि गइल आ ऊ चरनन में लोट गइलन। एने उनुकर मेहरारू लाज से पत्थल निअन बिना कवनो चेष्टा के हो गइल रही। अब ऊ पत्नी आ पुत्र के अंह निरजन आसरम में देखि के बहुते खुस भइलन। कहलन बेटा दीर्घायु होखऽ, चिरकारी तोहार कलेआन होखो। गउतम रिसी अपना लइका के एह कारज के परिणाम देखि के गाथा लिखलन- किरोध करे, अभिमान करे, दरप देखावे, द्रोह करे, पापकरम करे, कोई के अनिष्ट करे में देरी तक बिचार कइके तब काम करे के चाही। बन्धु-बान्धव, सनेही, सेवक आ मेहरारू के अपराध पर सोचे बिचारे के चाही। जे अइसन करेला, ऊ सन्तप्त ना होखे। तपेसवी गउतम अपना मेहरारू लइका संगे अन्त में सरग गइलन।

❖❖❖

अहल्या—प्रसंग—तुलसीदास जी

सिलोछोर छुवत अहल्या भई दिव्यदेह
गुन पेखे पारस के पंकरुह पाय के,
राम के प्रसाद गुर गौतम खसम भये,
रावरेहु सतानंद पूत भये मायके

शिला के छोर का स्पर्श करते ही अहल्या दिव्य देहमयी हो गई। इस प्रकार इनके चरण कमलों में पारस का गुण देखा गया है। इस प्रकार रामचन्द्रजी की कृपा से (अहल्या का उद्धार हुआ और आपके पुरोहित शतानंद जी के पिता) गुरू गौतम जी सपत्नीक हुए तथा शतानंद जी अपनी माता के पुत्र हुए (इन्हें फिर से अहल्या मिल गईं)।

www.bhojpurisahityangan.com

पात्रन के परिचय

कुशीलव	–	गण
पुरूष		
महर्षि	–	गौतम
राजर्षि	–	जनक
ब्रह्मर्षि	–	विश्वामित्र
महाराज	–	दशरथ
शतानन्द	–	गौतम के पुत्र
चिरंजीत	–	गौतम के शिष्य।

इन्द्र, मदन, श्रीराम, लक्ष्मण, वशिष्ठ, वसन्त, अउरी देवता, तपसी बालक, योगी, पुरवासी, पुरोहित, नौकर, दूत आदि।

स्त्री	–	पात्र
अहल्या देवी	–	गौतम के स्त्री
शची	–	इन्द्र के स्त्री
रति	–	मदन के स्त्री

माधुरी–गौतम के चेली आउर चिरंजीव के मेहरारू, आउर देवी लोग, तपसी के बाचा–बाची लोग, आउर गाँव घर के मेहरारू।

❖ ❖ ❖

www.bhojpurisahityangan.com

पहिला अंक

पहिला दृश्य

अहथान—राजर्षि जनक के महल के डौंड़ी

समय—प्रातःकाल

(जनक आउर विश्वामित्र)

विश्वामित्र – राजर्षि जनक! का ईहे, ब्राह्मणत्व ह । बाभन जात एही संपत् खातिर अतना दरप करेला। हम त हिकारत भरल इसारा भर से तूछ तप कइके ओकरा के पवले बानीं आउर ओइसहीं हिकारत से बिना कवनो छोभ के अनायासे राह के कींचइ में ओकरा के ढेला नीअन बीग सकीला।

जनक – विश्वामित्र रिखी, घमंड मत करऽ। तूँ अगर ब्राह्मणत्व पवले बाड़ऽ त ऊ बाभनजात के विनय से, अपना गुन से नाहीं। फेरू इहो इयाद रखिह ऽ कि भले तूँ बाभन हो चुल बाड़ऽ, लेकिन तोहार आसन ब्राहमन से बहुते नीचे बा।

विश्वामित्र – एकर परमान ?

जनक – परमान ? रिखिबर, एक दिन नदी ओहपार गौतम के आसरम पर जा, ओहिजे परमान मिलि जाई।

विश्वा – महर्षि गौतम! जेकर मेहरारू बहुते सुनरे अहिल्या हई ऊ गिरहथ हवन, उनकर आसन हमरा से ऊपर बा।

जनक – बहुते ऊपर बा भाई ! यह बात के तूँ अपना आखिन देखबऽ।

विश्वामित्र – साँचे ? आछा बात बा? देखब।

दूसरका दृश्य

अहथान– तपोबन के भीतर, बन के गली समय–सबेरे

तपसियन के लइका– लइकी गावत बाड़न –

हमनी तपसी रहीला एहि बनवाँ में,
कबो कुछुओ ना आवे एह मनवाँ में।
हरल–भरल फल–फूल खिलल बा
परबत, घाटी सभ लथरल बा
अतना सुख कहाँ घर–मैदनवाँ में
हमनी तपसी रहीला एहि बनवाँ में। हमनी ..... ।
खूब सबेरे कोइलर जगावे
कुह–कुह के रट खूबि लगावे
ढारी देले इमरित दूनो कनवाँ में। हमनी तपसी .....।
होत दुपहरिया पसरि आवे छँहरी
बइठ बतिआवे निकलि सभ बहरी
मन अइसन कहवाँ लागे भवनवाँ में। हमनी तपसी .....।

www.bhojpurisahityangan.com

छँहरी में बइठि के खेलीला कनइठी
पानी में दउरि खेलीं भाँजीला बनइठी
केकर जीवन बा अइसन सुख के खनवाँ में। हमनी तपसी .....।

(चिरंजीव आवत बाड़न)

चिरंजीव – एहिजा के-के बा ?

लइकासभ – हमनी के बानीं जा

चिरंजीव – हुँः, तोहन जना त बड़ा भारी लोग हवऽ।

(लइका सभ जाइल चाहत बाड़न)

चिरंजीव – आछा ठहरसन, तोहनी से पूछे के होई। अरे सुनऽसन।

लइका– लइकी-का ?

चिरं.– अरे तोहनी के बता सकेलसन, हम का करीं? एगो संदेह में पड़ गइल बानीं।

1 लइका – का सन्देह बा! काका!

चिरंजीव – सन्देह बा ई कि धम से गिरेला कि गिरला पर धमाका होला ?

2 लइका – साँचो के ई त बड़का भारी सन्देह के बात बा।

3 लइका – त ई बात रउआ महर्षी से काहें नइखीं पूछत ?

चिरं – पुछले रहीं

3 लइका – महर्षी का कहलन ?

चिरं – महर्षि कुछो न कहलन।

2 लइका – आउर रउआ ?

चिरं – हमार इहे राय बा।

4 लइका – त अब निरनय कइसे होई?

चिरं – इहे त गड़बड़ बा। दरसनशास्त्र के कवनो ममिला के फैसला ना होखे। अरे तोहनी के दरसनशास्त्र के बात सुनबऽसन ?

सभ लइका– लइकी-कहीं, जरा सुनीं जा। सुनब जा काहें ना

(चिरंजीव गावत बाड़न)

कतना रंगीन मजेदार बाटे दुनियाँ
कतना संगीन समुझदार बिआ मुनियाँ ।।
दिन के पाछा रात घुमत बा, रात के पाछा दिन।
एक के ऊपर दू तब बारह एक आउर दू तीन।।
दुनियाँ जरो आगी काठी बजाइब हरमुनियाँ।
कतना रंगीन मजेदार बाटे दुनियाँ।
गरमी में बा खाली गरमी, सरदी में बा ठंढा।

www.bhojpurisahityangan.com

जच्चा बच्चा के जनमावे मुरगी देबे अंडा।।
गऊ पुकारे बाँ-बाँ करिके, हुआँ-हुआँ सभ स्यार।
काँव-काँव करि कउआ ऊड़े करिके होसियार।।
पूड़ी पर तरकारी सोभे ओह पर चले-बुनियाँ।
कतना रंगीन मजेदार बाटे दुनियाँ
तिसरका लइका-साँचो 1 ई सभ राउरे खोज बा।

(विश्वामित्र के प्रवेस)

विश्वा.- (चिरंजीव से) इहे का महर्षि गौतम के तपोवन ह ?

चिरं.- (विश्वामित्र के नीचे से ऊपर तक देखिके) रउआ का बुझाता ?

विश्वा.- इहे का महर्षि के आसरम ह ?

चिरं.- ना त का ई ताड़ी के दोकान बुझाता ?

विश्वा.- तनिका सीधा भासा में जबाब देबऽत कुछ हरज हो जाई ?

चिरं.- आउर ना देला से का हरज होई ?

विश्वा.- महर्षि कहाँ बानीं ?

चिरं.- उनुकर खोज काहें के ऽ करत बाड़ऽ। का हो बाबा! का कुछ जरूरत बा ?

विश्वा.- हँ, जरूरत बा; ऊ एह आसरम में बाड़न कि ना ?

चिरं.- ना ऊ बाघ के सिकार करे गइल बाड़न।

विश्वा.- बड़ा ढीठ बाड़ऽ, तूँ के हवऽ।

चिरं.- हमहूँ त इहे पूछत बानीं, तूँ के हवऽ ?

विश्वा.- हम महर्षि विश्वामित्र हईं।

चिरं.- हम चिरंजीव शर्मा अर्शी हईं।

विश्वा.- अर्शी कइसन ?

चिरं.- हमरा अर्श रोग बवासीर हो गइल बा। एकरा से अधिका अबहिन कुछऊ नइखे भइल। लेकिन अर्श अतना अधिका हो गइल बा कि महर्षि होखे में अब अधिका देर नइखे।

विश्वा.- का हमरा संगे दिलग्गी करत बाड़ऽ ?

चिरं.- ना, दिलग्गी करे के नाता अबहिन नइखे जुड़ल न।

विश्वा.- देख, हमरा के देखत बाड़े।

चिरं.- देखत नइखीं त का, देखत त बड़ले बानीं ?

विश्वा.- का देखत बाड़े ?

चिरं.- एकदमे नाया कार्तिकेय! एकदमे मदन-मोहन, सरीर गोल-मोल माथा लामा से जादा चौड़ा अधिका बा। चेहरा के रंग दाढ़ी के रंग से टक्कर लेता।

www.bhojpurisahityangan.com

विश्वा.– देखऽ! हमरा मन में धीरे–धीरे किरोध पैदा हो रहल बा।

चिरं.– ठीके कहत बानीं, अपना बारे में अइसन बखान सुनिके किरोध ना पैदा होई त का परेम पैदा होई ?

विश्वा.– सराप देके तोहरा के भसम कर दीहीं का ?

चिरं.– घूसा मारिके तोहरा के रूआ नीअन धून दीहीं का ?

विश्वा.– ना, देखत बानीं कि भसमे कर देबे के परी! हर! हर! हर! हर!

(टहरत झाड़न)

चिरं.– राम! राम! राम! राम! राम। (दोसरा ओरे टहरे लागत बा)

विश्वा.– राम राम काहे करत बाड़े ?

चिरं.– सुनले बानीं कि राम नाम लेला से भूत के भय ना रहे।

विश्वा.– हम का भूत उतारत बानीं ?

चिरं.– ना त का बिआह के मंतर पढ़त बाड़ेऽ।

विश्वा.– तू बड़का मुरूख बाड़े, जा। (गरदन पकड़िके धाका देत बाइन)।

चिरं.– आछा त अनकी बारी आव, देखीं (विश्वामित्र के मारे लागत बा)

(गौतम के प्रवेश)

गौतम – ई का चिरंजीव! ई का करत बाड़ ऽ ?

चिरं0 – (सकपका के) कुछऊ ना ? जरा एह महर्षी से जोर अजमावत रहीं।

गौतम – (विश्वामित्र से) रउआ के हईं ?

वि0 – हम महर्षि विश्वामित्र हईं।

चिरं0 – सुन लेलीं गुरूजी ? महर्षि के अइसने चेहरा होला। आजुकाल जेकरे के देखऽ ऊहे महर्षी के भेख बनवले बा ।

विश्वा0– का रउए गौतम रिसी हईं ?

गौतम – एह दासे के नाँव गौतम ह ।

चिरं0 – ऐं–दास के का माने ?

गौ0 – चिरंजीव! इन्हिका चरन के धूरे माथा में लगाव, ई एगो बहुते तेजसी महर्षी हवन।

चिरं0– ऐं, एही खातिर त इनका साथे हमार झगरा होत रहे।

गौतम– इहाँ के अपना तेज के बल से महर्षी भइल बानीं। हम इहाँ के आगे कीड़ा मकोड़ा बानीं। तूँ इहाँ संगे बहुते बुरा बेवहार कइले बाड़े। गोड़ पर गिर के छेमा के भीख माँग।

चिरं0– हँ ! (विश्वामित्र के पीठी पर हाँथ रखिके उनुका के सिर से गोड़ तक देखत बा आउर परेम से तीन बार पीठ ठोंकत बा) महाशय कुछ बुरा मत मानब (जात बा)।

गौ0– (विश्वामित्र से) महर्षि जी! ई हमार चेला ह। एकर ढिठाई माफ करब। एकर

www.bhojpurisahityangan.com

हाल हम फिरू रउआ से कहब। एह घरी दाया करिके हमरा आसरम में पधारीं। नइखीं जानत, कवना पुण्य के बल से आज सबेरे रउआ अइसन महतमा के दरसन भइल।

विश्वा0– (अपने से) अतना नमरता ? (परगट) चलऽ (दूनो जाना जा ताइन)

तिसरका दृश्य

अहथान – महर्षी गौतम के तपोवन, समय दुपहरिया

(अहल्या अकेले बाड़ी आउर – टहल–टहल के गावत बाड़ी)

कतना सुनर घाम भोरे-भोरे आइल
घुलल सतरंगन में, किरिनिआ नहाइल ।।
पूरा सउँसारे के अपना में छाप के
गोदी में खेलावे किरिन बड़-छोट नाप के।
चंगा भइले चिरईं जे जड़हल रात से
सभकर सरीर जइसे आगि से सेंकाइल। कतना.....।
सोना के बरन सुरुज कइसन जाल फेंकलन
घरवा से बहरी करेलन, सभके खिंचलन
बहतर के कमी केकरो ना बुझाइल-
कतना सुन्दर घाम, जड़वा पराइल
सानत मन, टह-टह बा, घाम से, अँजोर से
हड़वा कँपावत रहे, जड़वा जब जोर से
कतना इ सकती पराते बढ़ियाइल
सुनर, सुखद घाम नावें लेत आइल ।।

(माधुरी आवत बाड़ी)

अहल्या – अतना देर कइके अइलू ! धन बा तोहार पूजा! दुपहरिया हो गइल, सगरो सन्नाटा बा। माधुरी, चलऽ, बरगद के फेंड़ तरे ठंढक में चलिके बइठीं जा।

माधुरी – चलीं देवी !

अहल्या – फेरो ऊहे बात, ऊहे संबोधन! हम गुरूपतनी आ तूं चेली जरूर बाड़ू। लेकिन तोहरा के तवनो पर हम बरबरे से आपन पियारी सखी समझीला। आवऽ सखी, दू घरी अकेला में, शान्ती में बइठीं जा। तोहरा से हृदया के बात कहब। हमरा हृदया में लबालब भरलो पर एह जिअरा के बाथा जइसे अपने आप उमड़ि के बाहर निकल जा रहल बा! एही से हम तोहरा के बोलवली हँ। बइठ एहिजे! (बइठत बाड़ी) सुनऽ !

माधुरी– (बइठ के) कहऽपिआरी सखी।

अहल्या – कहब। ठहरऽ। लेकिन कहब का ? तूँ त सभ जानते बाड़ू।

www.bhojpurisahityangan.com

माधुरी – नाँ, हम कुछऊ नइखीं जानत।

अहल्या – आछा त सुनऽ। इयाद बा, हमार बिआह भइला कतना दिन भइल।

माधुरी – पाँच साल भइल होई।

अहल्या – ठीक बा! सखी, आज ऊहे बइसाख के पुनियाँ ह, ओह घरी हम दस बरिस के लइकी रहीं। आज पनरह बरिस के जुवती बानीं। आज ऊहे दिन इयाद आवत बा। ओह घरी हम बिआह के मरम ना समुझत रहीं। अकेला में बइठ के सोचत रहीं कि एह पुन–परिनय से हमार जनम सारथक हो जाई। अतना दिन के बाद समुझ में आवत बा कि ऊ हमार भरम रहे।

माधुरी – भरम! भरम रहे। ए सोहागिन। तोहार जनम सारथक ना भइल! जेकरा शिवजी लेखा अइसन भोलानाथ घरमतमा सामी होखस ओकर जनम सारथक नइखे!

अहल्या– आँखि उठाके देख–सखी, खाली एह रूप, एह माधुरी के, देख। हमरा गरदन में एह फूल के माला के देख। हमरा छाती के छुअला से लाज के मारे का ई झुरइला लेखा नइखे हो गइल ? का कमलनाल अइसन हाँथन के सोभा खाली कलपबिरिछ के लता से होखे के चाही! देखऽ ई गेरुआ पहिनावा कतना आग्रह से हमरा के घेरले बा ?

भाधुरी – देखत बानीं।

अहल्या– तुहीं बतावऽ, ई रूप, ई जवानी, ई जीवन अकारथ नइखे? ई संसार हमरा खातिर नीरस बे–सवाद के नइखे? कबो हम अपना मन में सोचीला कि कुँआरे में हम जादा सुखी रहीं। हम अपने आप साथिन रहीं। अपने हार गूँथि के अपना गाला में डालत रहीं। अपने गीत गाईं आ अनंद में मगन रहीं। पहाइ के चोटी पर, मैदान में, बन में, सोहावन कुंज में, झरना के हरा–भरा किनारन के अहथान पर ढेर कुल्ही फूल चुनत फिरत रहीं। पोखरा के निरमल पानी में झाँकि–झाँकि के आपन मुँह निहारत रहीं। बसंत के अइला पर सबद सुनते सरीर ना काँपत रहे। मन के हुलास के साथे चंपा के छोट–मोट कलियन के उतार लीहीं, लेकिन लागत रहे कि हमार उंगुरी के छुआते ऊ फीका पड़ जासन। जरत दुपहरिया में बन के सघन छाया में घूमीं आ फर गिरा–गिरा के खाईं। पिता ई कहिके झिड़की लगावस कि घरे में अतना मधुरस रखल बा तूँ फर बटोरे कहाँ जालू? बरसात में फुहार से भरल हावा हमरा करिआ–करिआ केस के उड़ावे लागे त हम आँख फेरिके तिरछा नजर से ऊ दृश्य देखीं। ऊपर करिआ मेघ के देखीं त ऊ खाली मटमइल रंग के लउके। ऊ बचपन के दिन कइसन मीठ रहे (लामा साँस लेत बाड़ी)।

माधुरी – सखी ई तूँ का सोचत बाड़ू। महरसी गौतम के मेहरारू होके तूँ कतना भगशाली बाड़ू। ऊहे गौतम जे धरम में, गिआन में, विदेया में, विभव में दोसरा अदिमी से ओतने ऊँचा बाड़न, जतना कि नछतरगन भगजोगिनिअन से

www.bhojpurisahityangan.com

ऊँचा बाइन।

अहल्या– माधुरी, हम ई नइखीं कह सकत कि ऊ गेआनी नइखन, शास्त्र विसारद नइखन, चाहें धार्मिक नइखन! लेकिन सखी रमनी के हृदय उनुकर प्रार्थी ना हो सक़े। जाए द अब एह बेकार बिलाप के जरूरत नइखे। तूँ ना समझबू। चाहें एह पछतइला से फैदा का ? (एगो लमहर साँस छोड़िके) नइखू जानत (आज अतना मन काहें चंचल आ कातर हो रहल बा– काहें आज हम तोहरा के अपनां हृदय के गाढ़ वेदना सुनाए खातिर बोलवलीं हँ। रहे द– देखऽ माधुरी। एह जूही के हार सूख गइल, नाया हार गूँथ द। एह दहिना हाँथ में लाता–पाता के चूड़ी तनिका आछा तरह से बान्ह द, खुल–खुल जाता।

माधुरी– आवऽ हमरा पासे आवऽ। देवी! ई अतना साज–सिंगार काहें करत बाड़ू, पिआरी सखी! तूँ बिना सिंगारे के सभका से बढ़िके मन के मोह लेत बाड़ू। ई का तूँ नइखू जानत। कवन मुरूख पुरुख कमल के पत्ता में कूँची से रंग भरी। बिजुली के परकास के दीआ के रोसनी देखावल कवना पंडित के ठीक–ठीक जँची?

अहल्या – (दिरिघ साँस छोड़िके) हाय पिझारी सखी!

(शतानंद आवत बाड़न)

शता0– माई! माई!

अहल्या– का बेटा ?

शता0– दादा हमरा के मरलन ह। मउसी दादा हमरा के बराबरे काहें मारल करेलन!

माधुरी– दादा बड़का दुहुट हवन। तूँ उनुका भीरी मत जइह।

अहल्या– लागत बा, तू हूँ कुछ गड़बड़ कहले होइबऽ?

शता0– नाँ ? हम कहनीं–दादा मिठाई खइबऽ ? बस दादा पटाक से हमरा गाल पर थप्पड़ जमा देलन।

अहल्या– तें खूब झूठ बोले सीख गइल बाड़े।

माधु0– कवना जगहा पर मरलन ह। आव फूँक दीहीं।

शता0– एहिजा मरलन ह, एहिजा मरलन ह, एहिजा, देख, एहिजा। बस,

एहिजा (एह तरह से कहिके कई जगहा देखावत बा)

माधु0– आवऽ भइआ हाथ फेर दीहीं (हाँथ फेरत बाड़ी)

माधुरी गावत बाड़ी

अपने में जे आप मगन बा, कहत फिरत मन–मोद बढ़वले
खिलखिल हँसत चलत गिर उठि के आपन मउजे आप मनवले
ओकरा हँसते मानिक बिखरे, अँसुवन में मोती लटकवले
देखत बून आँखि से ढरकत रहल न जाय बिना उर लवले
कतना करीं दुलार लाल से धन्न भाग जे बालक पवले। अपने में जे. ...।

www.bhojpurisahityangan.com

शता0– माई, पिताजी कहाँ बाड़न ?

अह0– हम त नइखीं जानत। माधुरी, जानत बाड़ू, उ कहाँ बाड़न ?

माधुरी – उहाँ के महर्षि विश्वामित्र के तपोवन देखावे खातिर ले गइल बानीं।

शता0– ई विश्वामित्र के हवन भाई ?

अह0– उहो तोहरा पिता नीअन एगो रिखिए हवन।

शता0– लेकिन उनुका देहीं में अतना रोवां काहें ना ?

अह0– हम नइखीं जानत-जा।।

(शतानंद जा ताड़न)

अह0– नइखीं जानत माधुरी, कवना पाप से तोहरा के अइसन पसू लेखा स्वामी मिलल बा।

माधुरी – हम रउरा गोड़ पड़त बानीं, उनुकर नीना मत करीं, हम उनुका के पिआर करी ला।

अह0– सखी जरावऽमत। तूँ उनुका के पिआर करेलू। कवना गुन पर पिआर करेलू। माधुरी, हम नइखीं जानत, तूँ कइसे अपना ईछा से उनुका साथे बिआह कइल चहले होखबू।

माधु0– बहिन, महर्षी के आग्याँ से अइसन भइल, अपना ईछा ते ना। निसकाम साधना करे खातिर विआह–धरम के सृष्टी भइल। महर्षी कहलन– "बिआह विलास ना ह, प्रेम विषय लालसा ना ह। पति आउर पतनी बाजार के चीझ ना ह कि ऊ छाँट लिहल जाव, चाहें दाम दे के खरीदल जा सके। बिआह एगो करतब ह। परेम एगो निहकाम साधना ह"।

अह0– झूठ, बेलकुल झूठ बात ह। हाय कइसन बिडमना बा– परेम साधना के चीझ ह ? आग्याँ ओकरा के नियमित कर सकेला ? ओकरा के का कुइआँ के जल नीअन खोद के निकाले के पड़ेला ? ना माधुरी परेम गेरू के झरना नीअन पथल तोड़ि के अपने निकले लागेला (लमहर साँस छोड़िके) चलऽ घरे चलीं। (दूनों जानी जात बाड़ी) ।

चौथका दृश्य

अहथान – गौतम के आसरम के बहरी भाग।

समय – दुपहर – विश्वामित्र आउर चिरंजीव बइठल बाड़न।

विश्वा0– तोहार कहानी बड़ा विचित्र बा।

चिरं0– बड़ा बिचित्तर बात बा कि हम सोचलीं कि महर्षी गौतम राजा जनक के महल से आ रहल बाड़न, जरूर उनुका हाँथ में कुछ माल–टाल बा। बाद में जब महर्षी अपना देंह पर से उतार के रेसमी दुपट्टा आउर राजर्षी से उपहार में मीलल सोना के कमंडल, दूनों चीझ बिना कवनो संकोच के हँसते–हँसत

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा अइसन असहाय आउर धरती पर पड़ल दुसुमन के सँउप देलन, तब महर्षी जी हमरा त ठकुआ मार देलस।

विश्वा0– केकरा प्रहार से तूँ धरती पर गिर गइल रहले ?

चिरं0– राजा के सिपाही हमरा के मरले रहे। ऊ महर्षी के पिछवे-पिछे छीप के आवत रहे। रिखी के भी ओकरा आवे के हाल मालूम ना रहे आ हमहूँ पहिले ओने ओकरा आवे के ना सोचलीं। जइसहीं हम जोर से महर्षी के गला पकड़लीं, ओइसहीं सिपाही हमरा खोपड़ी पर लाठी जमा देलस आउर हम बरखा में पुरान भीत अइसन अररा के धरती पर गिर गइलीं। जइसे घोड़ा के पीठी पर चाभुक–सवार बइठेला, ओइसहीं हमरा पीठ पर सिपाही राम जम गइलन। अन्त में महर्षी दाया कइके सिपाही से कहलन– 'सिपाही, छोड़ दे, चोर के छोड़ दे। सिपाही छोड़ देलस। रिखी तुरंते रेसमी दुपट्टा आ सोना के कमंडल हमरा हाथ में दे–देलन आ कहलन – "दासू ! हमरा पास आउर कुछो नइखे अगर होइत तो ऊहो हम तोहरा के दे देतीं। सोना–चाँनी दुलुम बा, बाकिर सुख बहुते सुलभ आ सहज बा। ऊ सुख अगर तू चाहऽ त हम बहुत सा दे सकीला। भाई कबो हमरा आसरम में अइहऽ। विश्वामित्र जी, ओह गद्‌गद् स्वर आउर अपार करूना से चिक्कन आउर परेम से पगाइल भाखा हमरा हृदया में अइसन धसल कि ओही दिन से हम महर्षी के चेला हो गइलीं। रिखी अइसन हमरा के बोध देलीं कि ओही दिन से हम एह तपोवन में जाड़ा से ठिठुरल नाग नीअन निर्जीव बिना बिख के हो के परल बानीं। तवनो पर कबो–कबो गफलत हो गइला प पहिलका पाप–वृत्ति हृदया में जगिए जाला। मन करेला कि एकान्त में गुपुत रूप से महर्षी के गला घोंट के जमपुरी के पाहुन बना दीहीं, अगरचे एह में हमरा जरिको लाभ नइखे। काहें कि गौतम बेलकुल दरिद्दर बाड़न, उनुका लागे कुछऊ हइए नइखे।

विश्वा0– आउर ऊ जुवती कवन हिअ ? ओकर नाम का हऽ।

चिरं0– ओकर नावँ माधुरी हऽ। रिखिवर ओकर हाल रउआ से का कहीं– ऊ त आउर विचित्तर बा सुनब?

विश्वा0 – कहऽ!

चिरं0– ई मेहरारू मिथिलापुरी के सबसे बड़ बेसवा रहे। एक दिन ई कलाबिन ना जाने कवना कुघरी में, कवना कुचक्री के चक्कर में, पड़ि के महर्षि गौतम के रहता रोकलस आ अपना रूप के छटा, मीठ कंठ, खिलखिलात हँसी आ अपना हाव–भाव से डिगावल चहलस। लेकिन कुल्ही चीझ बेकार हो गइल। उलुटे ई रिखी के चरित्र के चक्कर में पड़ि के आपन वेश्यावृत्ति छोड़ दिहलस। सज़ल–धजल गहल, अमोल गहना–गीठो, आ सैकड़न–हजारन चहेतन के छोड़ि के ऊ ओही घरी रिखी के चेलिन हो गइल। अन्त में एक दिन माधुरी

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा नीअन नीच, भयानक, वीभत्स अकार-प्रकार वाला डाकू के ना जाने मन में का समुझ के आपन पति बना लेलस। महर्षी जी, ओह दिन हम दिनभर लगातार ठहाका मारि-मारि के हँसत रहीं। मन में कहीं। आछा जोड़ी मिलल। चोर के मेहरारू वेसवा। महराज, ओही दिन से माधुरी हमारा पत्नी बिआ आ हम ओकर पति।

विश्वा0– गौतम के बिआह के पहिले के ई घटना हऽ ?

चिरं0– ओहसे बहुत पहिले के ह। रिखिबर, ऊ देखीं, गौतम अपना मेहरारू के साथे एनिए आ रहल बाड़न।

विश्वा0– ठीक बा।

(गौतम्र आउर अहिल्या के प्रवेस्)

गौतम– महर्षी जी, चरन सेवा करे खातिर आइल बानीं, आग्याँ करीं।

विश्वा0– गौतम, हमरा के अब कुछऊ ना चाही। तोहार ई आसरम बड़ा शान्त, निस्तब्धै पवित्तर आ सुन्नर बा। लेकिन एकदमे निरजन बा। भाई जी, तोहरा बराबर आछा लागेला ?

गौतम – लागे ला। ई निरजन आसरम जनमे से हमरा मन के भावे वाला बा, हमार जीवन एकरा से ओत-प्रोत बा। महर्षी, का बताईं, एकर हर फेंड़, हर रहता, हर रोड़ा पर कतना बीतल घटना लिखल बा।

विश्वा0– तोहरा सुन्नर पुरी, महल, फाटक, रंथ, हाथी, घोड़ा, बजार अइसन कुल्ही आछा ना लागे ?

गौतम – ना भाई जी! ओहनी से जादा ई हरिअर खेत, मैदान, सुन्नर बन, झरना आउर पंछी बहुते आछा लागेलन ?

विश्वा0– (अहल्या से) देबी! का तोहरो ई बनबासे पसन बा ?

अहल्या – सामी के इच्छे स्त्री के सम्पति ह।

विश्वा0– साँचो! हम त कबो-कबो आसरम से जाके महलन में रहल पसन्द करीला। विचित्रता के बिना जीवन बेलकुल फीका लागे ला।

गौतम– प्रभू! तोहार कुल्ही काम आ बात असाध्य के साधना ह। कबो बहुते दिन तक रउआ तप कइल करीला, कभी लोगन के बस्ती में जाके ओही तपेसवा के बल पर हित आ उपकार करत फिरीला। आउर हम त अतमा पर ठिठकल बराबरे अपना सुख के चिन्ता में पड़ल रहीला। कहवाँ तक कहीं भाई जी, हम रउआ से बहुत कुछ सिखलीं। विश्वामित्र जी रउआ धन बानीं आ राउर तप के महिमा भी धन बा।

विश्वा0– (गौतम से) तूँ बहुते गरीब बाड़ऽ ?

गौतम – हँ, बेलकुल गरीब बानीं।

विश्वा0– राजा दसरथ के नावँ जानत बाड़ऽ।

गौतम– नावँ सुनले बानीं।

www.bhojpurisahityangan.com

विश्वा०– उनुक.। महल में हमार बरबरे आइल जाइल होला। हमरा संगे अजोधेआपुरी चलऽ।

गौतम– काहें के ?

विश्वा०– ढेरिन रतन तोहरा के दिलवा देब।

गौतम– रतन । रतन लेके का करब ?

विश्वा० – तूँ बेलकुल भोला भाला आ नासमझ बाड़ऽ। धन–रतन से आछा–आछा सवाद वाला पकवान। तरह–तरह के मिठाई, अनमोल गहना, सुन्नर बाग–बगइचा महल, सुन्नर मेहरारू आउर ऐश आराम के समान खरीदल जा सकेला।

गौतम– हम ऊ नइखीं चाहत। निरजन में सधारन परिसरम से मिलल बन के कंद–मूल फर खाए से सरीर पुहुट होला। मिरगाजिन, बलकल आदि जे कुछ मिलेला, पहिन लीही ला। सुन्नर सुकुमारी पतिबरता पतनी अहिल्या बाड़ी जीवन में हमरा कवनो बात के कमी नइखे। हम धन, रतन के ढेरी लेके का करब?

विश्वा०– (अपने में) ई बाभन अतना निर्लोभी बा ? चाहे, अतुल रूप आ सुन्दरी एकरा के आपन पति बनवले बिआ, एही से इनका बहरी संपत से अतना उदासी बा। साँचो जेकरा घर में अइसन मेहरारू होखे, ओकरा कवना बात के कमी बा।

चिरं०– देखऽ, प्रभु–पत्नी के ओरी ई रिखी कइसन ताक रहल बा। लागत बा, जइसे अबहिने गुरू–पत्नी के खा जाई। मुँह अइसन फइलवलेबा, जइसे बेसन के लड्डू नीअन उठा के अहल्या के अपना बड़का भारी पेट के गड़हा में रख लीही।

विश्वा०– (अहल्या से) देवी, तूँ अपना गोर–गार सरीर के सोना के गहना, मनि–मोती से सजावल ना चाहऽ ? हीरा के जड़ाऊ सोना के कँगना पहिने के मन ना करे ? माथा पर रतन के कलँगी लगावे के ईछा ना होखे। गोड़ में घुँघरूदार चानी के बिछुआ, हाँथ में मनि के जड़ाऊ आउर गर में मोती के हार पहिने के मन ना चाहे ?

चिरं०– छेमा करब रिखिबर ! बस हो चुकल। काहे बेकार पति–पतनी के बीच में कलह के बीज बोअत बाड़ऽ। पत्नी के समने अप्राप्य अनमोल 'रतनन के गहनन के' लाम–लाम सूची पेस कइके तूँ का कहल चाहत बाड़ऽ।

गौतम– चलीं, चले के बंधुबर, आसरम के भीतर पधारीं। गरम धूर उड़े लागल घाम कड़ा हो आइल।

विश्वा.– हँ महर्षि, चलऽ। (अहल्या से) चलऽ देवी! आछा बात बा। (अपने में) एह पतनी के वियोग के गौतम सह सकेलन कि ना? एकर परीच्छा करे के होई।

(गौतम अहल्या आउर विश्वामित्र के प्रस्थान)

चिरं.– (पाछा जाते जात) हूँ भइया, भइया चिरंजीव, तूँ बिना बोलवले चलऽ। एह काला चमड़ा के नीचे अतना बड़का रिसी बाड़न? अचरज बा।। अदभुत।

(प्रस्थान)

www.bhojpurisahityangan.com

पाँचवाँ दृश्य

अहथान — तपोवन के किनार

समय — पुदहरिया

(दू गो तापस बालक खड़ा बाड़न)

1. तापस बालक – सुनत बानीं, ई विश्वामित्र रिसी बड़ा तेजस्वी हवन!

2. तापस बालक – कइसे ?

1. तापस बालक – ई पहिले एगो छत्री राजा रहन! तप-बल से ब्रह्मर्षी पद पा गइलन।

2. तापस बालक – रहे दे आपन ब्रह्मर्षी पद। उनुका के देखिके हमरा मन में त रत्ती भर भी भगतीभाव नइखे आवत्।

1. तापस बालक – हमरा मन में उनुकर भगती भले ना होखे, मगर महर्षी जी त उनुका गुनन पर मुगुध हो रहल बानीं। सुनत बानीं, विश्वामित्र के तपोबल के हाल सुनिके महर्षी भी कवनो दूर के अहथान पर तप करे जाए वाला बाड़न।

2. तापस बालक – साँचो ?

(दोसर एगो तापस बालक के प्रवेश)

3. तापस बालक – अरे, चिरंजीव बड़ा मजा करत बा।

2. तापस बालक – का ?

3. तापस बालक – ना जाने का पीके अंटसंट बकत बा। ल इहे एनही आवत बा।

(चिरंजीव के प्रवेश)

चिरं.– बाह, बाह, विश्वामित्र रिसी के पेट में अतना गुण भरल पड़ल बा। बाह बाबा, कइसन नीमन सोमरस बनवले बाड़ऽ। हमार महर्षी त बस बजरमुरूख बाड़न।

1. तापस बालक – चिरंजीव! ई का कहत बाड़ऽ।

चिरं.– अरे भाई बजरमुरूख ना हवन त का हवन ? बाबा विश्वामित्र अपना हाँथे अइसन दिव्य सोमरस बनाके देलन तबो ऊ ना पिअलन! अरे अगर सोमरसे ना पिअबऽ त फेरू महर्षी बने के का जरूरत रहे? अरे अरे, सुन हम त अब एही विश्वामित्र के चेला हो जाइब।

2. तापस बालक – साँचो! कहत का बाड़ऽ।

चिरं.– हाँ हो जाइब। लेकिन बात ई बा कि विश्वामित्र रिखी दरसनशास्त्र नइखन जानत। एह दरसनशास्त्र पर हमार बड़ा परेम बा।

3. तापस बालक – जरूर।

चिरं.– अरे छोकड़ा! दरसनशास्त्र के बात सुनबऽ सन।

तापस बालक – सुनीं! चिरंजीव गावत बाड़न!

www.bhojpurisahityangan.com

भूचर, खेचर, जलचर, किन्नर, देव, दँइत, गंधर्व, निसाचर,
इंद्र, चंद्र, पावक, सचराचर, ब्रह्मा, सुरपति, विसुन, महेसर।
पन्नग, उरग, तुरंग, भुजग, जग बिहग कुरंग पतंग वायुचर
भूत परेत मतंग जच्छकुल ब्रह्म दइँत राछस पिसाचनर
जे बा कान लगा के सुन ले, सुनीं गान ई महाभयंकर
एकर माने, के बा जाने, होई के, जनिहन बस इसवर
चरखा नीअन घूमत बा जग, मिली प्रमान पिही जे ई मद।
एकरा खातिर सभ सोचेला, चैन ना पावे एको दमभर।

(दोसर एगो तापस बालक के प्रवेश)

4. तापस बालक – ई का चिरंजीव शर्मा, ई का करत बाड़ऽ ?

1. तापस बालक – चिरंजीव शर्मा एह घरी तनिका मजे में बाड़न।

2. तापस बालक – इनकर अबहिन हाथ गोड़ मुँह मटकावत अगर केहू देखी तब कही ।

3. तापस बालक – आउर गाना कइसन बढ़ियाँ गवलहन।

चिरं.– देख, हम एही सरीर से सरग जात बानीं। विश्वामित्र रिखी कहलन ई सोमरस पी के अदिमी सरीरे से सरग जाला तनिका पिएबे चिरंजीव! हम कहनी–कहवाँ देखा द तऽ। लेकिन विश्वामित्र जी यदि सरग जास त सरीर से न जाइले आछा बा। रहता में एह सरीर के बदल दिआवले आछा होई। सरीर से ना जाए में लाभ के अलावा हानि का बा? ई चेहरा लेके सरग जाए में कुछ सुबिधा होत नइखे देखात। अतने कहि के जरिका सोमरस पी गइलीं। पिअते बस का कहीं भाई, चिपटल पृथिमी गोल देखाई पड़े लागल। अकास अट्टहास सुरू कर देलस, पतालपुरी परी बनिके नाचे लागल आउर हम सरीरे से सरग में उड़ चललीं।

2. तापस बालक – जी! तब त कहे के चाही कि ममिला संगीन हो गइल!

चिरं.– संगीन ना भइल रंगीन कहऽ। बलिहारी बा सोमरस के देखत बाड़ऽ जा तूँ लोग।

3. तापस बालक – का देखीं जा महाशय ?

चिरं.– (सराब के पिआला देखाके) कइसन रंग बा कइसन साफ बा। कइसन लहलहात बा, कइसन एकर फेना बा। बाह बाह! अरे तोहनी के तनिका तनिका पिअबसन?

1. तापस बालक – जी ना।

चिरंजीव– तनिका चखिके देख न। एकरा में कड़ुआ, तीखा, खारा, मीठा, कसैला, वगैरह कुल्ही रस बा।

2. तापस बालक – ना महाशय!

चिरं.– अगर तोहनी के पिअतसन त बहुते आछा करतऽसन।

www.bhojpurisahityangan.com

3. तापस बालक – नाहीं।

4. तापस बालक – तूँ ही अतना ईहो पी जा। देखऽ का मजा आवत बा।

चिरं.– हूँ बुझाता, तूँ सभ पाजी मने मन हँसत बाड़ेसन।

(तापस बालक हँसत बाड़ेसन)

चिरंजीव गावत बाड़न ।

नाटक का बूझत बाड़ऽ जा ई हमार सभ बदमासी
नया ढंग पर सभे हँसत बा हत्तेरी के साबासी
का बुझले स लड़खड़ात बा गोड़ अउर तोहनी के सिर
झूठ बात बा, कबो नहीं, फिर गइल आज तोहनी के फिर
हम त अपना मन ईछा से नया ढंग से फेंकी पैर
रंग बिरंगी चाल निकालीं बानीं खड़ा होत बा सैर
का बुझबसन, कुल मतवाला अंटसंट बकते बानीं
जान बूझिके ठीक ना बोलीं, हम लेक्चर देते बानीं

(गावते–गावत एक दम उग्र रूप धारन करत)

1. तापस बालक – मार डाली रे!

2. तापस बालक – खा जाई रे!

3. तापस बालक – भाग–भाग!

4. तापस बालक – आहि, ओ दादा!

चिरंजीव– एह बदमासन के नरक में भेजब। (फिर गावत बा–नाटक का बूझत बाड़ऽसन ई हमार सभ बदमासी) नया ढंग ह सभे हँसत बा ई कइसन बा साबासी.....।

(माधुरी के प्रवेस)

माधुरी– प्रभु! ई का कर रहल बानीं।

चिरंजीव– (हतास भाव से) जा कुल्ही नीसा उड़ि गइल! सरीरे से सरग जाए के बात अइसहीं रहि गइल। एही घरी काहें के तूँ अइलिस? दादा।

माधुरी– का सराब पी लेलऽहऽ।

चिरं.– सराब का रे? सोमरस–अपने विश्वामित्र रिसी के तइआर कइल?

माधुरी– अपने विश्वकर्मा भी अपना हाथे तइआर कइले होखस तबो ख़राबत सराबे ह।

चिरं.– आछा त सराबे सही, सराबे सही।

माधुरी– प्रभू! सराब पिअल आछा ना ह। महर्षि गौतम जी काहाँ पीहे ला?

चिरंजीव– महर्षी गौतम बेलकुले भंड, षण्ड, लंठ मुरुख हवन। अगर एह घरी मिल जाई त ओकरा के दू हाँथ देले बिना ना रहब। लेकिन जब ले ऊ इहवाँ नइखे तब ले ओकरा बदला में तोहरे पूजा करबि (मारत बा, प्रहार) माधुरी– नाहीं बसकरीं, बस करीं, रउरा गोड़ परत बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

(विश्वामित्र के प्रवेस)

विश्वा.– चिरंजीव! छिः छिः बड़ा सरम के बात बा।

चिरं.– का सरम के बात बा ?

विश्वा.– अपना मेहरारू के मार रहल बाड़ऽ ?

चिर.– अपना मेहरारू के ना मारींत का पराई स्त्री के मारब ?

विश्वा.– मेहरारू पर हाथ चलावत बाड़ऽ! छिः छिः।

चिरं.– ऊ मेहरारू ना हिय मरद के बाबा हियऽ!

विश्वा.- काहें ? तोहार मेहरारू कवन अपराध कइले बिआ।

चिरं.– तोहार मतलब का बा? तूँ काहें ई पूछताछ करत बाड़ऽ। देख विश्वामित्र रिखी तूँ चाहे ब्रह्मर्षि होख चाहे देवर्षी होखऽ, अगर एह तरह से दाल–भात में मूसर चंद बनबऽ ? पति–पत्नि के बीच में पड़िके उनका दाम्पत्य कलह में बाधा देबऽ त ई देखत बाड़ न ? (एगो टूटल फेंड़ के लकड़ी उठा के घुमावत बा आ साथे हुमकत भी बा)

(गौतम के प्रवेस)

गौतम– ई का ह चिरंजीव ?

चिरं.– ऐं ऐं इहे त

विश्वा.– चिरंजीव सोमरस पी के जरा रंग में आ गइल बा।

चिरं.– हँ, से ऊ सोमरस विश्वामित्र रिखी के बनावल रहे।

गौतम– माधुरी, तें रोवत बाड़िस ?

विश्वा.– चिरंजीव एकरा के बेतरहा पिटलसऽ।

चिरं.– मरलसऽ त एह तें केकर दोष बा ? रउए त कहि सुनिके हमरा के सोमरस पिअवलीं। हम त कवनो तरह से ना पीअत रहीं। रउआ कहीं चिरंजीव पिअबऽ चिरंजीव पिअवऽ ? कहिके हमरा पीछा लाग गइलीं। हम कब से अपना के काबू में रखतीं। आखिर ई सरीरे त रकते माँस के न हऽ।

विश्वा0– हम त परीछा लेत रहीं कि तोरा में मानसिक बल कतना बा।

चिरं0– काहें, ओकरा जनला बिना रउरा नींद ना आवत रहे।

गौतम– चिरंजीव, कसम खा कि अब तूँ कबो मदिरा ना पिअब।

चिरं0– आर्य! खुद विश्वामित्रे जब पीअत बाड़न।

गौतम– महर्षी विश्वामित्र के जे सोहात बा, से तोहरा प ना सोहाई। कूड़ा अगिनी के सरीर के कलुषित ना करे, लेकिन पानी ओकरा से गंदा हो जाला। किरिआ खा कि अब तूँ ई काम ना करबऽ।

चिरं0– ऐं! आछा उहे सही!

(प्रस्थान)

www.bhojpurisahityangan.com

गौतम – माधुरी! हम परदेस जात बानीं। तूँ अपना गुरुपतनी के देखिहे।

माधुरी– हम परान देके उहाँ के सेवा करब। रउआ कब ले लवटब ?

गौतम– एकर कवनो ठीक नइखे। हो सकेला कि एक बरिस के बाद लवटीं। हम अब तोरा गुरुपतनी से बिदा होखे जात बानीं। (विश्वामित्र से) भाईजी तइआर हो जाईं। हम जलदिए आवत बानीं।

(सभकर प्रस्थान)

पाँचवाँ दृश्य

अहथान — तपोवन के किनार

समय — पुदहरिया

(दू गो तापस बालक खड़ा बाड़न)

छठवाँ दृश्य

अहथान – तपोबन के किनारा

समय – परातेकाल

अहल्या अकेले बाड़ी

(गावत बाड़ी)

कुचकुच अन्हरिया में कबो हीरा दमक देखावेला ?
हाय बरफ पर फूल रँगीला कब्बो फूले पावेला ?
कबो गुनी के हाँथ लगे बिन बीना बजे, रिझावेला ?
प्रेम न आदर से सूखेला ऊ ना सुख सरसावेला ।।
मलय हवा के चले बिना कोइल का बोल सुनावेली
पंचम में दे तान कबो मुरझाइल मन हरखावेली ।
प्रेम निरासा, भय वियोग से प्रेम मरे ना पावेला
अवहेला जातना घृना से मरन प्रेम के आवेला !

(गौतम के प्रवेस)

गौतम – अहल्या !

अहल्या – (चउँक के) के ? – ई का प्रभू ! एह भेख से इहवाँ ।

गौतम – पिआरी, हम तोहरा से बिदा लेबे आइल बानीं।

अह0 – बिदा होखे ! हूँ ! समुझ गइलीं आछा बात बा कहवाँ जात बानीं।

गौतम – बहुते दूर, परदेस।

अह0– काहें ?

गौतम – पिआरी! उहँवे, तपेसवा करब।

www.bhojpurisahityangan.com

अह0 – तपेसवा, केकर, कइसन ? का घर में बइठ के तपेसवा ना होई?

गौतम – गृहस्थाश्रम में हजार गो बन्धन बा। माया-मोह रोज के हजार गो चिन्ता घेरले रहेला। एही से पिआरी, अकेले निरजन दूर के अहथान में एकान्त में, जहवाँ मानुस के सब्द ना सुनि पड़ी – सन्नाटा के ओह जगहा में तपेसवा करब।

अह0– जाईं।

गौतम – पिआरी प्रसन्न मन से बिदा करऽ।

अह0– ई त बताईं कि हमरा के केकरा भीरी छोड़ के जाइब ?

गौतम– सती स्त्री पति के इयाद मन में राखि के रह जाली सन।

अह0– प्रभू ! खाली धेआन कइले से अकन्छा ना मिटे। हाय कतहीं तलाव के तसवीर देखला से पिआस बुझेला ? हाय रे पुरुखन के ममताहीन जात! पुरुख कठिन बहुत कठिन! रोज के वियोग में, मिलन में हम तोहार इयाद करब आ तूँ जब जी चाही अइब-जइब, सुतन्तर लहर नीअन, जे सहनसीलता के बलुआही किनारा पर टक्कर मारत आवत-जात रहे लीसन! भीरी काहें आवतानी? (रमनी के रूपे के धेआन करिके दूरे काहें नइखीं रहि सकत। जब सरीर पुरान हो जाला, बुढ़ापा के अंतिम दसा होला,,तब काहें छाँट के पत्ता वाला फेंड़ के डाल्ह से खिलत फूल के कलिए उतार लीहीं ला जा। ओकरा के नाचत, हँसत मतारी के दूध-रस पीके बढ़ते दूरे से देखिके रउआ सभ काहें ना सुखी होई ला जा। रउआ सभ के सवारथ देखे लायक बा, बड़ा लामा पुरहर।

गौतम– अहल्या हम ब्राह्मन हईं। का हम बराबरे पिआरी के आँचर पकड़िके पड़ल रहीं। ग्रापन करतब के भुला जाईं।

अहि0– (उठिके) अगर ना रहे के रहे त बिआहे काहें के कइले रहीं। अपना एह शिशिल बुढ़ापा के साथे हमरा जवानी के काहें बन्हलीं। एह मुँह ओरे आँखि उठाके देखीं– ई नाया उठल जवानी, ई उमड़त-घुमड़त रूप, ई अतिरिपित ईछा, ई उमंग भरल हृदय, देखत बाड़ न! काहें के एह फूल पाता वाली साँवर लता के सूखल ठूँठ में बन्हले रहीं। (रोवत बाड़ी)

(चिरंजीव के प्रवेस)

चिरंजीव– (अपने से) ठीक उहे देखात बा, जवन सोचले रहीं। हम जानत रहीं कि ई बड़ा-बड़ा रोवाँ वाला भालू अइसन रिखी जरूरे कवनो आफत ले आई। (परगट) महर्षी जी, बहरी कुटिया के दुआरी पर विश्वामित्र रिखी तइआर खाड़ा होके, राउर राह देखत बाइन।

गौतम– त पिआरी जात बानीं।

अह0– प्रभू, रउआ जाईं चाहें रहीं, अहल्या खातिर एगुड़े बात बा। रउरा हृदय में परेम नइखे। रउरा ओठ में इमरित नइखे। तपेसवा अइसन सूखल करतब खातिर राउर जीवन बा। हमार जीवन संभोग चाहत बा। रउरा जीवन के बरत पुन्न संचित कइल बा। हमरा जीवन के कार्य पुन के खरचे में बा। दूनो के गति दू ओरे जुदा-जुदा बा। एह जीवन में हमनी दूनो कबो ना मिल

www.bhojpurisahityangan.com

सकीला। जाईं, रउरा गइला से हमरा जीवन के मुताबिक बिजोग कवनो बढ़े के त बाना।

गौतम – (अपने में) साँच बा पिआरी। ई बिजोग मिट ना सके।

(जात बाड़न)

अह0– अतना रूप, ई भरल जवानी! का ई सभ बिरथा हो गइल ? अहल्या तूँ एह बूढ़–मूढ़ गौतम के रोकिके ना रख सकलू। धिकार बा! ऊ मजगूती से गोड़ बढ़ावत चल गइलन। सूखल–पाखल नजर से लागत रहे बड़ा किरिपा के साथे, हमरा ओरे ताक के चल गइलन ? हाय रमनी! तूँ एह बेकार दुबराइल रूप के घमंड जनि करऽ।

(प्रस्थान)

सातवाँ दृश्य

अहथान नन्दन बन (प्रातकाल)

(अपना अनुचरन सँगे इन्द्र बइठल बाड़न)

अपसरा लोग गावत-नाचत बा

हमनी के इहाँ आके एगो रंग ले आईला जा
भीतर के रोसनी के रंगत दिखाई ला जा
परकास के किरन अस, दमके लगेले दुनिआँ
ऊजर हँसी के झरना झर–झर के गिराई ला जा
फूलन के जस सुगंधी गमके गमक के जाला
हमनी के नसा नीअन तनिका झमकाई ला जा
लहरा के लहर नीअन उमड़ी ला जे घटा से।
बन के फुहार नीअन ऊपर से सरसाई ला जा।

इन्द्र – हँ ! तब त किला फतेह बा – अरे कवनो मदन के त बोला लावसन–

पवन तूँही चल जा न।

पवन– जवन अग्याँ (जा ताइन)

इन्द्र– चन्द्र! ढारऽ भाई! ई प्रस्ताव बुरा नइखे। का जी अगिन देव एह अपसरन के कोई जलदिए लावे।

बरूप – लीहीं, हमहीं ले आवत बानीं। (जा ताइन)

इन्द्र – अग्नी !

अग्नि – जी !

इन्द्र – तूँ त बहुते गंभीर बनिके बइठ गइलऽ।

अग्नि – एँ – हाँ से त हमार आदतो कुछ अइसने बा।

इन्द्र – साँचो ! ल इहे, मदन आ गइलन।

(मदन के प्रवेस)

मदन – प्रनाम, देवराज !

www.bhojpurisahityangan.com

इन्द्र – आ गइलऽ, जीअत रह।

मदन – जी हँ ! जीअत रहल त हम बहुते चाहत बानीं लेकिन देवराजे एकर मौका नइखन देत।

इन्द्र – काहें ?

मदन– इहे, दिनेराती लोगन के सरबनास खातिर फिरत रहीला।

इन्द्र – कइसन सरबनास ?

मदन – इहे, फलाना स्त्री के निकाल लाव, फलनवाँ के सतीच्व नष्ट कर, फलनवाँ के तिबारा बिआह करावऽ।

इन्द्र – ई सभ त बहुते सहज सिकार बा। विधवा, लइकी, के सरबनास करवावल कइल, कुछ के बेसवा बनावल असहाया रमनी से बेभिचार करवावल, ई सभ त हमहूँ कर सकीला ?

मदन – फेरू अउर का करे के कहत बानीं ?

इन्द्र – जथारथ सती के सरबनास कर करा सकेलऽ ?

मदन – नाँ, एह काम में त रउए बेजोड़ बानीं।

इन्द्र – दिलग्गी रहे। इहे काम करे खातिर त हम तोहरा के बोलवले बानीं।

मदन – से त हम पहिलहीं ताड़ गइल रहीं। आछा अब बताईं कि ऊ भागवती कवन जानी हई ?

इन्द्र – (चुपके से कान में) महर्षि गौतम के मेहरारू अहल्या !

मदन – बहुते कठिन जगह बा।

इन्द्र – नाहीं त हम का तोहरा के फलहार करे खातिर न्योता में बोलवली हँ ? सुनऽ एगो बड़ा भारी सुभीता बा।

मदन – का सुभीता ?

इन्द्र – महर्षी एह घरी प्रवास में बाड़न।

मदन – बुझात बा, तब त साइत भसम होखला बिना भी काम पूरा हो सकेला। लेकिन एगो बात याद रखब।

इन्द्र – का ?

मदन – सुनीं (गावत बाड़न)

जे जन परी एह परेम के फंदा ।
ऊ जरूर रोइहन बस एक दिन खूब समुझि ले बंदा
पहिले दू दिन हँसी खुसी में कटी जिनिगिया खासी
फेरू गम्हीर भाव से खाँसी अन्त गले में फाँसी
पहिले त आराम मिले ला अंत हृदय में ज्वाला
खूब रगड़ला से हो जाला कड़ुवा नींबू आला ।
पहिले नाँचे मूँड चढ़ा के पीछे खीझ आ झगड़ा।
दूनो कहस छोड़ दे महआ रोजे एगो रगड़ा

www.bhojpurisahityangan.com

इन्द्र – से त पाछे जे होखे के होई, से होई, अबहिन के काम त अबहिन करऽ।

मदन – ठीके बा ।

इन्द्र – चन्द्र

चन्द्र – सुरराज !

इन्द्र – आउर एगो पिआला दिहऽ।

(अपसरा लोग के प्रवेस)

इन्द्र – आ गइलू जा अपसरान! आछा, कवनो आछा सा चीझ सुनावऽ जा। देखऽ अइसन गीत गावऽ जवना से दिल खुस हो जाय– उमंग बढ़े। कवनो सोहनी गावऽ चाहे तेवट नाचऽ। (अपसरा लोग पहिले नाचत बा फेरू गावत बा)

गजल सोहनी

ढार इमरित धार ढार ऽ चंद्रबदनी, सुन्नरी
जे पिआसे बा बेआकुल तिरिसा बुझावऽ रसभरी।।
हर नसन के खून लहको, अंग कुल्हि उफना उठे
ढार मदिरा, मस्त करि द, आजु सभके सुन्नरी।।
एह सुगंधित, सुभ बसन्ती, बायु से पंखा झलऽ
सान्तिमुख भर द हृदय में सुघर सुरपुर के परी।।
बजे मुरूली आ मृदंग सितार सारंगी बजे
भाव में मीठा सुरो के गा गुँजाबऽ किन्नरी।।
हाव-भाव दिखाव नाचऽ सभ कला अनुराग से
मथ दे मन के मनमथा अस बान मारऽ सरसरी।।

दोसरका अंक

पहिलका दृश्य

अहथान – अहल्या के कुटी

समय – साँझ के बेरा

अहल्या अँकेले बइठल बाड़ी

अह0 – कइसन घोर बरखारितु बा! भुअरी बारी से अकास ढँका गइल बा। पानी गिरे के पृथिवी से लेके अकास तक एक हो रहल बा। आऽ बहिन बरसात। ठंडा बयार पर बैठि के आव सुकुमारी। घाम से सूखल आउर तपल धरती के हरिअर करऽ सुनरी।

गावत बाड़ी –

सुन्नर सभ भाँति सुखद बरखारितु आइल।
घेरत घन घोर गगन, अंधकार दसो दिसन
सभ प्रसन्न, लोग मगन, सोभा सरसाइल।
मार रहल काम तीर, आकुल हिय अति अधीर

www.bhojpurisahityangan.com

उतकट उत्कंठा ना रोक कुछ सकाइल।
चमकत चपला अकास, चउँकत चित इत उदास
गरजल, घन-घने सबद हिया कँपकपाइल।
जलद एने धार झरे ओने ई आँख चुए
धीरज मन कहाँ धरे, कुछो न सोहाइल।
(रति के प्रवेस)

अह0– तू के हऊ ?

रति - अतिथि।

अह0 – खइले बाडू कि भूखे बाडू ?

रति – भूखल नाहीं, पिआसल बानीं।

अह0 – पिआसल बाडू ? बररवा के लगातार होखला से मैदान–घाट जंगल आदि कुल्ही पानी में बूड़ल बाड़न- आउर तूँ–तूँ पिआसल बाडू ? ई का हँसी बा ?

रति – हँसी नाहीं, साँच बात बा। सरोबर में शीतल जल भरल बा लेकिन ओह से चातकी के पिआस ना बुझी'.

अह0 – दिल्लगी छोड़ि के अब बुझउवल बुझावे लगलू।

रति – तूँ कबहीं ऐनक में आपन एह अनूप रूप के परछाहीं देखले बाडू?

अह0 – देखले बानीं एह समय तूँ का चाहत बाडू ?

रति – तपसिन ! हम खाली एक टक लगाके तोहार मुँह के मोहिनी देखल चाहत बानीं।

अह0 – तूँ त स्त्री हऊ।

रति – एह से का ? संसार के संपत्ति रूप बा ई विश्वभर के बिस्मय के बस्तु ह।

अह0 – तोहार का नाँव ह ?

रति – रति

अह0 – एहे के अहथान ?

रति – सरग बा। हम कवनो परोजन से एने से मिथिला जात रहीं – एकाएक बरखा के झड़ी लाग गइल, लचार होके हमरा आसरम के बहरी आश्रय लेबे के पड़ल। अचानक तोहार ई मोहिनी मूरत देखिके अचंभा में पड़िके चित्र लिखला लेखा खड़े रहि गइलीं। सखी, तोहार नाँव का ह ?

अह0 – हम तपसिनी अहल्या हईं।

रति – हम बड़ा भागशालिनी बानीं। सरग में अहल्या के नाँव सुनि चुकल बानीं, फेरू जोर से पानी आ गइल। किरिपा कइके का आज एह आसरम में जगह देबू ?

अह0 – हम कृतारथ हो जाइब। हमार पति घर में नइखन। परदेस गइल बाइन। तूँ अतिथि हऊ, रहल चाहत बाडू, ई हमार सौभाग बा। आसरम के भीतर चलऽ।

रति – चल पिआरी सखी।

www.bhojpurisahityangan.com

दोसरका दृश्य

अहथान – गौतम के तपोवन के मार्ग

समय – संध्याकाल

मदन आउर बसन्त

(मदन गावत बाड़न)

फूलन के माला गरे पहिनीं, ओल्हरे पराग सभ देंह मलीं।
फूले से सभ सेज सजाईं, फूले भेख धरीं पहिनीं
फूले धनुस फुले में तरकस, फूले तीर कँटीला बार
अइसन तान के कस मारीला, हिया चीर के पहुंची पार।
फूल महक छा जाले, सगरो आँख अबस हो जाले बन्द
फूले साथी, फूले बन्धू उहे खेल लूटीं आनंद,
मधुर फूल मधु पियल करीला फूल सेज पर सूतीला
फूलन के सुन्दर सोभा के देख सुखी हम होखीला।

दोसरका दृश्य

मदन – का सोचत बाड़ऽ बसन्त ?

बसंत – सोचत ई बानीं कि प्रभु, रउआ अतना झूठ भी बोल सकीला।

मदन – का झूठ बोलत बानीं सखा।

बसंत – कम से कम भीतर बात सभ दबा गइलीं।

मदन – कहसे ?

बसंत – इहे, मुँह से त खूब कह देलऽ कि "फूल के भेख से सरीर ढाँकीला" लेकिन ओकरा नीचे त महाशय के खासा मखमल के पोसाक देखत बानीं।

मदन – खाली फूल से कतहीं शरीर ढकल जा सकेला ? चाहें जाड़ा जा सकेला ?

बसंत – हमरो त मतलब इहे बा। अगर फूले से मतलब सध जाइत त फेरू लोग रूआ के खेती छोड़िके फूलन के खेती ना करित।

मदन – आछा ओकराबाद आउर का झूठ बोलली हँ।

बसंत – ओकरा बाद 'फूल के धनुस' झूठ ह। फूल के धनुहा विश्वकर्मा के बापो से ना बनीं। ओकरा खातिर एगो कड़ा चीज जरूरे चाही। ऊपर से फूल भले लगा दिहल जाव।

मदन – आछा आउर का झूठ बा ?

बसंत – आउर 'फूलन से खेले वाला।' फूलन से खेलल अइसन कवनो कठिन काम नइखे। लेकिन बबुआ तहरा के हम गुल्ली डंडा से खेलत देखले बानीं।

मदन – ऊ त लड़कपन के बात कह रहल बाड़ऽ।

बसंत – जाए द। लेकिन ई त हम कसम खाके कह सकत बानीं कि खाली फूलऩ के मधु पीके ई वास्तविक वर्तुलाकार शरीर एह तरह से पुष्ट नइखे होत।

मदन – अजी समुझत नइखीं।

www.bhojpurisahityangan.com

बसंत – आउर फूलन देने खाली ताकत रहे के अलावा रउआ हमनीं खातिर आउर भी दू चार गो काम करे के पड़ी।

मदन – अजी ई सभ त कविता के बात ह। लागत बा, कि तूँ कविता के कला कुछऊ नइख जानत। का ?

बसंत – जी नाहीं, हम काव्य–कला ना पढ़लीं लेकिन कला कंद के मिठाई खइले बानीं। कसम खा के कहत बानीं कि कलाकंद के मिठाई के आगे काव्य–कला आ चित्र कला कवनो चीझ ना ह।

मदन – एह गीत के सभ बात कविता बा–ले ऊ शिकार आवत बा। तोहार साथी मलय–पवन आउर कोइल सभ तइआर बा ?

बसंत – सभ तइआर बा–देखिहऽ ?

(नजदीके कोइल बोलत बिआ)

मदन – बाह–बाह, एह कोइल के अवाज सुनिके भी अगर अहल्या देवी हमरा फंदा में ना फँसली त ईहे समुझे के परी कि उनुकर सरीर रकत माँस के ना ह–ईंटा सुर्खी से बनल बा। बेशक, कोइल भी विचित्तर चिड़िया बिआ। चल, अब हट चले के।

(दूनों जात बाड़न)

जातो जात मदन एगो गीत गावत बाड़न।

बहुते करिआही चिड़िया बा, दूनो पखना भी करिआ
कइसे कवि कोमला कहेलन ई लाखन खइलस घरिआ
फागुन चइत मास में बोले, कइसन बा एकर अभेआस
संजोगी के इमरित लागे, बिजोगिनी के कर दे नास
कुहू–कुहू सुनिके जइसे तड़पे लागेला सभकर प्रान
बियोगिनी पछाड़ खाके गिर जाले जइसे नइखे जान
प्रानपती घर ना होखस सुन ले जो सुर ओकर मीठा
ओकर जीवन लागेला बेलकुल सूना बेलकुल सीठा
ऊ चिड़िया ह सत्यनासी एहि बसंत में आवेले
गड़बड़ कइके, कहर ढहावे, पंचम सुर में गावेले
बरहो मास रहित एह जग में जदि ई उतपाती चिड़िया
जीअल भारी होइत सभकर कतना सहतन ई पिड़िया

(प्रस्थान)

(अहल्या आ रति के प्रवेश)

रति – हाय सखी! एह बसन्त रितू में ई रूप, अइसन भरल जवानी आ एह तरह के। सखी, जीवन में खाली एक बार जवानी आवेला आउर जवानी बहुत दिन ना रहे चार दिन के चाँदनी होले।

अहल्या – समुझत बानीं, समुझत बानीं, लेकिन का करीं। हम बहुते अभागिन बानीं।

www.bhojpurisahityangan.com

रति – जौहरी के सिवा बानर कतहीं रतन के कदर जान सक्रेला ? बन में रतन मत छिटकावऽ। ई रूप आ जवानी बराबरे ना रही। हम बड़ा भागवती बानीं। जे तोहरा से एकाएक भेंट हो गइल। अपसरा लोग में अइसन अपूरब रूप होखल संभव नइखे। रहिए में एह रूप रासि के देखिए के धन्न हो गइलीं।

अहल्या – आहा! कइसन सुन्नर समय बा। कइसन मनोहर दृश्य बा (बइठ जात बाड़ी) कुंज में पुंज-पुंज मंजू मंजरियन से भरल बा! भँवरा गूँजत बाड़सन। जंगल के सम्पत देखे लायक बा। नदी घूँघट निकलले तेजी से बह रहल बीआ। एहिजा बसन्त आ बरखा दूनों के मधुर मेल अपूर्व सुन्दरता ला देले बा। अइसन ठंढा हवा कबो ना चलल। कोइल अइसहीं नइखे बोलत।

(गावंत बाड़ी)

आजु जिय चाहत का ए दई।
आकुल हिया बासना कइसन रहि-रहि उठत नई।
बोध न आवे, हिय ना भावे, सुध बुधि कहाँ गई।
ढीठ अउर मुँहजोर छोड़ अस हिय के दसा भई
कवन अपरिचित आकरसन से कवना ओर जई।

अहल्या – ई चनरमा अकास में ऊपर उठ रहल बा। बाह-बाह कइसन सोभा बा। पूरा बने में चननी भर गइल। एक ओरे शांत गौरव के साथे सुरूज अस्त हो गइलन दोसरा ओरे हँसत चनरमा निकलि अइलन। लागत बा सुरूज आ चनरमा दूनो जना आपुस में अकास के राज के बाँट लेले होखस। कुल्ही तरई सन्नाटा के बाद शान्ति निअन, सूखल, काज के बाद शिथिल सपन अइसन आ रहल बाड़ी सन। ऊ के गावत बा।

एगो सजल धजल नाव पर बइठल अपसरा लोग के गावत-गावत प्रवेस आ

प्रस्थान

समइआ असहीं बीतल जाय
के आई हमरा सँग भाई, आवे से आ जाय। समइया .....
छोटका गजरा सजल-धजल बा हीलत डोलत जाय
जुही चमेली के हारन के हीलत रहल सुभाय
नदिया भीतर बालम बजरा हिलत डुलत चल जाय
प्रेमी नया, मुसाफिर बानी नया प्रेम के पाय
मगन ओही में लगन लगवलीं हिया न प्रेम समाय
मुख में हँसी बसल आँखिन में रहल खुमारी छाय
पच्छिम के आकास बुझाता संझा भइल सुहाय
ई लाली अनुराग निअन बा दिल में गइल समाय
मीठ सपन नीअन चनरमा लउकत बा छबि छाय

www.bhojpurisahityangan.com

उमगल नदिया लहराइत बा कल कल धुनी सुनाय
सीतल मंद सुगंध पवन में बंशी धुन सरसाय
छुटे फुहारा हरख हँसी के ल जा गला लगाय।

अहल्या – ई त सरग के संगीत बा। कुल्ही देंह में रोमांच हो रहल बा। कइसन हृदय में बासना जागत बा। अब एह प्रवाह के रोकल हमरा सकती से बाहर हो रहल बा। हाय समुझ गइलीं। हमार जवानी बेकारे बा। हमार नारी जनम अकारथ बा। समय बीत गइल, बसन्त फिरू अपना सून आसरम में लवट जाई। जाइल चाहत बाड़ी फिर नेपथ्य में देखत बाड़ी। ई गोर रंग के नवछेटिआ कवन ह ? कपार पर जाटा रखले धीरे–धीरे ई कवन पुरूख एह बन बीथी में जा रहल बा। ई के ह भाई, हम त इनिका के कबो देखलीं ना। सरीर सुगठित सुनर आ लामा बा। छाती चौड़ा बा, चाल गजराज नीअन बेलकुल मस्त। मिरगा के चाम शरीर के सोभा आउर बढ़ावत बा। कइसन सुन्नर चनरमा नीअन मुखड़ा बा। ई केहऽ? पुकार के पूँछीं का ? पथिक! तूँ के हवऽ ?

(तपस्वी के भेख में इन्द्र के प्रवेस)

इन्द्र – सुंदरी तपसिन, तूँ के हऊ ? तूँ हमरा के काहें पुकरलू ?

अहल्या – तूँ कहवाँ जइबऽ ?

इन्द्र – मिथिला जाइब। मिथिला नगरी एहिजा से कतना दूर बा ? देवी! दया कइके हमरा के मिथिला के रहता बतादऽ।

अहल्या – पथिक ऊ अहथान त एहिजा से बहुते दूर बा। साँझ के समय आ गइल बा। हे तापस! तूँ रात के हमरा आसरम में सुख से रहऽ। काल्हु सुबहे ओहजा चल जइहऽ।

इन्द्र – तूँ के हऊ ?

अहल्या – तपसिन हई।

इन्द्र – तोहार नाँव का ह ?

अहल्या – अहल्या–ना भाई, ई हम झूठ कहली हँ। हम खाली नारी हईं, हमार कवनो नाँव नइखे, ना मित्र, हमार नाँव का ह से तऽ जइसे भुलाइल जा रहल बानीं। नाँव पूछत बाड़ऽ ना–ना हम खाली संन्यासिनी हईं, आउर हमार कवनो नाम नइखे।

इन्द्र – साँच–साँच खुलासा करके कहऽ। बुझौवल हमरा ना बुझा। तूँ के हऊ ?

अहल्या – प्रिय! साँच कहीं ? अच्छा साँचे कहब हमरा आसरम में चलऽ।

इन्द्र – ना–ना, हम आसरम में ना जाइब।

अहल्या – ना तूँ जरूर जइबऽ। तोहरा मन के भाव मुँहे पर साफ झलकत बा। कपट छोड़ के आरारम में चलऽ। (अस्पष्ट सुर में)

साँच कहत बानीं, हम तोहार दासी हईं, तूँ हमार प्राणेश्वर।

(दूनों के प्रस्थान)

(मदन आ रति के फेरू प्रबेस आउर गान।)

www.bhojpurisahityangan.com

जे भी अनिष्ट होते रहेला जीवन में
सभन के जड़ हमी हईं जान ल मन में
रहे न लोक हँसाई के खयाल एक छन में
रहे न शांति तनिको भी कामबंधन में

मदन – हृदय में ताक के फूलन के सर चलाईं हम।
रति – हृदय-हृदय सें अधर से अधर मिलाईं हम।
काम – कमल दलन के सुकोमल पलंग बिछाईं हम।
रति – सुगंध फूल के ओह पर बिखेर जाईं हम।
श्रमन के बूँदन से अभिसेक!
काम – सुबास प्रेम के साँसन में त चढ़ाईं हम
बिनोद प्रेम बचन गान से रिझाईं हम।
रति – अधर के स्वाद सुधा के मधुर चखाईं हम
कटाच्छ बान के पैना बना देखाईं हम
कला चले कोई के भी एक
काम – हम सरगलोक के रचना करीला छन भर में।
रति – सुधा बरखा के कराई ला मिलन घर-घर में।
काम प्रताप हमार अमर जानस छुद्र नर बा का
रति – करीं हम पूरन सोरहो कला से ओकरा के आ।
काम – जगत में प्रेम के जय घोषना करीला सदा
रति – विपत के बजर गिराई ला प्रेम पर ला-ला।
दूनो-हरलीं हमही विधि के विवेक

(तिसरका दृश्य)

अहथान – चिरंजीव के आसरम के बाहरी हिस्सा।
समय – तिसरा पहर
(तेजी से माधुरी के प्रवेस)

माधुरी – कइसन अचरज बा। कइसन अनेयाव। कइसन रोवाँ खाड़ा करेवाली घटना बा, का करीं। केकर सलाह लीहीं। एक बेरी दोसरा तपसियन के आसरम में जाईं का ? नाहीं। आउर तपसिन के आगे अबहिन निंदा जोग घटना परगट करेके जरूरत नइखे। देखीं, जदि हम ही एकर कुछ न्याय कर सकीं। पहिले सामी के साथे सलाह कइल ठीक रहो। ऊ सामी आवत बानीं-बोलाईं सामी, जरिका हेने आईं।

(चिरंजीव आवत बाड़न)

चिरं.– का ह ? का तूँ हमरा के बोलवलू हऽ ?
माधुरी – हँ, एगो बात कहे के बा।
चिरं. – का ई बात बहुत जरूरी बा।

www.bhojpurisahityangan.com

माधुरी – हँ! बहुते जरूरी बा।

चिरं. – तब फिर अबहिने कह डालऽ। हम हूँ एगो बहुते जरूरी काम से जात बानीं।

माधुरी – गुरू पतनी कहाँ बाड़ी ?

चिरं. – आसरम में।

माधुरी – का करत बाड़ी ?

चिरं. – करिहन आउर का ? आँख मलत बाड़ी। उहे पुरान मसला।

माधुरी – कवन पुरान मसला ?

चिरं. – उहे बूढ़ा–बूढ़ी के मसला। तूँ साइत नइखी जानत। आछा ले सुन।

एक जगहा प बुढ़वा–बुढ़िआ दूनों सुख से रहत रहन।
दुनों परानी के परेम पन जिए मरे सभ साथ चहन ।।
बुढ़िआ बेलकुल बैस्नव रहली बुढ़वा साक्त रहे भारी।
जब झगरा ठन जा आपुस में चले लट्ठ, मारामारी ।।
मचे खूब जब धगाचउकड़ी देखे चलस परोसी लोग।
कोई आवे, पुलिस बोलावे, होत रहे अइसन संजोग।।
'दुत तेरी' कहि के बुढ़वा, भइल एक दिन अन्तर्धान।
बुढ़िया बुढ़वा खातिर बिलखे लागल जे, दे दीही जान।।
साल भरे के बाद घूमिके फिर बुढ़वा आइल घर के।
बुढ़िया खुस हो रान्ह रसोई, खुसीं–खुसी देवे बर के।।
झगड़ा–रगड़ा खतम भइल आ प्रेम बढ़ल दूनो दरम्यान।
बुढ़िया मिस्सी मले अउर साबुन से बुढ़वा करे नहान।।

चिरं. – आछा मधुरी! हम एगो बड़का धोखा में पर गइल बानीं।

माधुरी – का धोखा प्राननाथ ?

चिरं. – धोखा इहे कि का तूँ साँचे हमरा के प्यार करेलू ?

माधुरी – साँचो के पिआर करीला।

चिरं. – देखे से त ईहे बुझाला।

माधुरी – त फिर धोखा का बा ?

चिरं. – इहे त धोखा बा। आछा तूँ खूबे प्यार करेलू ?

माधुरी – खूब प्यार करीला।

चिरं. – लेकिन हम तोहरा के त बेलकुले प्यार ना करीं।

माधुरी – एक दिना प्यार करबऽ।

चिरं. – ऊ हूँ लागत त नइखे (संदेह वाला सिर हिलावत बा) तोहरा के कवनो तरह प्यार ना कर सकीला।

माधुरी – काहें ? हम जात के बेसवा हईं एह से का ?

www.bhojpurisahityangan.com

चिरं. – नाहीं, तूँ जात के स्त्री हऊ एहसे। तोहरा से कवनो तरह से प्यार ना कर सकीला। तूँ एगो सधारन स्त्री हऊ। हमरा अइसन एगो भारी जनावर तोहरा अइसन एगो छुदुर स्त्री से पिआर ना कर सके।

माधुरी – तोहार जइसन ईछा! तूँ हमरा के प्यार करऽ चाहें मत करऽ लेकिन हम त तोहरा के बराबरे प्यार करल करब।

चिरं. – इहे त स्त्री जाती में दोष ह। गाला में जहँवा पड़ गइलीं त पीछा काहें के छोड़े जास।

माधुरी – आछा ई बात के छोड़ऽ। हाले में गुरूपतनी के आसरम में कुछ देखलऽ हऽ ?

चिरं. – देखली हँ।

माधुरी – का देखलऽ हऽ ?

चिरं. – साँप, बीझी, तोता, बुलबुल, गिरगिट, सियार।

माधुरी – ना–ना कुछ नाया बात ?

चिरं. – मिरगिआ के एगो बाचा भइल बा।

माधुरी – ना जी ई कुछो नाहीं। कवनो नाया अदिमी के देखली हूँ।

चिरं.– अदिमी के ?

माधुरी – हँ ।

चिरं.– अदिमी ? कहवाँ अदिमी त ना देखाइल।

माधुरी - एगो अदिमी आइल बा।

चिरं.– मरद कि औरत ?

माधुरी – मरद, मरद एगो सुनर गोर जवान रोज अरधरात में आवेला आ सुबहे चल जाला।

चिरं.– हँ ? साँचो! ई तमासा खराब त नइखे। कहवाँ से आवेला आ कहवाँ चल जाला।

माधुरी – बहुत दूर नदी के ऊपर एगो सजल–धजल नाव, का ना देखल ऽ।

चिरं.– साइद देखले बानीं।

माधुरी – ओहिजे से आवेला आउर ओहिजे चल जाला।

चिरं.– समुझ गइलीं। बाबा, चिरंजीव शर्मा अतना मुरूख नइखे। जाई कहवाँ ? स्त्री जात के चरित्र अइसने होखेबे करेला। से चाहे ऊ रेसमी सारी पहिने आउर चाहें फेंड़ के बलकल पहिने स्त्री के चरित्तर कहवाँ जाई ? कहवाँ जाई ?

माधुरी – एह घरी तहरा एगो काम करे के होई ।

चिरं.– का करे के होई, से बताव त सही। हमरा देहीं में जतना ताकत बा ओतना जदि बुधी आ मस्तक में रहित, त बुझाता हम साइत एगो बुद्धिमान अदिमी हो सकत रहीं।

माधुरी – करे के इहे होई कि ओह अदिमी के पाता लगावऽ। ऊ के ह ? कहवाँ रहेला ? आउर ओकर मकसद का बा? ई जाने के चाही।

चिरं.– ऊ केवन हऽ आउर काहाँ रहेला, से बेसक हम नइखीं जानत। लेकिन ओकर मकसद का बा, से त खूबे समुझ में आ गइल बा। अइसन हालत में सभ मरद के एगुड़े अभिप्राय होखबे करे ला।

www.bhojpurisahityangan.com

माधुरी – ऊ खूब तइके जब आसरम से निकलि के चले, तबे तूँ ओकरा पीछा लागऽ।

चिरं.– ई त हमरा से ना होई ? ओकर पीछा-पीछा जाके ओकरा के ना पकइ सकीं। पकइब त समने से लड़िके पकइब। (उग्रभाव आवत बा)

माधुरी – ना परभू ! महर्षी गौतम के आसरम में कवनो बदनामी के काम के जरूरत नइखे।

चिरं.– हूँ हूँ हूँ हूँ ! (हुँः.....)

माधुरी – दोहाई बा राउर सामी। एहिजा ना। जुध करे के होखे त तपोवन के बहरी जाके करब। आज पिछला रात के तनिका जागत रहब।

चिरं.– हमरा त आज रात भर नींद ना आई ? आछा बात बा! बहुत आछा खबर बा। एह तरीका से जीवन में तनिका खनक आवेला।

माधुरी – (नेपथ्य देने देखिके) ऊ शतानंद, आवत बा। रोवत काहें बा ?

(रोवते शतानंद के प्रवेस)

शतानंद – मउसी !

मउसी – का ह बेटा ?

शतानंद – माई मरल ऽ स।

मउसी – काहें ?

शतानंद – हमरा नइखे मालूम मर ल स आ कहलऽ स आजु रात के ऊ हमरा के अपना भीरी सूतेना दीही। (रोवत बा)

चिरं. – त छोकरा ! जब माई मारते बिआ त तें, ओकरा भीरी सुतहीं काहें जालस ?

मउसी – तू ना सुमुझबूऽ । ई हृदय के परेम के खिंचान ह। चल बेटा तूँ हमरा सँगे खेल। (शतानंद के लेके माधुरी के प्रस्थान)

चिरं.– (अपने आप) हूँ हूँ, हम का अइसहीं कही ला कि सुभाव ना छूटे। नीम के कतनो गूर घीव से सींचल जाव ऊ तबो मीठ ना हो सके। स्त्री के चरित्तर ठहरल कहाँ जाई ?

(एगो तपेसवी के प्रवेस)

चिरं.– हूँ हूँ हूँ हूँ ! (हुँः.....)

तपस्वी – काहे भाई। औचके अतना उग्ररूप काहे कर ले लऽ।

चिरं.– हमरा हृदया में किरोध आ गइल ह।

तपस्वी – काहें ?

चिरं.– तोरा एकर खोज करे के का जरूरत पड़ल बाटे। (मारे खातिर दउरत बा) निकल जो हमरा आसरम से।

तपस्वी – जात बानीं बाबा। हमं त एगो नीमन खबर देबे आइल रहीं।

चिरं.– आछा खबर (आगरह के साथे) का ? का ?

तपस्वी – महर्षी गउतम लवटल आ रहल बाड़न।

चिरं.– कब ले ?

तपस्वी – इहे, हफता भर के भितरे।

चिरं.– काहें ? लवटल काहें आवत बाड़न ?

तपस्वी – ओहिजा तपेसवा ना हो सकल। राछस बड़ी उपदरव करत बाड़न। विश्वामित्र रिषी

www.bhojpurisahityangan.com

महाराज दसरथ के भीरी राछसन के बिनास के परथना करे गइल बाड़न आउर गउतम जी लवटल आ रहल बाड़न।

चिरं.– महर्षी में तनिको मानसिक बल नइखे। गउतम रिषी बेलकुल अपदारथे हवन। मेहरारू छोड़िके उनुका से ओहिजा रहिए ना गइल। आउर का ? समुझ गइलीं – बेलकुल अपदारथ बाड़न।

(दूनों जात बाड़न;

चउथा दृश्य

अहथान अहल्या के कुटिया

समय – पिछला रात

(इन्द्र आउर अहल्या)

अहल्या – तूँ इन्दर हवऽ ? पहिले ई जनतीं त तोहरा के अपना हृदया के इसवर बनवतीं मायावी ?

इन्द्र – हमरा में कवन दोस बा ?

अहल्या – तहरा में सैकड़न दोस बा ? हम सुनले बानीं कि तूँ धुरूत, बेभिचारी आ लमट हव ऽ।

इन्द्र – हमरा एह बेकार बदनामी पर तू विसवास मत करिह ऽ।

अहल्या– आछा साँच कहऽ तूँ अहल्या के पिआर करे लऽ।

इन्द्र– (दूनों हांथ पकड़िके) अनिंद्य सुन्दरी हमार हृदयेश्वरी हमरा नंदन कानन के मंदार के फूल, बसन्त के हावा से संचालित होके अतना सुगंध ना दे, जतना सुगंध तहरा परेम से सनाइल बचन से मिलल साँस से मिल रहल बा। तहरा लाल–लाल ओठन में जतना इमरित बा ओतना हमरा सरग के भँड़ार में नइखे। (चुमालेत बाड़न) जल से बढ़िआइल बदरी से खेलत बिजुरी भी अतना चीकन आ तेज नइखे, जतना तहरा आलिंगन में बा प्रिया! (फिरू कोरा में बान्ह लेत बाड़न।

अहल्या– साँचो कहत बाड़ऽ ?

इन्द्र– बेलकुल साँच

अहल्या – हाय, अगर तोहरा एह बात पर विसवास कर सकतीं।

इन्द्र – काहें ना बिसवास करतू ?

अहल्या – तोहरा साभा में बेसवा नाचेली सन।

इन्द्र – ऊ नचनिआ हईसन, हमार पिआरी ना।

अहल्या – शची देवी तोहार रानी हई ?

इन्द्र – इन्दरानी खाली रानी हई, प्रणयिनी ना।

अहल्या – (अचानक) ना, ना, लवटि जा। अबो तूँ लवटि सके लऽ। हमहू लवटि सकीला। जे होखे के रहे हो गइल। कोई ना जानी। लवट जा।

इन्द्र – हम जाइब प्रियतमा, लेकिन हमरा साथे तोहरो चले के परी। चलऽ, अभिए चलऽ। किनारा पर नाव सजल खड़ा बा। चलऽ।

अहल्या – नाहीं हृदयेश्वर ! काहें हमरा के भारी दलदल में फँसा रहल बाड़ऽ। हम गौतम रिसी के मेहरारू हईं।

www.bhojpurisahityangan.com

इन्द्र – काहें के अपना मन के ई झूठ परबोध देत बाड़ू। बहुते दूर आ गइल बाड़ू। अब लवटल मत चाहऽ। अब अहिलेआ आ इन्द्र मरे तक एगो ना टूटे वाला जंजीर में बन्हा गइल बाड़न। चलऽ, हम तहरा के संगमरमर के महल में फूल से सुबासित सोना के पलंग में राखब। हीरा के गहना पहिने के देब। हजारन गो दास-दासी तोहार सेवा करिहें। हम देवराज खुदे तोहार रोज गोड़ दबाइब।

अहल्या– (काँपत स्वर में) कसम खा–साँचो हमरा से तू प्यार करेल ऽ।

इन्द्र – अबो तोहरा शंका बनले रह गइल ? पूछताड़ू पेआर करीला ? हाय प्रिया प्रानेसरी! अतना अधीर आगरह, अतना जलन्त बासना, तहरा समुझ में नइखे आवत।

अहल्या – त चलऽ। हम हूँ तोहरा साथे आज कलंक के समुद्दर में फानब। एह रहता से लवटल चाहत बानीं, लेकिन हाय लवटे के समरथाए नइखे। चलऽ। मगर पुत्तर् सतानन्द के का होई ?

इन्द्र – ओकरा के छोड़िद। तोहार चेला–चेली दूनों ओकर पालन करिहन। अबहिन रात बाकी बा। चलऽ।

अहल्या – कहवाँ चलब ?

इन्द्र– सरग के।

अहल्या – ना–ना सरग में ना।

इन्द्र – काहें प्राणेश्वरी!

अहल्या – पूछत बाड़ऽ काहें ? जब सरग में राह–घाट में सुन्नर स्त्री हमरा ओरे उँगुरी उठा के कहिहसन कि ई भरनहटी गउतम की मेहरारू हियऽ, तब हमार मुँह का लाजा से लाल ना हो उठी ? लाज के मारे पृथिमी में समा जाए के हमार जीव ना चाही ?

इन्द्र – हम तहरा के एकान्त में सभका से अलगा, सभका से दूर राखब कोई तहरा के ना जानी।

अहल्या – ना प्रियतम ! एह से आछा बा चलऽकतहीं दूर जहाँ इदिमी बिना कवनो द्वीप होखे, बेलकुल समुन्दर के किनारा, चाहे पहार के चोटी पर चले के, जहवाँ अदिमी के साँसो ना पहुँचे। जहवाँ कान में अपना बदनामी के भनक तक ना पड़े, जहवाँ। एकान्त में सुख से आपुस में बराबर अतिरपित बिलास के साथे आनंद के भोग होखे, ओहिजे चलल जाव। ओहिजा हम समुझब कि एह संसार में कवनो अदिमी नइखन खाली हम आ तूँ बस। ओहिजा हम एगो छुदुर मिलन के नाव के अपार गँभीर प्रेम के सागर में ओकर गाढ़, साफ, फेनिल हिलकोरा के बीच में अनेकन जुग तक खेवत चल जाइल जाई।

इन्द्र – बहुत आछा। चलऽ एही घरी चल देबे के। सतानंद सूतल बा, सगरो बन में सन्नाटा छवले बा, एगो पतई तक नइखे हिलत।

अहल्या - पानी पड़त बा।

इन्द्र – ई आउर आछा बा। रात के अन्हरिया में, बूँदा बूँदी निसबद्य पिछला रात में, कुल्ही सउंसार मुरदा नीअन अचेत पड़ल सूतल बा, जलदी आवऽ।

अहल्या – चलऽ।

(जाइल चाहत बाड़न जा)

www.bhojpurisahityangan.com

शतानंद – जागि के (माई–माई) मइआ।

अहल्या – अब का करीं ? लइका जाग गइल।

इन्द्र – लइका फेरू सूत गइल ! चलऽ जलदिए चलऽ। काहें देर करइले बाड़ू।

अहल्या – आछा चलऽ।

शतानंद – माँ ! माई ! मइआ कहवाँ गइलिस ?

इन्द्र – चुप रह बालक ! अहल्या लइका के चुप करावऽ। नाहीं त ई कुल्ही तइआरी पर पानी फेर दीही।

अहल्या – चुप रह शतानन्द!

शतानंद – माँ ! ई के हऽ ? माई ! तू कहवाँ जात बाड़ी ?

इन्द्र – एह अभागा लइका के का कहीं, कुल्ही काम बिगाड़ देलस।

अहल्या – अब का करीं ?

शतानंद – माँ ! माई ! भूख लागल बा।

इन्द्र – गाला घोंट द।

शतानंद – माई ! भूख लागल बा।

अहल्या – फेरू ? आछा त ले जनम भर खातिर तोर भूख मिटा देत बानी।

(जाके लइका के गाला घोंट देत बाड़ी)

इन्द्र – पापी जनम भर खातिर चुप हो गइल। जलदिए चलि आवऽ।

अहल्या – ई का कइनीं ! अपने लइका के हतेआ कर देलीं ?

इन्द्र – चलऽ बहरी कउआ बोले लगन स। आवऽ।

(बहरी जात बाड़न)

अहल्या – चलऽ चले के ! समुझ गइलीं। हम नरक के राज में उतर आइल बानीं। आछा त फिर बिसवास, भरोसा, ममता आउर पुन्न– सभसे विदा होत बानीं।

(जाइल चाहत बाड़ी)

(माधुरी के प्रवेस)

माधुरी – शतानंद काहें रोवत बा ? गुरु पतनी! तूँ एह भेख में अतना तड़के कहवाँ जात बाड़ू ?

अहल्या – पकड़ा गइलीं।

इन्द्र– (बहरी से) आव, जलदिए चल आव। (बहरी शब्द होता)

(इन्द्र के पकड़ले चिरंजीव आवताड़न)

चिरंजीव– अरे भगोड़ा, अब कहवाँ जइबे ?

इन्द्र – जदी तोर परान पिआरा बा त कहत बानीं न। छोड़ दऽ।

चिरंजीव– छोड़त बानीं बेटा, अबहिन ठहर जा।

(दूनो लड़त बाड़न। इन्द्र चिरंजीव पर बज्जर के आग छोड़त बाड़न आउर चिरंजीव गिर पड़त बाड़न।)

अहल्या – ई का-ई का भइल !

इन्द्र – जलदी चल आवऽ प्राणेश्वरी !

(अहल्या के हाँथ पकड़िके खींचत इन्द्र जात बाड़न)

www.bhojpurisahityangan.com

तिसरका अंक

पहिलका दृश्य

अहथान जनक के महल

समय (सुबहे में)

(जनक, गौतम, चिरंजीव, शतानंद)

गौतम – बंधु, का कहीं बहरी से लवट के देखलीं त आसरम के कुटिया में अदिमी से सून मिलल। प्यारी अहेलया के पते नइखे। हमरा कुटिया के सिखर विसाद से जइसे झुक गइल बा! कुटिया के अँगना में घास फूल उग के अपना पुरनका राज पर अधिकार कर रहल बाइन।

चिरंजीव– एने ओने उरूआ घूमत बाइन।

गौतम – कुटिये के भीरी के नीम के फेंड़ के चोटी पर चमगादड़ घोंसला बना ले–ले बाइसन। सारा बन निस्तब्ध आउर मलिन हो रहल बा। आसरम में घुसते एगो बड़हन सियार रोवे लागल आ हमरा के देखिके बहरी निकलि के आइल। हम जोर से पुकरलीं! अहिल्या। फरका बन में से हमरे आवाज के प्रतिध्वनि जइसे हमरा के उपहास करत उत्तर देलस – 'अहल्या' ओही घरी हमार चेली माधुरी आसरम से बहरी आ गइल! ऊ कहलस कि आसरम में कोई नइखे। चेला चिरंजीव कुटिया में घाहिल पड़ल रहन। पिआरा पुत्तर शतानंद मुरूदा नीअन पड़ल रहन। बहुते सेवा सुसुरखा कइला प ओकर परान बचल अहल्या लापता बाड़ी।

जनक – रउआ गौतमी (अहल्या) के खोज कइली हँ ?

चिरंजीव– एगो वन से दोसर का बन में जाके – एही तरह दूर तक ओकर कुछ खोज भइल, लेकिन कतहीं कवनो पाता ना चलल।

जनक – ओकरा बाद !

चिरंजीव– हम महर्षी से कहले रहीं, अगर स्त्री के लेके रउआ गिरहस्थी ना चला सकीं त फिर ई विडमना का ? ई बिआह के बन्धन काहें के अपना माथा पर लेत पानीं।

गौतम – साँच कहत बाड़ऽ हो चिरंजीव।

चिरंजीव– महाराज ! गुरू जी जब सुनलीं कि अहल्या एगो लंपट के साथे चल गइली तब कहलीं – ई असंभव बा। हम कहनीं "प्रभू" नाहीं ई शास्तर के बात बा। जवना मेहरारू के मरदाना परदेस गइल बा ओह में ई दोस होखल कुछो असंभव नइखे। मगर राजर्षी जी! हमरा बुझाते नइखे कि ऊ लंपट कवन चीझ खींच के मरलस। ऊ शस्त्र तेज में अगिनी नीअन अदभुत रहे।

गौतम – राजर्षि ! अब जीए के सरधा चाहें अनुराग नइखे। संसार में रहे के अब जीव नइखे चाहत। आज एह बन के बस्ती के छोड़के अपना चेला चेलिन के साथ जात बानीं।

जनक – कहवाँ जाइब मित्रबर ?

गौतम – बहुत दूर कैलास परबत पर जाइब। सुनले बानीं कि ऊ परबत बहुते सुन्दर आ एकान्त निरजन बा। हम ओहिजे जाके बहुते आग्रह के साथे आपन सभ कामना, सभ साधना, ओह विश्वनियंता जगदीश्वर के चरनन में लगा देब।

जनक – अपने तपोवन में रहिके तप काहे नइखीं करत ?

गौतम – प्रिय भाई, एहिजा रहिके तप ना कर सकीला। हमार सुन्दर तपोवन अनेकन, सुख के स्मृति से परिपूरन बा, ऊ बराबर बीतल बात के ले आके चित के उचाटत रही।

www.bhojpurisahityangan.com

जनक – २।उर दसा बहुते करुनाजनक बा।

गौतम – हम समुझत बानीं कि ऊ बेदना साइत ऊ प्रभु के मंगलमय बिधान बा। अतना दिन तक माया मोह में पड़िके, आतमसुख में रत रहिके हम भगवान के भुलाइल रहीं। एही से साइत ऊ दयामय प्रभू एह बन्धन के काटि के एह अकिंचन दास के अपना ओरे खींच लेलन। धन हो जगदीसवर, तोहार मंगलदायिनी ईछा पूरन होखे (भगवान खातिर परनाम करत बाइन) मित्र जनक! हम अपना परान से प्रिय पुत्र के रउआ हाँथ में सउपत बानीं। एकरा के रउआ देखत रहब।

जनक – आछा बात बा। हम एकरा के अपना पुतर से बढ़ि के समुझब आउर एकर पालन पोषन करब।

गौतम – प्रान से प्रिय पुत्र, शतानंद ! जात बानीं। हम तोहार बहुते निहठुर पिता बानीं। तूँ बचपने से माता–पिता के सनेह–सुख से बंचित बाड़ऽ। तोहार मतारी तोहरा के छोड़ देली। हमहूँ ममताहीन होके तोहरा के छोड़ जात बानीं। जात बानीं बेटा! कबो–कबो हमरा के इयाद कर लीहऽ। नाहीं, नाहीं! भुला जइह। अपना हियरा से एह निहठुर बाप के इयाद मिटा दीहऽ। जरि–मूल से निकाल के फेंक दीहऽ। पिआरा पुत्तर ! तूँ समझ लीह ऽ कि जनमें से तोहार माई–बाप नइखन। (चुम्बन) मित्र जनक! तोहरा आश्रम में एह बालक के रखले जात बानीं। जात बानीं बेटा! (चुम्मा) मित्र! एह बालक के देखिहऽ। ई बालक असहाय बा। औरी का कहीं तू लोग सभे जानत बाड़ऽ। एकरा के देखिह जा।! पुत्र शतानंद हमरा परान से भी बढ़िके जादा पिआरा बा। जात बानी बेटा! (फेरू चुम्मा) राजर्षि छमा करिहऽ। एह अभागा असमर्थ बिरिध गउतम के छेमा करिहऽ।

जनक – नइखीं जानत, राउर भाग अइसन काहें बा ? चाहें मित्र ! एह जतना के सहिके तूँ अनन्त अछय पुन्न के भागी बन रहल बाड़ऽ।

गौतम – आछा त अब जात बानीं।

चिरंजीव– गुरुजी रउआ सै बेरी जात बानीं जात बानीं" कह चुकलीं। एह बारंबार जात बानीं जात बानीं कहे के अरथ हम खूब जानत बानीं। राउर जाए के ईछा नइखे बुझात। अगर राउर जाए के ईछा नइखे त के रउआ के जाए खातिर अपना मूड़ी के कसम रख रहत बा। एहिजा रहत काहें नइखीं।

गौतम – नाहीं चिरंजीव! चलऽ, माधुरी कहवाँ बाड़ी ?

चिरं. – ऊ बहरी दरवाजा पर खाड़ा होके रोवत बीआ। जवन बरबरे से स्त्री जात के पिआरा काम हऽ।

गौतम – आछा त चलत बानीं। (जनक से) मित्र जातबानीं।

जनक – आछा जाईं मित्रवर!

गौतम – एक बेरी बस आउर एक बेरी पुत्तर के मुँह चूम लीं बेटा, परान से पिआरा! अपना बाप के का तूँ एक बेरी अउरो चुम्मा ना देबऽ ? (शतानंद के मुँह चूमत बाइन) बेटा, एक बेरी 'पिता' कहिके पुकारऽ त, ओकरा के सुनिके जाईं।

शता. – पिता! पिता!

गौतम – ना हम ना जा सकीं। गृहस्थ होके एहिजे रहब।

चिरं. – से त हम पहिलहीं से जानत रहीं। (बइठ जात बा)

गौतम – हाय अबोध बालक। हाय निहठुर बेटा! बेटा! तूँ अपना इमरितबानी से हमरा के

www.bhojpurisahityangan.com

काहें के पुकरले ह ? अब कहवाँ जाइब ? पिउरऊ! परान से अधिका! तूँ ई का कइलऽ ? नाहीं-नाहीं बस जात बानीं बालक ? मायावी सिसु! तू हमार के हवस! कोई ना! (बेग से जात बाड़न)

चिरं. – अइसनै तमासा त हम कबहीं ना देखलीं। (प्रस्थान)

जनक – गौतम! एह जगत् में तोहार तुलना नइखे! बेटा शतानंद चलऽ, अन्तःपुर में।

(दूनो जात बाड़न)

दोसरका दृश्य

(अहथान – राजा दशरथ के साभा)

समय – परातेकाल

(दशरथ, विश्वामित्र, वशिष्ठ, राम, लछुमन)

विश्वामित्र – महाराज, दूनो कुमार हमरा के दीहीं! रउआ से फिरू परथना करत बानीं।

दशरथ – त का हम समुझीं कि अतना प्रभाव वाला महर्षी विश्वामित्र राछसन के अतेआचार मेटावे में असमर्थ बाड़न ?

विश्वामित्र – ब्राह्मण अगर जप-तप-पूजा छोड़िके समर करी त रउए बताईं; छत्री खातिर कवन काम रहि जाई ?

दशरथ – राउर कहल साँच बा प्रभु; रउआ साथे आपन एगो सेनापति भेजत बानीं। चाहें अपने चलके जुध में राछसन के मारब। ई लइका अबहिन बेलकुले बालक बाड़सन। प्रचंड राछसन के साथे कइसे जुध करिहसन, छेमा करीं।

विश्वामित्र – राजन्! हम ई का सुन रहल बानीं ? छत्री राजा जुध भूईं में अपना बालकन के भेजे में कदराई देखावत बा। आछा बात बा! रउआ छत्री हईं न!

दशरथ – भगवन्! ई लोग अबहिन बालके बा!

विश्वामित्र – बारंबार एगुड़े बात – 'ई लोग बालके बा'! दशरथ! छत्री के बालक जवना दिन से शस्त्र पकड़ सकेला, ओह दिन से ओकर काम जुद्धे होला, जुद्धे ओकर कामना ह, सुततो-जगतो ओकरा ओही पर धेआन रहेला- ई का तूँ नइखऽ जानत।

दशरथ – महर्षि! ई दूनो लड़का अबहिन जुद्ध विद्या में निपुन नइखन।

विश्वामित्र – हाय, धिकार बा! "छत्री के बालक बारह बरिस के उमिर में जुद्ध शास्त्र के सिच्छा से खाली बा" ई कहतो खूनी अपमान से तोहार जीभ सिकुड़ ना गइल ? लाज से मुँह लाल ना हो गइल।

दशरथ – रिखिबर, रउआ जनते बानीं कि बहुते दिन तप कइके हम ई लइकन के पवले बानीं।

विश्वामित्र – महाराज! ई सभ बहाना रहे दीहीं। साफ-साफ कहीं कि देब कि ना देब ?

वशिष्ठ – राजन्! रिषी के परथना पूरा करीं। ई महर्षी अपने समरथ बाड़न, रउआ लइकन खातिर कवनो भय के बात नइखे।

दशरथ – गुरूदेव! त फिर ऊहे होखे। मुनिबर, ई हमरा परानो से अधिका प्रिय कुमारन के रउआ ले जाईं। प्रभु! आजु हम अपना आँखिन के तरई, पुतरन के रउआ हाथ में सउँपत बानीं। राम आ लछुमन के ले जाईं।

विश्वामित्र – राजन्! कृतारथ हो गइलीं। हमरा मालुम बा कि पिता के अधिका छोह-परेम के

www.bhojpurisahityangan.com

चलते दूनों कुमार अब ले शस्त्र विद्या में निपुन नइखन भइल। एही से रउआ के हम एह घरी झिड़कलीं हँ। महाराज! रउआ अधिका सनेह के चलते पिता के करतब पर धेआन नइखीं देले। ई रउआ खातिर सोभत नइखे। हम रउआ से राउर सेनापति के माँगे आइल रहीं। लेकिन एहिजा आ के देखलीं कि बुझाइल कि, राउर कुल्ही कुमार अबहिन से अस्त्र-सस्त्र के विद्या से खलिहा बाइन। राजन्, बिना जुद्ध कइले जुद्ध के शिक्षा मिलल असंभव बा। एही से हम रउरा से राम आउर लछुमन के माँगत बानीं। कुछऊ चिन्ता नइखे, हम राम आ लछुमन के सस्त्र-अस्त्र के सिच्छा देब आउर एह लोग के भिरिए रहब। ई लोग जलदिए सकुसल पिता के गोदी में आ जइहन।

दशरथ – रिखीबर, ऊहे होखे (अपना में) भरत आ सत्रोहन त हमरा भीरी रहिहन। भागे से कहीं ऊ दूनो लइका एहिजा मौजूद ना रहसन। ओहनी के होखल रिखिओ के मालूम नइखे – इहे त कुसल बा। (परगट) आछा बात बा। रउआ ई दून्हीं जना के ले जाईं।

(सभकर प्रस्थान)

तिसरका दृश्य

अहथान – बन के भीतर के राह

समय – गोधूली

(चिरंजीव आ माधुरी)

चिरंजीव – तूँ हमार साथ ना छोड़बे ?

माधुरी – ना साथी। (गावत बाड़न)

चिरंजीव – हाय रे सउँसार,

जहाँ सभ कुछ बा झूठ फुसार, केहू ना जानल, का संसार,
एकर रचना बा महाचूक। बोलीं मत देखीं रहीं मूक।।
'बा' कतहीं फिर न बा, ई सृष्टी भी सून।
ढेरन ढेर पाप के भीतर तनिका सा बा पून।।
रोसनी तनिका, ढेर अन्हरिया, भुइँसे जादा सिंधु।
महामृत्यु के मधे जनम पा, ई जीवन जल बिंदु।।
जतना सत्य बेसी बा मिथ्या, धरम देखते तंत्र
भगती तनिका किरतन बेसी पूजा से बा मंत्र
फूलन से पतई बा बेसी मणि से जादा करदम
छनिक सान्ति के बाद प्रिया के गरजन-तरजन हरदम।

चिरंजीव – अब हिनो कहत बानी-तू लवट जा।

माधुरी – काहें, कवन हम तोहार अनिष्ट करत नू बानीं ?

चिरंजीव – अनिष्ट! कुल्ही अनिष्टे त करता बाड़ू। तूँ धीरे-धीरे हमरा गोइ में चमोकन बन्नल जात बाड़ू ।लवट जा! ना जइबू ?

माधुरी – ना।

चिरंजीव – (हतास भाव से लमहर साँस लेके फिर गावत बा)

बरम्हा जी से विसुन बड़ा ब्रह्मा देलन झाँसा।
विसुन देव ते अभियो लेकिन राखत बानी आसा।

www.bhojpurisahityangan.com

बा भतार भार्जा से जादा, भर्त्ता घर के कर्त्ता
मगर रसोई के ले देखीं, बिआ नारिए भर्त्ता
सक्ति देखिके भक्ती बड़ बा सक्ति से आपन सक्ती
सक्ति भगत के देत रहेला ऊर्जा आउर भक्ती
मेहरारू से साली बढ़िके, बहिन बा जे नारी के
ऊ बा त्याग जोग शास्त्रन में बचन ह रिखि भारी जे।

चिरंजीव – अबहिनो ना गइलिस ? बात काहें नइखी सूनत ? इहे त तोरा में दोष बा।

माधुरी – ई अग्याँ मत कर प्रभू! तूँ हमार सामी हवऽ हम तोहार मेहर जहवाँ तोहार गति बा उहवें हमरो गति बा। शास्तर कहे ला इस्त्री के छाया नीअन पति के पाछे चले के चाही।

चिरंजीव – तब त कहे के चाही कि शास्तर के अनुसार पति के अवस्था बड़ा सोचनीय बा। जहवाँ ऊ जाई उहवें ओकरा साथे पहरा रही। तनिको छुट्टी ना पाई? पति पुरूब जनम में अइसन भयानक पाप कइले रहे ? अबो लवट जा! ना त आछा ना होई कह देता बानीं। ना जइबिस ?

माधुरी – ना

चिरंजीव – (फेरू गावत बा)

बाँह देखते पीठ भला बा क्रोध देखि के क्रन्दन
दास भाव से कहीं भला बा यार फँसिए–बंधन
सतुर खुलासा भला, न आछा कपटी कवनो मित्र
असल प्रेम से आछा बडुए काव्य प्रेम के चित्र
गुपुत प्रेम के फल बा पाछे बहुत जरूरी डंड
करे बिआह ऊ हउवे भारी मुरूख, पखंडी भंड
'मँगर कहीं आछा पतनी से कुल्ही कहेलन शास्त्री
चाहे 'मँगर' पकड़ि के छोड़े लेकिन नाहीं इस्त्री

चिरंजीव – देख, का तूँ भूत नीअन हमरा कपारे पर सवारे रहबिस ? जदि अबो ना लवटबिस त एहो जगहा प तोर गाला घोंट के मार डालबि आउर कतहीं गड्ढा खोद के गाड़ देब। महर्षी गउतम बहुते आगे बढ़ि गइल होइहें। साँझ हो आइल। राति में कवनो अदिमी आवत जात नइखन लउकत।

माधुरी – हम कवन अइसन अपराध कइले बानीं सामी ?

चिरंजीव – तू पिचासिन हऊ, डाइन हऊ! तूँ अपना आगरह आदर में, सनेह में 'अपना सेवा में' दिनरात हमरा के फँसावल चाहेलू। हमरा पर जादू करे लू, टोना मंतर करत रहेलू। हमार सरबनास करे के तदबीर कर रहल बाड़ू। बीच–बीच में हमरा बुझाए लागल कि जइसे हम तोहरा के तनिका–तनिका प्यार करे लगलीं। पहिले त हम प्यार करते ना रहीं।

माधुरी – से अगर कुछ पिआर करे लगलऽ त ओकरा में हरज का बा ? मेहर के अगर सामी प्यार करे त एकरा में दोस का बा ?

चिरंजीव – फेरू बहँस सुरू कर देलिस। ना लवटबे ?

माधुरी – ना।

चिरंजीव – (अचानक) अरे बाप रे बाप खइलस–माधुरी के धाका देके गिरा देत बाइन आउर अपने भाग जात बाइन।

www.bhojpurisahityangan.com

चउथका दृश्य

अहथान – कैलास परबत के सिखर

समय – साँझ बिरिआ

(अकेले अहल्या)

अहल्या – बहुते अहथान घुमलीं! पुर, जनपद, मैदान, कुंज, बगइचा, परबत, सिखर सगरो फिरि गइलीं। मगर सुख ना मिलल! सुख कहवाँ बा ? रोजे एगो मर्मभेदी साँस हृदय के फार ते निकले ला। चित्त आकुल बेआकुल हो जाला आ फिर विषाद धेर लेला। मिले के मदिरा पी के छन भर खातिर ई जन्त्रना भुला जाईला लेकिन तुरंते फिर ऊहे पाप के बड़का मूर्त्ती बनिके आँखिन के समने नाचे लागेला। फिरू अवचक्के आँखि उठा के देखीला त समने एगो भयानक गड़हा लउके लागेला, जवना के थाहे नइखे। जवना में रोसनी नइखे, आवाज नइखे, ओकरा विसाल मुँह हमरा के खाए खातिर मुँह बवले रहे ला। इहे त परिनाम बा। एही से हम पापिन घृणित बेभिचार कइके पुत्र के हतेआ कइलीं। ओह बालक के आखिरी रोवे के शक अबहिनो हमरा कान में गूँजत बा माई–माई ई का ? हमरा के पुत्तर पुकरलस। ना, ई त अइसहीं आवाज ह, ई कल्पना ह? ई कल्पना ह? ना, ई कलपना ना हो सके। धरती के नीचे से, अकास के छोर पर से ई रोए के शब्द आ रहल बा। दिन के परकास के ढाँकि के, रात के गँहिड़ अन्हरिया के आउर–आउर घना कइके, स्वर संगे सगीत के छाप के, करकस बनाके, परबतन के फोड़िके, सून अकास के फारि के, ई रोवे के स्वर निकल रहल बा, ई करून कातर सब्द, ऊ हाँथ जोड़ा के अनुनय, ओह मतारी के आगे हाँथ उठाके सन्तान के निसफल जीवन भिच्छा! ओ हे जगदीश्वर। काम के प्रलोभन अइसन न होला ? नारी आ अतना आन्हर। मतारी आ अतना निरमम हो जाले न। ऊ पुतरवा पुकरलस का? आवतानी बेटू! आज ओह पाप के दाग के अपना रकत से धोइब। ई हमरा भीरी कटार बा। ए चमचमात, तीछन सुन्नर सस्त्र! तूँ अतना छुदुर होखलो पर अतना भयंकर बाइऽ। आज प्रिय प्रनई अस हमरा छाती से लाग जा पिआरा सस्त्र! अहेलया के गरम खून पीलऽ। संसार से कलंकिनी अहेलया के नावँ मिटा द।

शतानंद बेटा – फिर पुकरले का रे! आवत बानीं; ठहर जो!

(छाती में कटार मारल चाहत बाड़ी। पीछा से मदन आके उनुकर हाँथ पकड़ लेत बा)

अहल्या – तू के हव ऽ ?

मदन – छेमा करीं देवी! तोहरा गोड़के नीचे ई सस्त्र रख देत बानीं एकरा बदला में हई इमरित भरल पात्र लऽ आ लाल–लाल ओठ से लगालऽ।

(रति आवत बाड़ी)

रति – का करत बाड़ू ए मुरूखा! ई बसंत रितु ह, अइसन सुन्दर हावा चलत बा। नीला आकाश एकदम नहइले बा, पुरनमासी के चाँद निकलत बा। ई फूलन से लदल फेंड़ आ कुंज कतना नजदीक बाड़न सखी! ई अहथान आ समय का आत्यहतेया करे जोग बा। छीः–छीः हँ, जब मइल आकाश से पानी गिरत होखे, जब सुरूज के परकास ना होखे, कीचड़ के दिन होखे, बेलकुल नीरस पहर होखे, कोइल ना बोलत होखे, गरम जल कब से भरल हवा लामा साँस लेत होखे, सूना मैदान आउर खेतन में पानी भरल होखे, रहता में कीचड़ होखे। तब आतमहतेआ करे त कवनो हरज नइखे। कम से कम ओह घरी-आतमहतेआ कइल अतना रूखल–सूखल आ अतना असंगत केहू के ना लागी।

www.bhojpurisahityangan.com

मदन – ई वसन्त के समय तुहूँ सुन्दरता के खजाना बाडू आ जवानी में चूर अइसना समया में आतमहतेआ करत बाडू ? ई का सोहाता ? का सहल जाई ? ई बेल्कुल एगो दिलग्गी अइसन बुझाता। ई त एगो असभ्यता के काम बा सुन्दरी?

रति – सखी ! मरे के त एक दिन बइले बा। मउअत अपने आवेला ओकरा के बोलावे के ना परे। कतना दिन के जिनिगी बा ? जवन चीझ अतना छोट बा ओकरा के आउर छोट काहें कइल जाव ? एकर जरूरते का बा ? जब ले जीवन बा तब ले जहवाँ तक हो सके, जेह तरह हो सके, भोग करे के चाहीं।

अहल्या – प्रियमित्र आउर प्रिय सखी! तूँ लोग साँचे कहलू ह। लावऽ मदिरा के पात्र–जल रहल बानी – लावऽ मदिरा के बरतन। पी के एह जरत हृदया के ज्वाला बुझाईं। (अमृत मदिरा के पात्र लेके पीअत बाड़ी) आउर लावऽ। लेके पीअत बाड़ी। सखी साँच बात कहलू ह भोग क लऽ। बाद के ? ओकरा बाद जे होखे के होई से होइबे करी। भोग कलऽ। फिरू शतानंद पुकरलन ह ? जा–जा, तूँ जा रे मुरूख बालक! पुत्तर बा ? कहवाँ के पुत्तर ? पुतर नइखे। पुत्तर कबो ना रहे। के कही कि हम अपना लइका के हतेआ कइले बानीं ? हम अपना लइका के हतेआ नइखीं कइले। ढाल मदिरा आउर पीव। (फिरू खाली पिअत बिआ) नाचऽ आ गावऽ, इहे जिनिगी के माजा ह।

सुन्नर फूल सुहाना फूले आकासे में चान मनोहर।
ऊड़ल जा ताड़े स बादल नील वायुमंडल के ऊपर।
कू–कू–कू–कू करे कोकिला, बन में रह बोले मीठा सुर।
अउर आम के मंजु–मंजरी, महके मस्त करे सगरो पुर ।
ले कर के ओकर गुन हावा मंद चलत आवत बीआ।
अइसन मोका कबो ना आवे, खोज लो पर लेके दीआ।
अइसन दिन में एह जगहा पर ई उमंग आ ई अवसर
अगर हींक भर प्यार करीना कइसे जीही ऊ दम भर।

अहल्या – बहुते आछा गान बा। बहुत आछा, ओह अइसन गान। आहा! वाह वाह! प्रानेसर, कहवाँ बाड़ऽ ? मदन ! हमरा प्राननाथ के लिआ आके हमरा से मिलवा दऽ। हृदया में ललसा के प्रचंड अगिन प्रबल हो रहल बा। रतिपति जा, उनुका के बुला लावऽ।

(इन्द्र के प्रवेस)

अहल्या – (आगरह के साथे) निहठुर प्रनई ! अहिल्या के छोड़ि के अब ले कहवाँ रहल हऽ? आवऽ प्रियतम हमरा पासे आवऽ! आज अतना चिंता से बेआकुल काहे देखात बाड़ऽ।

इन्द्र – कारन त हमरो नइखे मालूम।

अहल्या – चिन्ता के चित्त से दूर करऽ। हम तोहरा पासे बानीं। तबो तोहार मुखमंडल मलिन बा ? देखऽ कइसन सुन्नर पुरनमासी के चननी खिलल बिआ। जइसे चनरमा के संजोग से रात हँस रहल बिआ। प्रियतम ! ऊ दिन इयाद बा?

इन्द्र – कवन दिन ?

अहल्या – जवना दिन आके तूँ हमरा समना खड़ा भइल रहऽ, हे सुन्दर पाप! ठीक ओही जगहा सांत शुभ स्वच्छ चनरमा नीला आकास में रहे। आउर इहे चमकत तरई चनरमा के नजदीक जाके चमकत रहे। अइसने बेलकुल अइसने हरिअर पृथिमी रही। अइसने बसंती हवा धीमा चाल

www.bhojpurisahityangan.com

से चलत रहे। एगो मंद मधुर उछवास से हृदया सीतल होत रहे। एही तरह से तूँ दूर पर..... ।

इन्द्र – ओह दिन के बात रहे द। हम एह घरी तोहरा से एगो दारुन बात कहे आइल बानीं।

अहल्या – का ? का खबर बा ?

इन्द्र - अहल्या, हमरा एही घरी तोहरा के छोड़ि के जाए के होई।

अहल्या – कहवाँ जइब ?

इन्द्र – सरग के लवटब।

अहल्या – सरग के ? काहें ? का इहे हमनी के सरग ना हऽ ? एहिजे, हाँथ से हाँथ, ओठ से ओठ, छाती से छाती मिला के सुखभोग करऽ। मूड़ी पर सउँसे अकास फइलल बा, गोइतरिआ संसार के मधुर उच्छ्वास के बास बा ई सरग ना हऽ? ना, ना, नाथ, सृष्टी से सरग काज के नावँ लुपुत मत हो जाय। हम सरग नइखीं जाइल चाहत।

इन्द्र – तू मत जा, हम अकेले जाइब।

अहल्या – अकेलें ? अकेले जइबऽ आउर हम ?

इन्द्र – तूँ मिथिलापुरी लवट जा – अपना आसरम में रह ऽ।

अहल्या – ई तोहार अपूर्व दिलग्गी बा।

इन्द्र – दिलग्गी ना। साँच कहत बानीं। का तहरा से कहे के कोई । तू समझलू नाहीं।

अहल्या – का समुझऽ ? कुछ ऊ ना समझलीं।

इन्द्र – आछा त सुनऽ। अतने दिन तोहरा से सुखभोग कइके हमार ललसा खतम हो गइल। अब हम सुख नइखीं चाहत। एह घरी के उदास संभोग आउर सिथिल आगरह देखिके तूँ प्रेम प्रवाह के उतार के ना समझ सकलू ? ललसा के आग बुझ गइल–पिआस मिट गइल।

अहल्या – ई का हम ठीक सुनत बानीं ? परबत तूँ सुनत बाड़ऽ। फेंड़, लाता तूँ लोग सुनत बाड़ऽ। हवा, झरना नीला आकास, सुनत बाड़ऽ। "ललसा के आग बुझ गइल। पिआस मिट गइल? नइखू जानत – हम जागत बानीं कि सूतत बानीं। सपना देखत बानीं का ? पिआस मिट गइल। प्रभू, जगत् में प्रेम के पिआस भी मिटेला ? हमार पिआस त ना मिटल । देवराज! साँच कहत बाड़ऽ? आज तोहार प्रेम के पिआस मिट गइल ?

इन्द्र – अहल्या, तूँ अब लइकी नइखू ? का तूँ ना समझलू कि हम अब ले जवना बंधन में बँधल रहीं, ऊ परेम के ना, ललसा के बन्हन रहे।

अहल्या – साँचो ! ई साँच कहत बाड़ऽ? परेम ना रहे ? ई ललसा रहे ? हम ठीक सुनत नइखीं ? ओ! हमरा समुझ में कुछुओ नइखे आवत तूँ इन्द्र हवऽ? आउर हम अहिल्या हईं ? ई ब्बात – इहवाँ तक ठीक बा। ई सभ सपना रहे ? कुछुओ समुझ में नइखे आवत। ओः सिर चकराता ।

(एगो फेंड़ से पीठ लगा के खड़ा हो जात बाड़ी)

इन्द्र – अहल्या, लवट जा !

अहल्या – कहवाँ ?

इन्द्र – अपना देस के।

अहल्या – अपना देस के ? केकरा पास ?

इन्द्र – भद्रे ! अतना दिन के बाद गौतम रिखि भी आसरम में लवट आइल बाड़न।

www.bhojpurisahityangan.com

अहल्या – का क़हत बाड़ऽ.? केकर नावँ ले रहल बाड़े लंपट ! ऊ पवित्तर नावँ जीभ पर मत ले अइहे ना त जीभ भसम हो जाई। ओह पवित्तर नावँ के एह गन्दा जीभ पर लाके कलुषित मत करऽ? हम बेहोश आ पागल हो जाइब। तोहरा गोड़ पर गिरत बानीं। भीख माँगत बानीं। खाली ऊ नावँ मत लऽ। उनुका भीरी लवट जाइब साँचो ? धन्य बाड़ऽ इन्द्र! घन बा तोहार समुझ। ई हँसी वाली बात तूँ कइसे कह गइलऽ, लम्पट के। पापी स्पर्श से बिना कवनो संकोच के महर्षी के पवित्तर चरनन में लवट जाइब ? ओह महर्षी के पवित्तर रसना तोर जूठ जल पीहाऽ? तूँ नइखी जानत जवना दिन घिरिना से भरल मतलब लेके ऊ पवित्तर आसरम छोड़िके हम चल अइलीं, ओही दिन ओह पुन्य-भूइँ पर पैर रखे के अधिकार भी छूट गइल। जवना दिन पापी लंपट के हाँथ पकड़ि के हम नरक के भयानक गड़हा में उतरलीं ओही दिन सरग में प्रवेस करे के हमार अधिकार खतम हो गइल।

इन्द्र – अहिल्या, अहिल्या, सुनऽ –

अहल्या – ओही दिन से ओह नरक में मरन काल तक खातिर तूँ ही हमार सर्वस, हृदय वल्लभ ! जीवनधन हो गइलऽ । अपना से घिरिना करत बानीं। तोहरा साथे रहे के सैकड़न धिक्कार देत बानीं तवनो प, तवनोप, तोहरा के पिआर देले बानीं, प्यार कइले बानीं। तहरा के प्यार करत बानीं, आउर तहरा के पिआर करते रहब। जीअन आ मरन में तूँ ही हमार प्रानेसर बाड़ऽ।

इन्द्र – अहल्या ! इ कुल्ही जुगुति आ तरक सभ विरिथा बा। हम सरग के सागी देवन्दर हईं, आउर तूँ मानवी हऊ। हमरा आ तहरा बीचे प्रेम के सम्बन्ध होखल कबो संभव रहे ?

अहल्या – अगर असंभव रहे त तूँ हमरा के काहें, एगो कुलवधू के बहका के कलंकित कइले? काहें ओकरा के कतहीं के ना रखले ? फिर काहें हमरा के ओह शांत पुन्नमय आसरम से खींच के ले अइले ? हम अपना छुदुर सुख दुख के लेके ओहिजे पड़ल रहीं। तूँ ओह चनरमा से भरल-पूरल पूनम के रात में, साँझि के चीकन कोमल पवन के झकोरा में, कोइलर के कुह-कुह में, काहें के देखाई पड़लेऽ ? कुचक्र रचि के तूँ हमरा के काहें बहकवलेऽ ? फंदा डालि के काहे बन के मिरगी के फँसवलेऽ ? दू दिन आदर कइके, हमरा अंगन पर हाँथ फेरि के, पाछे से गरदन पर छूरी फेरे खातिर, काहें ओकरा के अपना जाल में फँसवलेऽ ?

इन्द्र – तोहार ई सभ परलाप बेलकुल निसफल बा! अहल्या, लवट जा ! इहे तोहरा खातिर आछा बा।

अहल्या – (दम भर सोचिके) सुनऽ प्रियतम ! तोहरा से हमरा कुछ कहे के बा? (हाँथ पकड़त बाड़ी)

इन्द्र – छोड़, हाँथ छोड़ ।

अहल्या – इहवाँ तक जीव हट गइल ? आछा त जा, निरमम निहठुर जा! सरग के लवट जा! अहल्या के भुला जा। ना देवेन्दर ओकरा के ना भुला सकेल? जा, सरग के लवट जा! लेकिन इयाद रखिहऽ इन्दर! हमार स्मृति तोहरा हृदय में रकत के साथे मिलिके बराबर बनल रही। जा, जा, सोवत, जागत, चलत फिरत बराबरे हमार नित भयानक छाया देखिके तूँ काँप उठबऽ ? जा सरग के लवट जा। हम अनंत दुःसपन नीअन तोहरा अनंत जीवन के साथे रहब।

इन्द्र – आछा बात बा अहिल्या! त फिर हम जात बानीं।

(जाइल चाहत बाड़न)

www.bhojpurisahityangan.com

अहल्या – (अवचके इनर के पकड़िके, गोड़ पर गिरिके) कहवाँ जात बाड़ऽ? जा मत प्रियतम! अबहिनो हम जुवती बानीं। तूँ दस बरिस तक जरूर एह रूप के तीख मदिरा के पिअले बाड़ऽ, लेकिन पात्र के भी त देखऽ, अभी अउरो बाकी बा। हम अबहिनो अउरी दे सकत बानीं। आँखि उठाके एह धन, लाम करिआ चिक्कन केसन के त देखऽ; एह ऊजर कुंद के कली अइसन दाँतन के त देखऽ, एह सुन्नर सुगठित देहलता के त देखऽ, एह लालसा से बेआकुल विशाल आँखिन के त देखऽ एह लाल-लाल रसीला होठन के त देखऽ, एह बड़-बड़ निकलल पयोधर के त देखऽ। जतना रूप के मदिरा चहबऽ ओतना देब, जतना पिअल चाहऽ, पिअऽ लेकिन जा मत!

इन्द्र – तोहार अनुनय विनय कइल बेलकुल निसफल बा हम जात बानीं।

अहल्या – साँचो ? जइबे करबे ? कहवाँ जइबे रे धुरुत! अउरी कवनो कुल कामिनी के छले जइबे का ? हमरा मुँह में कलंक के करिखा पोत के सुखी होखबे न ? मुरूख, निरमम, लंपट! हमरा के कतहीं के ना रखि के नरक में ढकेल के सरग जइबे ? जइबे ? जइबे ? जो इन्दर जो लेकिन सरग के नाहीं – जमपुरी के !

(कमर से छूरी निकालि के इन्द्र के कंधा में भरपूर भोंक देत बाड़ी)

इन्द्र – ओः (गिर पड़त बाड़न) का कइलिस पिसाचिन, राछसी,

मदन – शास्तर में लिखल बा, 'यः पलायति सः जीवति' बाबा भागे के काम बा। (मदन आ रति भाग जात बाड़न)

अहल्या – एही हाथ से हम अपना पेट से पैदा कइल बच्चा के मरलीं, गाला घोंट के ओकरा नस में बहत गरम रकत प्रवाह के जलदिए गति बन कर देलीं। अउर आज ओही हाँथ से एह खून से ऊ खून के बदला चुकवलीं! देवराज अतना दिन पर आज तूँ प्रेमिका रमनी देख ले लऽ। देखऽ आज ऊहे रमनी भैरवी हियऽ। हाः हाः ! एहिजे सड़ऽ, एहिजे मरऽ। बन के गीध आउर सिआर तोहरा सरीर के खाके तिरपित हो जइहन।

(पागल नीअन अटहास करत जात बाड़ी)

इन्द्र – पिचासिन, हतेआरिन ! ओ0 –

(गौतम आ चिरंजीव के प्रवेस)

चिरंजीव – अरे ई के पड़ल बा ? बेलकुल हिलत-डोलत नइखे। सउँसे सरीर रकत से नहाइल बा! मारे वाला कहवाँ भाग गइल ?

गौतम – देखीं, तनी नाड़ी देखीं! ('नाड़ी देखिके) अबहिन जीअत बा। आसरम में उठाके ले चलऽ चिरंजीव! चेष्टा कइके देखीं, साइद एकरा के बचा सकीं।

(दूनो इन्द्र के उठाके ले जात बाड़न)

चउथका अंक

पहिला दृश्य

स्थान – शची के महल

समय – साँझ के बेरा,

(देवी लोग के साथे सची देवी बइठल बाड़ी)

शची - से हम का करीं ?

अंजना – साँच त बा, तूँ का करबू ?

www.bhojpurisahityangan.com

कालिन्दी – लेकिन बात त आछा नइखे। पाँच साल से तोहरा सामी के पते नइखे ?

अंजना – पँच-पँच साल गाएब रहल! ई का सधारन चिंता के बात बा बहिन?

शची – तूँ ही बतावऽ बहिन, ओकरा खातिर हम का कर सकीला ?

अंजना – से त ठीके बा बहिन - तूँ का कर सकेलू ?

स्वाहा – लेकिन बहिन ! लोग त कानाफूसी करेलन।

अंजना – करेलन त जरूरे ! लोग काहें के रिआइत करिहन बहिन ?

शची – कानाफूसी कइके, का कर लीहन ?

अंजना – हूँ, कानाफूसी कइके चुप हो जइहन।

वारूणी – लेकिन सामी जी के खोज खबर लिहला बिना काम कइसे चली? पाता त लगवहीं के चाही।

अंजना – हँ त बिना पता लगवले कइसे चल सकेला ? खोज-खबर लेबहीं के चाही।

शची - अउर, ई आदत त उनुकर कवनो नाया ना हऽ।

अंजना – बेशक ई त उहाँ के पुरान आदत हऽ।

कामिनी – तबो बहिन ऊ सामी त हवन ।

अंजना– से त हइए हवन। ई के कही कि सामी ना हवन! बाजा बजाके बिआह भइल बा– बिआह के कुल्ही रीत भइल बा! दस्तूर के माफिक बिआह कइले बानीं सामी।

स्वाहा– से बहिन, उनुकर पाता त लगवहीं के चाही।

अंजना – पता लगवले बिना काम कइसे चली ? पता त लगवहीं के चाहीं।

शची – तूँ ही बतावऽ कहवाँ पता लगाईं ?

अंजना – हूँ कहवाँ पाता लगावल जाव ?

वारूणी – ना जाने कहवाँ गोता लगा गइलन।

अंजना (निरासा सूचक भाव से मुँह मटकावत बाड़ी)

कालिंदी – जब उनुका साथे मदन आ रति के जोड़ा घूम रहल बा तब एगो कवनो कलंक के घटना भइला बिना ना रह सके।

अंजना – कलंक अइसन कलंक ! एकदमे कान नइखे दीहल जात।

स्वाहा – इहे लऽ, नावँ लेत मातर के आ गइल।

शची – के ?

स्वाहा – रतिदेवी

अंजना – हँ रतिए त हई।

कालिंदी – ना जी रति त ना हई ।

अंजना – हँ जी, रति कंहवाँ बाड़ी ?

वारुणी – हूँ रतिए त हई।

अंजना – रति के छोड़ के दोसर आउर कोई ना ह ?

कालिंदी – ऊहूँ ! रति ना हई।

अंजना – ना ना रति ना हई।

(रति के प्रवेस)

www.bhojpurisahityangan.com

शची – आव हो रती।
अंजना– का जी, अतना दिन के बाद दरसन देलू।
कालिंदी – अकेले अइलू ह का ?
स्वाहा – तिरिथ जतरा में गइल रहू का ?
वास0– अजी, देवराज के का खबर बा ?
अंजना– हँ उहे खबर पहिले सुनावऽ।
रति – हँ–हूँ करत बाड़ी।

(गावत बाड़ी)

अब ले प्रेम बनिज हम कइलीं
अउर न कुछुओ जनलीं सजनी ना हम बीचे परलीं।।
करिआ केस बान्हि के बेनी पीठी पर धारीला
चितवन मधुर, स्याम पुतरिन के धीरे से चालीला।।
एही में बानीं प्रबीन ना जादू कुछ ऊजनलीं
सभका के बस सजा–बजा के, खूब करीं तइआरी।।
कबहीं काजर, कबहीं आँसू, अवसर पाइ चिकारी
भइल काम परपंच बिसारीं, ना कुछुओ हम पवलीं।।
अब ले प्रेम बनिज हम कइलीं।।

शची – एह घरी दिलग्गी रहे द।
अंजना – हँ जी, ई का दिलग्गी करे के समया वा बहिन ?
रति – नाहीं त फेरू अउर कब समय होई ?
अंजना – इहे ठीके बा। अबो ना दिलग्गी करिहन तब फिर कब करिहन ?
कालिंदी – ओह मेहरारू के नावँ का हऽ जी?
रति – अहल्या ।
वासवी – देवराज कहवाँ बानी ?
रति – उनुकर हालत लवट के आवे लाएक नइखे।
स्वाहा – कइसे ?
शची – पहले बुझौउल रहे द! का खबर बा खुलासा कह।
रति – बहुत सा बात बा। पहिले भीतर चलीं ओहिजे सुनब

(सभकर प्रस्थान)

दोसर का दृश्य

अहथान– शतानंद के घर के समने मिथिलापुरी के संडक, बेरा।
बादल घिरले बाइन समय–साँझ के ।
(अहल्या अकेला खड़ा बाड़ी)

अहल्या – इहे ऊ मिथिलापुरी ह। ऊहे ऊँच–ऊँच महलन के चोटी ह। ऊहे संडक, ओड़सने चिटियन के दल नीअन बराबर उद्यम आउर उत्साह के साथे अदमियन के भीड़ चल रहल बा। जाईं ओह देवदारू के फेंड़ के पासे बइठ जाईं। गोड़ फाट गइल बा, खून बहत बा। आँखिन से आग के

www.bhojpurisahityangan.com

चिनगारी निकल रहल बा। अहो बिघाता (बइठ जात बाड़ी) ई लोग का हाला करत आ रहल बाइन? पुरबासी लोग हऽ।

(कई लोगन के प्रवेस)

1. पुर. – ना, ई झूठ बात ह।
2. पुर. – अपने रिखी शतानंद ई खबर हमरा के देलन हँ।
3. पुर. – कवन रिखी शतानंद ?
4. पुर. – गौतम महर्षि के पुत्र।
1. पुर. – कब खबर देले रहन ?
2. पुर. – कालहु सबेरे
3. पुर. – महर्षि विश्वामित्र आवत बाइन।
2. पुर. – हाँ, उहे आवत बाइन।
3. पुर. – उनुका साथे दशरथ के दूनो पुत्रो आवत बाइन।
1. पुर. – साँचो आ रहल बाइन ?
2. पुर. – साँचो आ रहल बाइन।
3. पुर. – ई सुभ समाचार बा!
1. पुर. – बहुते सुभ बा!! चल, राजमहल में अउर-अउर सभ जगहा ई खबर सुनावे के।

(पुरबासियन के प्रस्थान)

अह0 – (उठिके) ई का साँच बा ? चाहें हम सपना देख रहल बानीं ? सतानंद जिअते बा। जीअत ? परमेश्वर! हम परथना करत बानीं ई बात साँच होखे।

(आउर कुछ पुरबासियन के प्रवेस)

1. पुर. – पुरुष के धरम ? ओकर प्रमान इन्द्रबाइन।
2. पुर. – नारी के सतीत्व ? ओकर प्रमान अहिल्या।
3. पुर. – अभागा गउतम!
4. पुर. – दुरमति अहल्या तोहरा के धिकार बा।
3. पुर. – भाई-पापिन अहल्या के नावँ मतलऽ।
2. पुर. – ऊ महापापिन हियऽ।
4. पुर. – ऊ पिचासिन हियऽ।
3. पुर. – ऊ पति के धोखा देके परपुरुख गामिनी हियऽ।

अहल्या – (आगे बढ़िके) पुरवासी लोगिन! तूँ लोग के हवऽ जे एह तरह से अहल्या के नींदा कर रहल बाइऽ ? एह तरह से एक जबान में सै-सै गो गारी दे रहल बाइऽ लोग।

3. पुर. – अरे ई कवन है जी ?
2. पुर. – उहे त! कवनो भुतनी हियऽ का ?
1. पुर. – नाहीं जी, एकर त कपड़ा फाटल बा, बार पाकल बा! झुर्री पड़ल बा। ई त कवनो दुखिया अनाथ लागत बिआ। तू के हऊ मइआ ?
3. पुर. – बोल, तूँ के हइस ?

www.bhojpurisahityangan.com

अह. – तूँ लोग अइसन सरधा के साथे सँइक पर खाड़ा होके जेकर नावँ लेत बाइऽ उहे हम हईं। पुरबासी भाई हम ऊहे अहल्या हईं।

2. पुर. – ई का कहत बाड़ी जी ?

3. पुर. – साँचो, तूँ ही अहल्या हऊ ?

4. पुर. – बेशक, इहे अहल्या हियऽ मार, मार।

1. पुर. – असहाय इस्त्री हियऽ। छोड़ दे, जाए दे।

3. पुर. – असती हिय ई।

2. पुर. – बदचलन अहल्या ईहे हियऽ।

4. पुर. – मार! ई पापिन हियऽ।

अह. – हम पापिन ना हईं। बदचलनो ना! पहिले हमार हाल सुनऽ।

2. पुर. – कुछुओ ना–मार

3. पुर. – मार, मार।

(मारत बाँ)

(शतानंद आवत बाड़न)

शता. – का करत बाइऽ जा पुरबासी लोगिन। अबला नारी पर ई कइसन अतेआचार बा।

2. पुर. – ई बदचलन व्यभिचारिनी बिआ।

शता. – काहे ? ई इस्त्री का कइले बिआ (अहल्या से) मइया! तोहार का नावँ ह ?

अह. – हमार नावँ अहल्या ह।

शता. – अहल्या! तपसिनी! गौतम के इस्त्री।

अह. – साँच बा। गौतम के स्त्री।

शता. – पुरवासी भाई! तूँ लोग अपना–अपना घरे जा–जा। हम एह तपसिनी के शास्तर विधान के अनुसार बेवस्था करब।

3 पुर. – फाँसी पर चढ़ा देबे के होई।

4 पुर. – नाहीं भाई, माथा मुड़वा के नगर से बहरी निकाल दिआव।

शता. – जवन कर्त्तव्य होई ऊ हम करब। बभनी के डंड देबे के अधिकार बाभने के होला। जा–जा।

(पुरबासी लोग जात बा)

शता. – तोहार नावँ अहल्या ह? तूँ तपसिनी एह मिथिला नगरी में काहें खातिर आइल बाड़ू, का चाहत बाड़ू ?

अह. – पुत्तर सतानंद के देखल चाहत बानीं।

शता. – पुत्र सतानंद के ? तोहार कहे के मतलब ?

अह. – तूँ के हवऽ जुवक ? तोहार ई मुखमंडल ई सुनर गोर लामा डील डाल परिचित नीअन बुझाता। तोहार कंठ सुर जदपी एह घरी सूखल, रूँधल आ गद्‌गद् बा तवनो पर जइसे परिचित नीअन बा लागत बा, बुझाता– तूँ के हवऽ जुवक, तूँ–तूँ का ?

शता. – हँ हम शतानंदे हईं।

अह. – तूँ ? तूँ (आँगा बढ़त बाड़ी)

www.bhojpurisahityangan.com

शता. – (पीछा हटिके) का कहल चाहत बाड़ू ?

अह. – का कहल चाहत बानीं ? बेटा

(छाती से लगावल चाहत बाड़ी)

शता. – ठहर नारी! एह उछवास के जरूरत नइखे! तूँ पुत्र के पुत्र कहिके पुकारे के अधिकार बहुत दिन से गवाँ चुकल बाड़ू। शतानंद के अब ना पइबू। जा, लवट जा, सरग में, ब्रह्म लोक में, बैकुंठ में, कैलास में, मानुस लोक में चाहें नरक में, चाहे जहवाँ जा शतानंद के ना पइबू। नारी, का तूँ भुखाइल बाड़ू ? एही रहता से ओह देवालय में जा। ओहिजा आश्रय, भोजन आउर पिए के पानी पइबू। बरखा के घटा जोर से उठल बा। अन्हिरिया घना होत जाता बा। चल जा।

(घर के भीतर जाके केवाड़ी बन्द कर देत बा)

अह. – पुत्तर! तोहरा हृदया में असीम करुना बा! आह, पृथिमी तूँ फाटिके सैकड़ गो टुकड़ा में काहे ना हो गइलू ? परमेसर ई तोहार कइसन टेढ़ नियम बा? साँचो, हम कलंकिनी बड़ले बानीं। लेकिन केकरा दोस से ? के एह सोनहुला लताके पत्थर के स्तूप पर रोपलस? के लोभ देखा के असहाय दुब्बर हृदया वाली रमनी के बहकवलस ? के ओकरा के संभोग के बाद तीखल सराब पिअला के बाद खाली बर्तन नीअन फेंक देलस ? का ऊ पुरुख निरमम क्रूर नइखे ? तवनो पर समाज के विचार में अकेले हम ही दोसी बानीं ? आन्हीं, बेग से चलल जलधारा परलय के समया नीअन जइसे बरस के धरती डुबा दे। बज्जर! दारुन हुंकार के साथे गरज! कालरात्री, दसो दिसा के ढाँक दे। जइसन पुरुख क्रूर आ ममताहीन होलन ओइसन अउरी कोई ना। आन्ही जोर से चल। एह अराजक राज के धूर में मिला दे। पत्थर अहिलेआ खड़े–खड़े भैरव हुलास के साथे ओकरा के देखस।

(उन्माद के अवस्था में प्रस्थान)

तिसरका दृश्य

अहथान – कैलास पर्वत

समय – परभात

(गौतम आ चिरंजीव खाड़ा बाइन)

जोगी लोग – दूरे गावत बाइन।

प्रतिमा गढ़ीं, रवा के पूजीं, सभजग राउर मूरत नाहऽ ?
सभमें भइआ तुही समाइल तब ऊ राउर सूरत ना हऽ ?
ई साधारन जीव बनाई का कवनो केहू के मंदिर
नीलाकास प्रकासे फइलल भुवन प्रभू के मूरत ना हऽ ?
सुरुज, चान, तारा, समुद्र, झरना बन परबत कुंज पवन आ
बिरिछ, लता फल फूल मधुरिमा ई कुल प्रभु के सूरत नाहऽ ?

गौतम – कइसन महान् दृश्य बा! दूर पर निहचल नीरव उज्जर तुखार के स्तूप नीअन लागत बा, ओकरा ऊपर असीम अकास पसरल बा ओकरा नीचे धुआँ के रंग नीअन परबत के तह देखाता, जइसे पूरा दिसा में पत्थर के लहर होखे। ई दृश्य कतना महान्, कइसन निसतबध, कइसन उदार, कइसन सुन्नर आ गँभीर बा।

जोगी फिर गावत बाइन –

www.bhojpurisahityangan.com

सतिअन से सुपवित्र भइल ई भूँइ लगत बा सिसु मुसकान।
भगति साधुजन के सकती भगती के गावत अनुपम गान।
प्रीति प्रतीति परसपर जे बा दया अउर करुना के भाव।
जेने देखीं, निखिल भूँइ में लउके हमरा प्रभु के चाव।
शीत, वसन्त रात दिन सभ में कइसन बैभव बा न्यारा
प्रभु कतना बाड़े महान् हमनी के दृश्य दिखे सारा।

गौतम – अइसन सुनसान सनाटा वाला सुन्नर निरजन अहथान में प्रकृति के साथे नर प्रकृति के भी संधि होला! हिरदय हलका हो जाला सभ झगड़ा मिटक जाला। जीवन सारथक हो जाला। छोभ आउर संगम दूर हो जाला, मुअला के भय जात रहेला।

जोगी – (फिर गावत बाइन)

तवनो प माटी के प्रतिमा गढ़ के पूजन चाहीं हम
हे इसवरी जगत् जननी ई भाव भगति के बाहीं हम
कवि के भासा सीमा में बा लेकिन देलू हृदय गँभीर
कइसे बरनन करीं समुझ में ई अबोध कुछ चाही मन
हाँथ बढ़वले, दया पात्र ले करूनामयी जगत् जननी
बहुत पुकरलीं, दया करऽ माँ! दया मात्र बस चाहीं हम।

गौतम – अब दुख नइखे, चिंतो नइखे, अब ललसो नइखे। ईर्षा नइखे, द्वेख नइखे। हम पिता के आँखिन के नीचे, मतारी के गोदी में अनन्त विसराम पा ले लीं। आजु एह ऊँचा परवत के सिखर पर बइठ के पैर के नीचे आँख उठा के देखत बानीं अचंभा के साथे पृथिवी के झगड़ा, कोलाहल, छुदुर लोग आ घृणित हिंसा लउकत बा। चिरंजीव! का सोचत बाड़ऽ ?

चिरं. – सोचत इहे बानीं कि प्रभु के दुर्बोध संसकिरित भाखा में राउर बड़ा गति-मति बा। जे सहज बात बा ओकरा के ज़टिल बनावे में अपने के विचित्तर छमता बा। अत्यन्त अद्भुत सकती बा।

(इन्द्र के प्रवेस)

गौतम – ई का ? तूँ एहिजा काहें के अइलऽ ? आसरम से अतना दूर चल अइलऽ ?

इन्द्र – परीछा कइ के देखलीं हँ त सकती कुछ बुझाइल ह। जोगिबर, आज हम अपना घरे लवट के जाइल चाहत बानीं।

गौतम – आउर दू दिन ठहरि जा। औरी थोरिका बल आ जाए द।

इन्द्र – काफी बल आ गइल बा। तोहरा आग्रह से, तोहरा रात-रात भर जागि के सेवा कइला से, हम एह घरी बहुते आछा स्वस्थ हो गइल बानीं। अब का हम पूछ सकीला कि तूँ के हवऽ ?

चिरं. – काहें! ई पूछि के तूँ का करबऽ ?

इन्द्र – (गौतम से) तूँ हमार बहुत सेवा कइलऽ हम ओकर पुरस्कार तोहरा के दीहल चाहत बानीं।

गौतम – हम एगो संनेयासी अदिमी हईं। हमरा कवनो बात के कमी नइखे।

इन्द्र – तूँ माँगे में संकोच काहें करत बाड़ऽ ? मनुष्य में हम एगो धनी अदिमी हईं। तूँ जे चाह, से दे सकीला।

www.bhojpurisahityangan.com

राम आ लक्ष्मण – ई कइसन शब्द बा ?

विश्वा0– साँचे त बा। ई त जइसे कवनो रमनी के कंठ के स्वर बा, चलऽ, चल के देखल जाव।

लक्ष्मण– फेंड़ के आड़ में ई कवन रमनी बिआ ? एकर मुँह त बेलकुले मुरूदा अइसन हो रहल बा।

विश्वा0– कहवाँ ?

लक्ष्मण – इहे पासे में त बिआ।

विश्वा0– ठीके त बा। ई नारी के बा ? ई का! हो हरे! ई का। उहे अहल्या हई ?

अहल्या– (आगे बढ़िके) हँ, हमहीं अहल्या हईं। तूँ के हव पथिक !

विश्वा0– अहल्या! तूँ इहवाँ बाड़ू ?

अहल्या – हँ, हम इहवें बानीं। तूँ के हवऽ ? जे परिचित अवाज में अहल्या नावँ लेके पुकार रहल बाड़ऽ ?

विश्वा0– पहचानत नइखू का ? हम विश्वामित्र हईं।

अहल्या– तूँ विश्वामित्र हवऽ। बेशक–पहचान गइलीं। काहे खातिर आइल बाड़ऽ ?

विश्वा0– हम अतिथि हईं ।

अहल्या – अतिथि हवऽ ? केकर ! गौतम एहिजा नइखन। अकेला हम ही बानीं। लवट जा, लवट जा। ऊहो अइसहीं आइल रहे, अपना के अतिथि बतावत रहे। रिखी! जा, लवट जा।

विश्वा0– ई का ! तोहरा के एह तरह सं त कबो ना देखलीं अहल्या ऊ सौम्य आउर लाज से लाल भइल मुखमंडल कहवाँ बा ? ऊ मीठ हँसी से चेहरा के रेघारो कहवाँ बा ?

अहल्या– ऊ कुछ नइखे, कुछ नइखे, सभ चल गइल। ऊ धुरुत सभ रस पीके चल गइल। जा रिषी,जा। एहिजा एह निरजन अहथान में एह दूर बनगाँव में हमरा के हैरान–परेशान करे, खिझावे काहें के आइल बाड़ऽ ? हम केहू के सुख के रहता में काँट बनिके ना रहीं। एगो कउड़िओ केहू के ना चाहीं! जा रिखी एक दिन तोहरा ऊपर हमार भगती रहे। लेकिन आज रतिओ भर सरधा नइखे।

विश्वा0– काहें तपसिन ! हमार का दोस बा ?

अहल्या – दोस ? जानत नइखऽ कि का दोस बा ? बड़ा भारी दोस बा! तूँ कपटी मरद हवऽ! प्रभू! इहे एगो महासत्त्य हम एह संसार में आके जनलीं मरद जात लम्पट होला। तूँ रिसी जरूर हवऽ, तबो तोहरा प बिसवास नइखे। तूँ मरद त हवऽ। साइद तू हूँ हमरा रूप के ललसे से आइल होखऽ अब हम ना बहक सकीं। ऊ झूठ, ऊ धोखाबाजी, ऊ मीठ हँसी, ऊ चितवन, ऊ गरदन मटकावल, सभ समुझ गइलीं, सभ जान गइलीं। मुनिबर, तोहार ई कोसिस बिरिथा बा ! घरे लवटऽ।

विश्वा0– अहल्या! तोहार हाल हम जानत बानीं। देवी, तोहरा के धोखा दिहल गइल बा, ईहो जानत बानीं। लेकिन ई ना जानत रहीं कि तूँ तेआगी भइल बाड़ू। फेरू हे अभागिन अहेलया, हम आजु एह पुत्र आसरम में तोहरा के धोखा देबे चाहें छले खातिर नइखीं आइल।

अहल्या – का विसवास बा ? तूँ मरद त हवऽ। मरद जात कुछो कर सकेले। सूतल मेहरारू के गरदन पर छुरी फेर सकेला, आपन पौरूख के बल पर कवनो जवान मेहरारू के

www.bhojpurisahityangan.com

पतिबरता भंग कर सकेला, कवनो लइकी के परेम के फूल के मसल के गोड़तारी फेंक सकेला, परेम आ भगति के बलि चढ़ावे में त ओकरा सोचहीं के नइखे, भुखाइल मुँह में राख डालल, पिअसला के जहर पिआवल, दया जइसन कोमल भाव के बिनासल, बिसवास के हतेआ कइल-मरद के बायाँ हाथ के खेल ह! मरद के जात कुछऊ कर सकेला।

राम- भोली माली अभागिन नारी। तूँ एहिजा तक ले मनुष्य के बिसवास खो देले बाड़ू। तपसी, तूँ का इहवाँ तक पतित हो गइल बाड़ू ? चाहें अतना तहरा दिल पर चोट लागल बा कि कुल्ही गेआन गवाँ के बइठ गइल बाड़ू ? - मुरुख अदिमी जब विवेक से सून हो जाला, जब ऊ करतब से गिर के गड़हा में चल जाला तब दोसरा के दोस देला, देवी ! एह संसार में मानुस-जनम फूलन के सेज ना हऽ! इसतिरी के बराबर पूरा ब्रह्मांड के आक्रमन से सतीत्व आ जीवन के राछा करके पड़ेला ! तूँ त सैकड़न प्रलोभन बलपूर्वक खिंचबे करबू। तोहरा अपना के खुदे संभारे के परी। बाधा आ विपत आके बराबरे तोहरा जीवन के रहता के कठिन बनइहन, तोहरा अपना बल से ओकरा के लाँघे के परी। ई सभकर जीवन एगो लड़ाई ह, जुध ह। अगर संसार अतना निहठुर बा ता तू हूँ ओइसने कठिन बन जा।

अहल्या – हाय! सकती नइखे।

राम- सकती नइखे ? ई कइसन मुरूखता बा! सकती त बड़ले बा, ईछा नइखे। विवेक बा उद्यम नइखे। प्रलोभन के फंदा में गोड़ अपने बढ़ा के जब फँसरी में बन्हा गइलू त खिसिआइल बाड़ू। पाप से मेल मुहब्बत कइला के बाद जब सरग के दरवाजा बन मिलेला त अदिमी के किरोध होइबे करे ला। अपना हाँथ से बिख के विरिछ बोअत बाड़ू आ पाछे जब इमरित फल नइखे फरत तब बिधाता सँगे लड़त बाड़ू ?

अहल्या – ई साँच ह। लेकिन सूखल मरूभूइँ में कतहीं झरना कबो बहल ह? पत्थल में कतहीं फूल जनमल ह ? समुद्दर के भीतर कतहीं सुरुज के रोसनी गइल ह ? हमरा जीवन के शुरुआत भारी परमाद से भइल रहे। बिधाता खंड़हर में तूँ चननी काहें के डललऽ। पपीहा के अन्हरिआ में काहें के रखलऽ। निरजन बन में फूलन के सुगंध काहें के बिथरवलऽ ?

राम- हाय रे मुरुख स्त्री ! अतना दिन में साइत तूँ प्रेमी के सुन्नर मुँह के घुँघरीला बार के, सीधा नाक के, दूनो कमल लेखा खिलल गाल के, दूनों लालसा से सिथिल आँख के, सरस अधर के, पहचनलू ? हाय मुरुख सुन्दरी! तूँ प्रेमिक के गम्हीर हृदया के परेम के गूढ़ बाथा के, संजत आगरह के ना पहिचनलू ? गौतम रिखी के ऊहे हृदय रहे, ऊहे दिल दिमाग रहे। ओकरा के तूँ लात से ठेल के किनारा कर देलू। तपसी, तूँ अमूल्य रतन के हार के कण्ठ से उतारिके गँहीड़ सागर के पानी के फेंक देलू !

अहल्या – (सोचिके) दार्शनिक बालक ! तोहरा पवित्तर मुखमंडल पर एगो नाया बसन्त के बिकास भइल बा। तोहार दूनों आँख हमरा ओरे ना पृथिवी के ओर लागल बा। तोहरा कंठ से किरिपा से पूर्ण सब्द बीना के झनकार नीअन गूँज रहल बा। जइसे श्यामरंग के बदरी से जल धारा फूटत होखे। बतावऽ तूँ सुन्नर कुमार के हवऽ ?

राम- हमार नाँव राम ह। अजोधेआ के स्वामी महाराज दसरथ के हम बालक हईं। हई लछुमन हमार छोट भाई हवन।

अहल्या – तूँ राज कुमार हवऽ! तोहरा खजाना में बहुते सोना आ रतन भरल होई, लेकिन

www.bhojpurisahityangan.com

राम आ लक्ष्मण – ई कइसन शब्द बा ?

विश्वा0– साँचे त बा। ई त जइसे कवनो रमनी के कंठ के स्वर बा, चलऽ, चल के देखल जाव।

लक्ष्मण– फेंड़ के आड़ में ई कवन रमनी बिआ ? एकर मुँह त बेलकुले मुरूदा अइसन हो रहल बा।

विश्वा0– कहवाँ ?

लक्ष्मण – इहे पासे में त बिआ।

विश्वा0– ठीके त बा। ई नारी के बा ? ई का! हो हरे! ई का। उहे अहल्या हई ?

अहल्या– (आगे बढ़िके) हँ, हमहीं अहल्या हईं। तूँ के हव पथिक !

विश्वा0– अहल्या! तूँ इहवाँ बाड़ू ?

अहल्या – हँ, हम इहवें बानीं। तूँ के हवऽ ? जे परिचित अवाज में अहल्या नावँ लेके पुकार रहल बाड़ऽ ?

विश्वा0– पहचानत नइखू का ? हम विश्वामित्र हईं।

अहल्या– तूँ विश्वामित्र हवऽ। बेशक–पहचान गइलीं। काहे खातिर आइल बाड़ऽ ?

विश्वा0– हम अतिथि हईं ।

अहल्या – अतिथि हवऽ ? केकर ! गौतम एहिजा नइखन। अकेला हम ही बानीं। लवट जा, लवट जा। ऊहो अइसहीं आइल रहे, अपना के अतिथि बतावत रहे। रिखी! जा, लवट जा।

विश्वा0– ई का ! तोहरा के एह तरह से त कबो ना देखलीं अहल्या ऊ सौम्य आउर लाज से लाल भइल मुखमंडल कहवाँ बा ? ऊ मीठ हँसी से चेहरा के रेघारो कहवाँ बा ?

अहल्या– ऊ कुछ नइखे, कुछ नइखे, सभ चल गइल। ऊ धुरुत सभ रस पीके चल गइल। जा रिषी,जा। एहिजा एह निरजन अहथान में एह दूर बनगाँव में हमरा के हैरान–परेशान करे, खिझावे काहें के आइल बाड़ऽ ? हम केहू के सुख के रहता में काँट बनिके ना रहीं। एगो कउड़िओ केहू के ना चाहीं! जा रिखी एक दिन तोहरा ऊपर हमार भगती रहे। लेकिन आज रतिओ भर सरधा नइखे।

विश्वा0– काहें तपसिन ! हमार का दोस बा ?

अहल्या – दोस ? जानत नइखऽ कि का दोस बा ? बड़ा भारी दोस बा! तूँ कपटी मरद हवऽ! प्रभू! इहे एगो महासत्त्य हम एह संसार में आके जनलीं मरद जात लम्पट होला। तूँ रिसी जरूर हवऽ, तबो तोहरा प बिसवास नइखे। तूँ मरद त हवऽ। साइद तू हूँ हमरा रूप के ललसे से आइल होखऽ अब हम ना बहक सकीं। ऊ झूठ, ऊ धोखाबाजी, ऊ मीठ हँसी, ऊ चितवन, ऊ गरदन मटकावल, सभ समुझ गइलीं, सभ जान गइलीं। मुनिबर, तोहार ई कोसिस बिरिथा बा ! घरे लवटऽ।

विश्वा0– अहल्या! तोहार हाल हम जानत बानीं। देवी, तोहरा के धोखा दिहल गइल बा, ईहो जानत बानीं। लेकिन ई ना जानत रहीं कि तूँ तेआगी भइल बाड़ू। फेरू हे अभागिन अहेलया, हम आजु एह पुन्न आसरम में तोहरा के धोखा देबे चाहें छले खातिर नइखीं आइल।

अहल्या– का विसवास बा ? तूँ मरद त हवऽ। मरद जात कुछो कर सकेले। सूतल मेहरारू के गरदन पर छुरी फेर सकेला, आपन पौरूख के बल पर कवनो जवान मेहरारू के

www.bhojpurisahityangan.com

पतिव्रता भंग कर सकेला, कवनो लइकी के परेम के फूल के मसल के गोइतारी फेंक सकेला, परेम आ भगति के बलि चढ़ावे में त ओकरा सोचहीं के नइखे, भुखाइल मुँह में राख डालल, पिअसला के जहर पिआवल, दया जइसन कोमल भाव के बिनासल, बिसवास के हतेआ कइल-मरद के बायाँ हाथ के खेल ह! मरद के जात कुछऊ कर सकेला।

राम- भोली माली अभागिन नारी। तूँ एहिजा तक ले मनुष्य के बिसवास खो देले बाड़ू। तपसी, तूँ का इहवाँ तक पतित हो गइल बाड़ू ? चाहें अतना तहरा दिल पर चोट लागल बा कि कुल्ही गेआन गवाँ के बइठ गइल बाड़ू ? - मुरुख अदिमी जब विवेक से सून हो जाला, जब ऊ करतब से गिर के गेंड़हा में चल जाला तब दोसरा के दोस देला, देवी ! एह संसार में मानुस-जनम फूलन के सेज ना हऽ! इसतिरी के बराबर पूरा ब्रह्मांड के आक्रमन से सतीत्व आ जीवन के राछा करके पड़ेला ! तूँ त सैकड़न प्रलोभन बलपूर्वक खिंचबे करबू। तोहरा अपना के खुदे संभारे के परी। बाधा आ विपत आके बराबरे तोहरा जीवन के रहता के कठिन बनइहन, तोहरा अपना बल से ओकरा के लाँघे के परी। ई सभकर जीवन एगो लड़ाई ह, जुध ह। अगर संसार अतना निहठुर बा ता तू हूँ ओइसने कठिन बन जा।

अहल्या - हाय! सकती नइखे।

राम- सकती नइखे ? ई कइसन मुरूखता बा! सकती त बड़ले बा, ईछा नइखे। विवेक बा उद्यम नइखे। प्रलोभन के फंदा में गोड़ अपने बढ़ा के जब फँसरी में बन्हा गइलू त खिसिआइल बाड़ू। पाप से मेल मुहब्बत कइला के बाद जब सरग के दरवाजा बन मिलेला त अदिमी के किरोध होइबे करे ला। अपना हाँथ से बिख के विरिछ बोअत बाड़ू आ पाछे जब इमरित फल नइखे फरत तब बिधाता सँगे लड़त बाड़ू ?

अहल्या - ई साँच ह। लेकिन सूखल मरूभूइँ में कतहीं झरना कबो बहल ह? पत्थल में कतहीं फूल जनमल ह ? समुद्दर के भीतर कतहीं सुरुज के रोसनी गइल ह ? हमरा जीवन के शुरुआत भारी परमाद से भइल रहे। बिधाता खंड़हर में तूँ चननी काहें के डललऽ। पपीहा के अन्हरिआ में काहें के रखलऽ। निरजन बन में फूलन के सुगंध काहें के बिथरवलऽ ?

राम- हाय रे मुरुख स्त्री ! अतना दिन में साइत तूँ प्रेमी के सुन्नर मुँह के घुँघरीला बार के, सीधा नाक के, दूनो कमल लेखा खिलल गाल के, दूनों लालसा से सिथिल आँख के, सरस अधर के, पहचनलू ? हाय मुरुख सुन्दरी! तूँ प्रेमिक के गम्हीर हृदया के परेम के गूढ़ बाथा के, संजत आगरह के, ना पहिचनलू ? गौतम रिखी के ऊहे हृदय रहे, ऊहे दिल दिमाग रहे। ओकरा के तूँ लात से ठेल के किनारा कर देलू। तपसी, तूँ अमूल्य रतन के हार के कण्ठ से उतारिके गँहीड़ सागर के पानी के फेंक देलू !

अहल्या - (सोचिके) दार्शनिक बालक ! तोहरा पवित्तर मुखमंडल पर एगो नाया बसन्त के बिकास भइल बा। तोहार दूनों आँख हमरा ओरे ना पृथिवी के ओर लागल बा। तोहरा कंठ से किरिपा से पूर्ण सब्द बीना के झनकार नीअन गूँज रहल बा। जइसे श्यामरंग के बदरी से जल धारा फूटत होखे। बतावऽ तूँ सुन्नर कुमार के हवऽ ?

राम- हमार नाँव राम ह। अजोधेआ के स्वामी महाराज दसरथ के हम बालक हईं। हई लछुमन हमार छोट भाई हवन।

अहल्या - तूँ राज कुमार हवऽ! तोहरा खजाना में बहुते सोना आ रतन भरल होई, लेकिन

www.bhojpurisahityangan.com

अइसन रतन ना होई - जइसन तहरा ई उपदेस के एगुड़े-एगुड़े सब्द बहुमूल्य बा। तू भगवान हवऽ नारायन हवऽ अपना चरन के धूर हमरा के द। क्षमा करीं प्रभू !

(गोड़ पर.....)

राम– हम का छमा करब ? छमा उनुका से माँगऽ, जेकरा अनंत परेम आ अनंत विसवास के बदला में तूँ अपना नीच हृदय के कठिनाई देले बाड़ू। जेकरा कोमल हृदया में अपना बेभिचार के बज्जर हन के मरले बाड़ू। जाईं मइआ, जाके उनुका से छमा माँगीं। ओकरा बाद बिधाता से छमा माँगीं, जेकरा मंगलमय नियम के, गरब के मारे, नया जवानी में जोस में होस खोके बहुते अवग्या के साथे तू लात मरले बाड़ू।

अहल्या – ऊ छमा करिहन ?

राम – ई त नइखीं जानत तपस्विनी ! तवनो प हमार इहे सलाह बा कि मौन भाव से परथना के साथे उनुका से रउआ छमा माँगी।

अहल्या – उहे होई– प्रभू! रउआ आज अहल्या के उद्धार कइ देलीं। चलीं, हमरा आसरम में पधारीं। हे केशव, हम राउर आ रउरा छोट भाई के पूजा आ अतिथि सतकार करब! (विश्वामित्र से) महर्षी ! हमरा कुटिया में चलीं।

(सभकर प्रस्थान)

(पँचवाँ अंक)

पहिला दृश्य

अहथान – पहाड़ी रहता

समय – आधीरात

(चिरंजीव अकेले में)

चिरं. – (अपने में) खूब धोखा देलस! ऊ छोकड़ी हमरा के भला सूते दीही? सगरो से दरवाजा खिरकी बन्द कइके भला कतहीं भला अदिमी के नींद आ सकेले ? मिथिला में जात खूनी रहता में अइसन बोखार चढ़ल कि का कहीं ? गौतम या माधुरी दूनों के अन्त में जाके एगो धरमसाला में ठहरे के मिलल। खूब छकलन लेकिन! (हँसत बा) धरमसाला! कहवाँ धरमसाला ? ऊ त ताड़ी के दोकान रहे। भाग अइलीं। मधुरी कहत रहली कि बहरी मत जा बोखार अउरी बढ़ी आ! अइसन ठंढा हवा बा। एह हावा से बोखार बढ़े त बढ़े। लागत बा एक दिन मधुरी के धाका देके गड़हा में गिरा के भाग गइल रहीं। लेकिन मधुरिया के इयाद नइखे। का हम अइसहीं कही ला कि अवरतन के जात एकदमे बैकूफ होला। खाए के नइखे, सूते के नइखे, अराम करे के नइखे दिने रात हमरे सेवा में लागल रहेली। सूत के उठला पर देखी ला, हमरा सिरहाना बइठ के जागल बिआ। औरते अतना कर सकेले बाबा। लेकिन अब की खूब भागल बानीं। जइसहीं देखलीं कि मधुरी ऊँघत बाड़ी, ओसहीं उठिके धीरे-धीरे गोड़ राखत निकलिके बहरी आ गइलीं अउर बहरी अवते एकदमे मूड़ी पर पैर रखिके सरपट भगलीं। खूब ठंढक बयार बहत बा। जब बेआर तबे जाड़। सखी लागत बा, एहिजा अब पैर धरके सूत लेबे के चाहत बा। अब लऽ इहे औरी, कवनो आ रहल बा? ई त मधुरिए लागत बिआ। ई त आउर बुरा भइल। आके कुल गुर माटी कर देलस। साँचो कहाला, जहवाँ बाघ के भय ओहिजे साँझ हो गइल।

(माधुरी आवत बाड़ी)

www.bhojpurisahityangan.com

माधुरी – प्रभू! एहिजा आ गइलीं ?

चिरं. – (खीझ के) एहिजा ना त का ओहिजा ?

माधुरी – चलऽ चलऽ डेरा पर चलऽ।

चिरं. – ना, ना जाइब।

माधुरी – जर के जोर आउर बढ़िआ जाई।

चिरं. – त ओहमें तोहार का ? हम एहिजा खड़ा होके, बइठल-बइठल मरब। ओहमें तोहार का ?

माधुरी – छिः प्रभू चलऽ।

चिरं. – देख, कहत बानीं न कि दिक मत करऽ।

माधुरी – तूँ घरे चलऽ।

चिरं. – फिरू हैरान करे लगलू ? अब जे दिक करबू त। आः (लेटत बाड़न)

माधुरी – छिः! उठऽ। (पकड़िके उठावल चाहत बाड़ी)

चिरं. – ओः! जइसे सरदी लागत बा (काँपत बा) अरे रे, ई का भइल ?

माधुरी – (घबड़ा के) का भइल ?

चिरं. – हमरा बड़ा हँसी आवत बा (हँसत बा) ना रे ना, हँसी त नइखे आवत। फिर क आवत बा।

माधुरी – का आवत बा ?

चिरं. – हँ, ठीक नींद आवत बा, सुनऽ। बइठ जा। तोहरा गोदी में सिर रखिके हम सूतब। आउर तूँ हमरा मूँड़ी पर कुहू-कुहू शब्द करऽ।

माधुरीं – उहे करब। तूँ पहिले घर चलऽ, उठऽ।

चिरं. – देख माधुरी, हम एगो बड़ा संदेह में पड़ गइल बानीं।

माधुरी – का सन्देह ?

चिरं. – संदेह इहे कि इसवर मरद के अवरत आउर अवरत के मरद बनाके काहें ना पयदा कइलन ? अगर मरद के अवरत बनाके आउर अवरत के मरद बनाके पयदा करतन त आः कतना माजा आइत। का ?

माधुरी – हँ, त आछा होइत। अब घर चलऽ।

चिरं. – ना तू सूते ना देबी। तनिका अराम करे आइल रहीं त कान भीरी आके भिन-भिन करे लगली – 'चलऽ घरे चलऽ'। अतना रात तक हमरा आँखिन में नींद ना आइल। त का हमरो के ना सूते देबी ?

(जाइल चाहत बाड़न)

माधुरी – हमरा कान्ही पर बोझा देके चलऽ।

चिरं. – (जाते जात) दयामय भगवान् । आछा पहरा तैनात कर देले बाड़ऽ! चल।

(दूनो जात बाड़न)

www.bhojpurisahityangan.com

दोसरका दृश्य

अहथान – नंदन कानन, मंदाकिनी के किनारा

समय – चाँदनी रात

(दूर पर ऊँचा प्रकास से भरल भवन। नदी के भीतर नाव बँधल बा। इन्द्र अकेले बाड़न।

इन्द्र – किन्नारी गा रहल बाड़ी सन, अपसरा नाच रहल बाड़ी। मिरदंग बाजत बा। थोरिका दूरी पर ऊँच महल में बहुत सा दीआ जरत बा। फिर हम सिथिल गोड़ से, धड़कत हृदय से, अकेला निरजन में, नंदन में फिर रहल बानीं ? काहें आज ई उत्सव, हुलास, परकास, हरखधुनि, संगीत, स्त्रीसंग आदि सुखभोग हमरा सहात नइखे। छीन चाँदनी के प्रकास भी तेज लागत बा। मलय पवन जइसे कुल्ही अंगन के जरावत बा। भीतरे–भीतर जइसे भूसी के आग सुलगत होखे। हृदय के भीतर तह से मरमभेदी दीर्घ स्वाँस निकल रहल बा। का करीं। कइसे ई आग बुझी, के बताई कि एह पाप के पराछित का ह ? का हम अनंतकाल ले एही तरह पछतावा से जरजर होत रहब ? (चुपा जात बाड़न) अहल्या के पति गौतम अइसन महतमा बाड़न ? ऊ मनुष्य हवन आउर हम देवता हईं ? हा ? धिकार बा। ई विधाता के निआव विचार जोग बा। (घुटना टेक के) हे महापुरूष! तूँ साँचा तपेसवी बाड़ऽ। तूँ बेलकुल उदार, निसकाम, निस्वार्थी, आउर बराबरे इयाद के लायक बाड़ऽ। ल ऊ शची देवी आ रहल बाड़ी।

(उठिके खड़ा होत बाड़न)

(शची के प्रवेस)

शची – (रोसनी के भरल भवन के देखिके) एह आधा रात में विलास घर में संगीत चल रहल बा; उत्सव हो रहल बा। छी–छी, लाज नइखे। सीतल मंद पवन डोलत बा। तनिका एह मंदाकिनी तट पर बइठीं।

इन्द्र – (आगे बढ़िके) शची।

शची – (चउँक के) के हव तूँ ?

इन्द्र – हँ, तोहरा इन्तजारी में एहिजा आइल बानीं।

शची – अतना किरिपा भइल नाथ दासी कृतारथ भ गइली। प्रभू लवट जाए द। रहता छोड़ऽ।

(जाइल चाहत बाड़ी)

इन्द्र – शची!

शची – लाज नइखे आवत ? कवना अधिकार से तूँ हमार नावँ लेके पुकारत बाड़ऽ ?

इन्द्र – सुनऽ हम साँचो कहत बानीं।

शची – हम कुछऊ नइखीं सुनल चाहत। हाय देवराज! देवी के छोड़िके मानवी पर लोभा गइलऽ। अन्त में नइखे मालूम अउरो का–का भोगे के लिखल बा। उरवसी, मेनका, रंभा आदि के साथे सुधा पीके मस्त होके नाचत रहीं, ऊ सभ हम सह लेलीं। काहें कि ऊ देवजाति के स्त्री रही सन। अन्त में रउआ जवना दिन मानवी पर रीझ गइलीं, ओही दिन राउर देवभाव जात रहल।

इन्द्र – साँच बात बा, अहल्या मानवीं बिआ। तवनो पर इन्द्रानी अहल्या के रूप अपसरान से बढ़िके अद्‌भुत बा। ई सभ हम साँच कहत बानीं। ओही प्रलोभन में मुगुध होके हम ई अपराध, ई पाप, कइलीं।

www.bhojpurisahityangan.com

शची – रूप अगर अपसरान से बढ़िओ के होखे, तवनो पर ऊ मानवी बिआ। ओकर छुअइला से तूँ कलुसित हो गइल बाइऽ। अब पुलोम कन्या इन्द्रानी के सरीर मत छुहिहऽ।

(किरोध से प्रस्थान)

इन्द्र – बराबरे से नियम विरूद्ध ललसा के परिनाम इहे होत आइल बा। छनिक संभोग अन्त में बहुते बिषाद आ व्याधी के घर होइबे करेला। शांती खतम हो जाला, नींदो ना आवे। तुछ प्रलोभन में पड़िके अपना मेहरारूओ के आदर परेम से वंचित होखे के पड़ेला।

(मदन आउर रति के प्रवेश)

इन्द्र – हाय! मदन तूँ अतना देरी में अइलऽ ? शची चल गइली।

मदन – हम का करीं प्रभू, रति के चलते देरी हो गइल। इनिका बार झारे आ बने-ठने में पहर भर बीत जाला।

रति – स्त्री लोग बराबर एह बात खातिर बदनाम कइल जाली लेकिन परमेश्वर, ई कुल्ही बिन्यास केकरा खातिर ह ?

इन्द्र – सुन्दरी, ई मेहरारू मरद के झगरा कब ले चली ?

रति – जब ले एह दूर निरजन वन में इन्द्र आ इन्द्रानी के झगरा ना निबटी।

मदन – इन्द्रानी के मिआज कइसन बा ?

इन्द्र – ऊ त धिकवला लोहा से भी बढ़िके गरम हो रहल बाड़ी।

मदन – प्रभू! सूते वाला घरे में ई बियोग के नाटक खतम होई। चल देवराज! सुनऽ कवनो चिंता नइखे। मेहरारून के बराबरे से अइसने ढंग होत रहल बा। दम भर गरजिहें, बरसिहें, अन्त में सब शांत हो जाला। चलऽ विलास भवन में चलीं।

इन्द्र – अब कुछो आछा नइखे लागत। नस-नस में आग निअन बहत बा। कपार आ हृदय दूनो हजारन पथर के बोझा से दबल बा।

मदन – प्रभू चिंता दूर करीं। हम पहिलहीं रउआ से ना कह देले रहीं कि अइसन परेम के बराबरे अइसने परिनाम होला ? धीरे-धीरे पानी थिराई। एह घरी विलास भवन में चलीं। चिंता नइखे। शयन मंदिर में एह रोग के दवाई देब।

(सभ जाके नाव पर सवार होत बाड़न)

तीसरा दृश्य

अहथान – मिथिला के सड़क

समय – सबेरे

(अहल्या अकेली)

अहल्या – अब का ऊ फेरू हमरा के पिआर करिहें ? फेर मीठ गम्हीर सुर में सनेह साथे हमार नावँ लेके पुकरिहें ? फेरू ऊ पासे आके ओही तरह से परेम से नीचे निगाह कइके हमरा ओरे तकिहें ? नाथ! प्राणेश्वर! छेमा करीं। तोहार अतना परेम, अतना बेदना, अतना आदर, पहिले हम समुझ ना सकलीं। हम पापिन हईं, पथ्थल हईं, अभागिन हईं! जवना के सिर आँख पर राखे के, ओह चीझ के हम गोड़ से ठेल देलीं। (ठेहुना टेक के) छमा करीं प्रभू! हमार सर्वस, हमार देवता! आज हमरा समुझ में आ गइल कि तीनों लोक में तुहीं हमार सभ कुछ हवऽ। तूँ ई लोक, तूँ ही परलोक। हम मुरूख हईं। एही से अतना दिन तक समुझ ना सकलीं। छमा करीं, छमा करीं, छमा करीं।

www.bhojpurisahityangan.com

(एगो पुरवासिनी के प्रवेस)

1. पुर. – तूँ के हऊ ए बहिन रहता छोइऽ। (जात बाड़ी) अहिल्या फिर हटि के खाड़ा हो जात बाड़ी।

(दोसरा पुरबासिनी के प्रवेस)

2. पुर. – अवरत के अक्किल त देखऽ। एकदमें बीच राह में खड़ा बिआ। अरे तनिका हट के खाड़ा होख। (जात बिआ)

(अहल्या हट के खाड़ा होत बाड़ी)

(तीसर पुरबासिनी के प्रवेस)

3. पुर. – कवन हिय रे! खाड़ा होखे खातिर और कतहीं जगहा ना मिलल? खोपड़ी पर खड़ा बाड़िस। हट।

(जाति बिआ)

(अहल्या पुरबासिनी प्रवेस करत बिआ। प्रवेस करत बेरी अहल्या के धाका लगला से गिर पड़त बिआ)

4. पुर. – मार रे चुड़इल! आः हमार कुल्ही बइर गिरा देलस।

(बइर बीनत बिआ)

अह. – छेमाकरऽ बहिन। हम बइर बीन देत बानीं।

(अहल्या बइर बीनत बाड़ी। ऊ मेहरारू बइर के ओड़ी लेके जात बिआ)

अहल्या – अब का उनुका के पाइब? ओह तरह से हृदय के भीतर उनुका के पाइब? जेकरा के जगला में, दिन में, गँवा देलीं, उनुका रात के अन्हरिया में कइसे खोजब?

(कुछ राजभृत्यन के प्रवेस)

1. भृत्य – बेशक बड़ा बली बा।

2. भृत्य – हँ भाई! धनुहा के उठा के ऊख नीअन फट से तोड़ देलस जी!

3. भृत्य – ओह लइका के देखला से ईहे बुझाता कि ओकरा सरीर में खूबी जोर बा।

2. भृत्य – अन्त में राज कुवाँरी के बिआह का एगो बैरागी के लइका के साथे होई जी।

1. भृत्य – चल-चल, मुँह सँभार के बात कह।

(भृत्य लोग जा ताइन)

अहल्या – ऊ का अबो फेरू ओही तरह से प्यार करिहन ? हम बेभिचारी हईं, हम अभागिन हईं, हम विसवासघात करे वाली हईं, हम कवना साहस से उनुका से छमा माँगब ?

(कई एगो पुरोहितन के प्रवेस)

1 पुरो. – से त होइबे करी। मनिकांचन जोग के बात शास्तर में लिखले बा।

2 पुरो. – अरे रहे देब आपन सास्त्र! तूँ शास्त्र का जानऽ भट्ट जी।

1 पुरो. – हम शास्तर ना जानी! पुरान, उपपुरान, वेद, वेदांग, दर्शन, मनुस्मृति आदी कुल्ही कंठस्थ बा।

3 पुरो. – अरे त अतना चिचियात काहें बाड़े।

4 पुरो. – राजा दसरथ के ले आवे खातिर लोग गइल बा।

3 पुरो. – अजी हँ, गइल बा लोग। उनुकर लइका राम के बिआह बा आउर उनुका के लावे खातिर लोग ना जाई ?

www.bhojpurisahityangan.com

1 पुरो. – गौतम किहाँ राजा के नेवता गइल रहे का, जे ऊ आइल बाइन?

2 पुरो. – हँ, गइल रहे।

4 पुरो. – राज भवन में खूब मजे से चारों पदारथ पर हाँथ फेरत होइहें।

3 पुरो. – अरे, अतना चिचियात काहें बाड़े भाई।

1 पुरो. – गौतम बहुते दुबरा गइल बाइन।

4 पुरो. – दुबरा ना जास। अतना बड़का कलंक लागल बा।

3 पुरो. – हम कहत न बानी–तनिका धीरे चिल्ला मत।

(पुरोहितन के प्रस्थान)

अहल्या – ई का सुनत बानीं ? ऊ आइल बाइन? आइल बाइन? हम का करीं। जाईं, उनुका गोड़ पर गिरके छमा परथना करीं। ऊ प्रेममय हवन, ऊ दया के सागर हवन, ऊ छेमा के मूरत हवन। छेमा कर भी सकेलन। जाईं, जाईं।

(जात बाड़ी)

चउथा दृश्य

अहथान – जनक के राजसभा

समय – दूपहर के पहिले

(जनक, गौतम, शतानंद, विश्वामित्र)

गौतम – आजु हम धन्य हो गइलीं। बलिहारी! कइसन पानी भरल बदरी नीअन सुन्नर श्याम सरीर बा। राजर्षि जनक! राजकुँवारी सुन्दरी सीता इनिका से आछा बर कबो कतहीं ना मिलित। बिजुली का कबो बिना नाया बादल के सोभा पा सकेले ? चम्पा के कली साँवर नया पल्लो के छोड़िके का कबो सोभित हो सकेला ?

जनक – बंधुवर, रउआ शुभागमन से ई बिआह कार्य अउरो बढ़ियाँ से सुसम्पन्न हो गइल।

गौतम – प्रिय! हम बहुते दिना से प्रवास में रहीं। कर्त्तव्य भुलाके हम दूर निरजन में सवारथ में मगन रहीं। एगो ओकर सुख दोसरे होला। भाई, राउर चीठी पहुँच के हमरा हृदया में फेरू एगो बीतल इयाद जगा देलस।

(माधुरी के घसीटत चिरंजीव के प्रवेस)

चिरं. – ई लऽ! ई मायाविन, कलाबिन, जादू जाने ले।

विश्वामित्र – ई का चिरंजीव! राज सभा में अपना पत्नी के अपमान कर रहल बाइऽ।

चिरं. – ई मायाविन जादू–मंतर जाने ले! हम बराबरे से एकर अनादर करत आवत बानीं। ई ओकरा बदला में हमार खाली सेवा पूजा करत रहेले। एकरा के करूवा बात कहलो पर खाली हँसत रहेले। हम निरदयता से खिसिआ–खिसिआ के पीटी ला ई चुपचाप सहिके अकेला में रो के चुपा जाले। हम एकरा के निरजन बनके मैदान में छोड़िके रात में कैलास परबत अइसन बीहड़ रहता में छोड़िके चल अइलीं, पीछा से जब बेकार होके मिथिला के रहता पड़िके सूत गइलीं, त उठला पर देखत बानीं कि ई पिचासिन जगले सिरहाना बइठल सेवा करत बिआ। ई मायाविन जरूरे मंतर जानेले। मालुमे नइखे प्रभु! कवना मंतर के बल पर ई मायाविन हमरा पथ्थल हृदया के हमार पसू प्रवृत्ति के अपना बाँह आउर सनेह के पास में बन्हले रखले बिआ। अब हम अपना मन, बानी, आ सरीर से एह पिचासिन के दास हो रहल बानीं। ओहो पुरूस के ई कइसन दुरगति बा।

(बइठ के रोवे लागत बा)

जनक – आछा, जा चिरंजीव हम एकरा खातिर डंड के वेवस्था करत बानीं। (माधुरी से) मायाविनी! तूँ आज से एह पाप के कारन रानी के सखी भइलू। अन्तःपुर में जा। चिंरजीव जा। जा जा।

(दूनो जात बाइन)

गौतम – हरि! दयामय! तूँ धन बाइऽ। अतना दिन में माधुरी के महासाधना सिध भइल।

(राजा दशरथ के प्रवेस)

जनक – (गौतम से) बंधुवर! ई अजोधेआ के सामी महाराज दसरथ हमार समधी हईं। (दसरथ से) महाराज! इहाँ के हमार बंधुबर महर्षी गौतम हईं।

(दसरथ गौतम के परनाम करत बाइन। गौतम दसरथ के असीरबाद देत बाइन)

दसरथ – महाराज! अबहिने रउआ महल में आवे के बेरी रहता में एगो अदभुत दृश्य देखली हँ– एगो पागल मेहरारू खड़ा रहे।

गौतम – पागल मेहरारू।

दसरथ – हँ उनमादल नारी। ओकर गोर देंह, दुब्बर सरीर आउर रोगी नीअन लागत रहे। ओकर एँड़ी तक लामा केस, रूखल सूखल बिखरल रहे। ओकरा दूनों बड़वर आँखिन में लोर भरल रहे। ओकरा चाकर लिलार पर बहुत गहरा दुख के कथा कालिमा अंकित रहे। ऊ किनारी नियन मीठा कंठ से कइसन वेदना से भरल गम्हीर मीठ गीत गावत रहे। मित्र! ओकर सुर सरग से उतरल रहे। ओह में अनंत बासना, के साथे अनंत असीम हताशा, निरासा भरल रहे। हम अइसन करूना के मूरत ना देखलीं, अइसन करून संगीत ना सुनलीं।

गौतम – (अपने में) उनमादल रहे, पागल रहे

(बहरी गीत के शब्द सुनाई पड़त बा)

दसरथ – उहे आवत बिआ। साइत ऊ नारी एहिजे आवत बिआ।

(अहल्या प्रवेश कइके गावत बाड़ी)

प्रभू जी हमरा एक बार फिर चाहऽ।
जइसे पहिले चाहत रहलऽ, ऊ प्रन फेर निबाहऽ
ऊहे बेअग्रता टीस हृदय के जाग उठल बा हिय में
रोवत बीतत रैन दिवस नित चैन न छन भर जी में
एक बार फिर पकरि उठाऽके हिय से हिया लगावऽ
सैकड़ खंजर, लाखन बज्जर, कसहूँ सांत करावऽ
टूटल-फूटल हृदय बाँसुरी नाथ तोहरे कर में
बजे बाँसुरी फिर से ओसहीं मधुर मनोहर सुर में
प्रभू जी हमरा एक बार तू चाहऽ।।

गौतम – अभागिन तोर ई भेख ? ई दासा।

अह. – अभागिन हईं। साँच, हम अभागिन हईं। प्रभू! हम बड़का अभागिन बानीं। बड़ कलंकिनी बड़ पापिन, बड़ दुहुटा।

गौतम – हाय प्रियतमे!

अह. – प्रियतमे आज हमरा से ई बातचीत ? ई का उपहास बा। चाहे महर्षी, रउआ हमरा के अबहिन से पहचनलीं ना ?

www.bhojpurisahityangan.com

गौतम – पहचनलीं हँ प्राणेश्वरी।

अह. – ना, ना पहचनलीं एही कारन से ओह मीठ सनेह से पूरन गद्‌गद् स्वर से हमरा के पुकार रहल बानीं, एही से परेम के साथे हाँथ फइला रहल बानीं। अगर हमरा के पहचनलीं त घिरिना में मारे हमरा ओरी से आँख फेर लेतीं, हमरा के दुतकार देतीं, चाहें लात मारिके फरका भगा देतीं।

गौतम – अहल्या।

अह. – अहल्या ना पथ्थल, पथले हईं, पथले कहीं। हम परपुरूख गामिनी, पुत्तर के गाला घोंटे वाली, हतेआरिन, पिचासिन हईं। सुनीं, हमार काथा सुनीं। ऊ काथा अइसन बा कि ओकर हर पंक्ति में गहिइ कलंक के खजाना जमा बा। ओकर हर अच्छर में पाप के खजाना भरल बा। पहिले हमार इतिहास सुन लीहीं।

गौतम – हम ओकरा के सुनल नइखीं चाहत, सभ जानत बानीं। हमार प्रिया हमार पतनी, प्रताड़ित प्रलुब्ध पतित बिआ। तोहार ई बूढ़ शरीर ई पीअर पड़ल मुँह, ई गड़हा में गइल नेत्रन के नीचे के घन गँहिइ सियाही तोहार इतिहास कर रहल बा।

अह. – प्रभू! हम कतना बरिस से नरक में ज्वाला ओः नरक के ज्वाला दिन रात सहली हँ। हम तीखा जंत्रना के कारन भितरे–भितर पथ्थल हो गइली हँ। एक दिना अचानक विष्णु के किरिपा से हमरा चेतना आइल। सूखल पत्थर के तोड़ि के झरना बह निकलल। बजरपात से जरल फेंड़ में पाता आ फूल दिखाई पड़े लागल। अब आउर का कहीं। नाथ रउआ जदि सभ जानत बानीं त फिरू हम आउर का कहीं। हमार जीवन के सर्बस! अतना दिन पर हमरा आपन करम बुझाइल ह। छेमा करी। रउआ धरम के प्रतिमा हईं, पुत्र के रूप हईं, दया के सागर हईं, सरग के देवता हईं, आउर हम पापिन हईं, मूरूख हईं, दुहुट हईं, घृनित हईं, नरक के कीरा हईं। देवता! हम विसवास के तुइले बानीं। कर्त्तव्य के गोड़ से ठेलले बानीं प्रेम के पात्र में विख डलले बानीं। आज ऊ भरम हमरा समुझ में आ गइल। छमा करीं, नाथ!

शता. – छमा! जे नारी विसवास के विनास कइके पवित्तर प्रनय के हतेआ करे, ऊ कबो छमा के पात्र होइए ना सके। हाय, पिताजी, जवन दाम्पत्य प्रेम लाज के नेंव ह। सभ कर्त्तव्य के जड़ ह, ओही दाम्पत्य प्रेम के जर पर जे नारी अपना हाँथें कुठार चलावे, ऊ पापिन कबो छेमा के जोग हो ना सके। पितृदेव! महतमा भृगु के बेवस्था के अनुसार कुलटा नारी खातिर ऊ चाहें आपन पतनिए काहे ना होखे, चाहे महतारी होखे, प्रान दंडे जोग्य दंड ह।

गौतम – किरोध के शांत करऽ, प्यारे पुत्र! हम दंड देब ? हाय! हम अपने गला तक पाप में डूबल बानीं। हम अपने दुरबल मति मानुष हईं। हमार का मजाल कि दोसरा के करतब भ्रष्ट मूढ़ मनुष के बिचार करे बइठीं। (अहल्या से) आव अभागिन नारी! बिधाता के सुंदर बिधान इहे बा। प्रियतमे, आवऽ! आज हम ऊ पवलीं, जे पहिले कबो ना पवले रहीं। आज पहिला दिन बा कि हम तोहरा के हृदय के भीतर पवलीं हँ, आव! पीड़ित, परित्यक्त! प्राणेश्वरी आव! बान से घाहिल हमरा हृदय के पिंजड़ा के पंछी, फेरू हमरा हृदय के पिंजड़ा में प्रवेस कर।

(अहिल्या के हिरदय से लगा लेत बाड़न)

विश्वामित्र – तूँ अतना ऊँच बाड़ऽ ? अतना पवित्तर अतना महान बाड़ऽ, अतना छमासील बाड़ऽ? अतना उदार बाड़ऽ? ब्राह्मण! हम तहरा आगे मूड़ी झुकावत बानीं। महर्षी जनक! तूँ बहुते

www.bhojpurisahityangan.com

ठीक आउर साँच बात कहले रहऽ। समुझ गइलीं, हम ब्राह्मणत्व पाके भी जथारथ में ब्राह्मण ना हो सकलीं। जान गइलीं हम ब्राह्मणत्व के बहुते नीचे पड़ल बानीं। विश्वामित्र के धिकार बा बरदान में मिलल ब्राह्मणत्व के धिकार बा। हमरा तपेसवा के धिकार बा।

जनक – ई चरित्र धन्य बा, जेकरा छुअला भर के जादू से बेसवा सती हो जाले, डकइत साधू बन जालन, पाप के पंक में पड़ल पवित्तर हो जाला, कामुक आ लंपट जितेन्द्रिय बन जाला। गरब में चूर अदिमी आपन मूँड़ी झुकालेला। ऊ चरित्र परम पूजनीय बा, जे पारस पथ्थल लेखा लोहा नीअन करिआ कठिन चरित्र के सोना बना देला। आग नीअन दुर्गंध से भरल कूड़ा के भसम कर देला। पवित्तर जल वाली गंगा नीअन कुल्ही मल के धो देला।

अहल्या – नाथ! तोहरा पुन्न के तेज से आज हम आन्हर हो रहल बानीं। तू कहवाँ बाड़ऽ ? कतना दूर बाड़ऽ? हमरा के अपना साथे ले लऽ।

(सभकर प्रस्थान)

पँचवाँ दृश्य

अहथान – अलौकिक प्रमोद मंडप

समय – रात

(रामसीता के जुगल मूर्ती)

(समने अपसरा नाचत गावत बाड़ी)

प्रेम समुद्र बहल जाते बा प्रेम तरंग उठल ओकरा में
कोई डूबे, गोता खाए, कोई बह जाए ओकरा में
प्रेमे सुख देला समझा के, प्रेमे हरख बढ़ावे ला।
अउर केहू के हृदय दाह के कारन भी बन जाएला।
रहे प्रेम में ईर्षा आउर प्रनय अउर परिनय भी बा
बिख बा अगर केहू खातिर त अमरित भी ओही में बा।
प्रेमे के आकरसन से भगवान भुईं पर आवे लन
निराकार से हो सकार प्रेमे के प्रबल बनावे लन
भोलानाथ सदासिव देखीं सदा प्रेम में मगन रहस
पागल अइसन परम उदासी जा मसान में मगन रहस।
कोई प्रेमपंथ में पड़िके होखेला सभसे त्यागी
कोई बर उपभोगे खातिर विषयन के हो अनुरागी
केहू खातिर आसक्ती ह एही में ऊ रस लेला
आउर केहू महाजोग पा चारों फर एहसे लेला।
जनम प्रेम से, मरन प्रेम से, सृष्टि प्रेम से अउर विनास
धरती पर परेम परसल बा, देख स्तब्ध बा नीलाकास

(परदा गिरत बा)

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com



लोकार्पण समारोह में दाएँ से-अरूण, सलिल, चेतन, आसिफ, जयबहादुर तथा नर्मदेश्वर

रोहतास जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा भोजपुरी परिषद् द्वारा प्रचारित तथा प्रकाशित ग्रन्थ

गीताघाट के संत और कुँअर सिंह पर उपन्यास - डॉ. 'मस्त'
रोहतास गढ़ (काव्य) बनारसी लाल 'काशी' संपादक - डॉ.नन्दकिशोर तिवारी
प्रसून सौरभ - श्री मनोहर चौबे (काव्य)
फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों में आंचलिकता - डॉ. प्रमिला चौधरी
डॉ. एनीबेसेन्ट और भारतीय राजनीति - डॉ. अनिल कुमार तिवारी
हिन्दी पत्रकारिता का आदिकाल - डॉ. सुनील कुमार तिवारी
शुक्रनीति में राज्य का स्वरूप - डॉ. सुदर्शन तिवारी
गढ़े हुए घरौंदे - डॉ. सुनील कुमार तिवारी
वागर्थ - (निबन्ध संग्रह) - डॉ. नन्दकिशोर तिवारी
डोली चली, समाधि के फूल और सरहद (नाटक) - ब्रह्मेश्वर नाथ तिवारी

भोजपुरी के गउरव ग्रन्थ

संस्कृत के महान नाटककार 'भास' के तेरहो नाटक के भोजपुरी में अनुगायन - डॉ.नन्दकिशोर तिवारी
बतकही (निबन्ध सँगरह) - डॉ.नन्दकिशोर तिवारी
गंध माटी के (गजल सँगरह) - डॉ. आसिफ रोहतासवी

मुद्रक : अंकित प्रेस के.16/44, बीबीहटिआ, भैरोनाथ, वाराणसी 9935956134